कुंडली चक्र

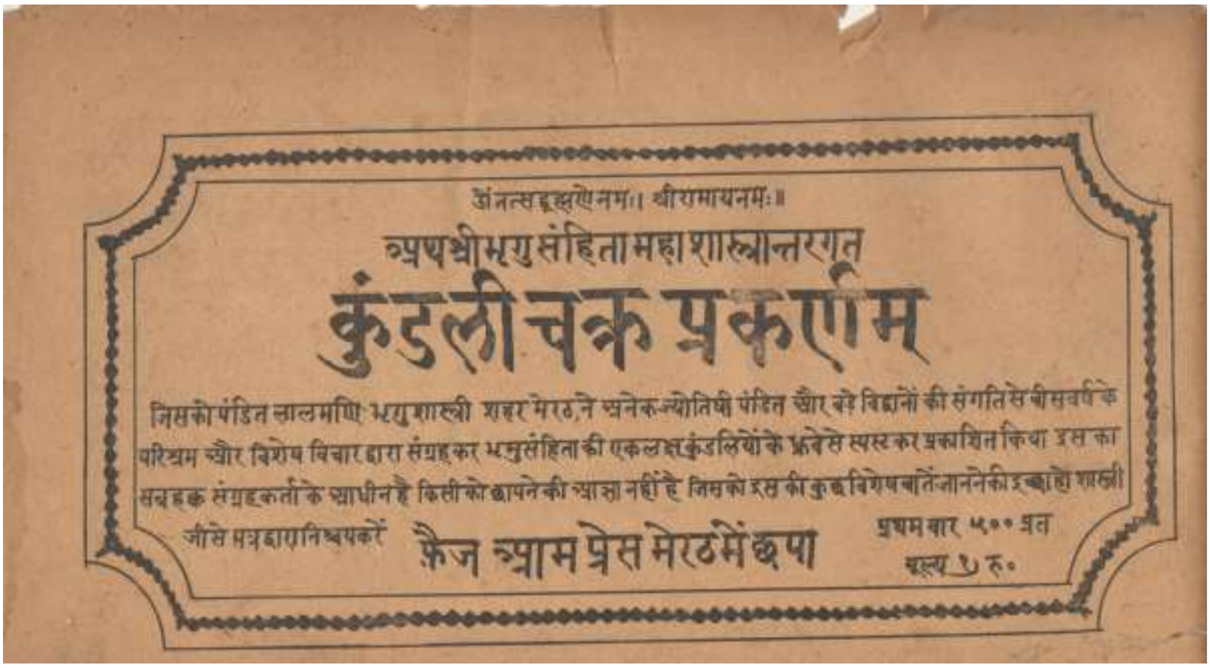

ॐनत्सद्ब्रह्मणेनमः। श्रीरामायनमः॥

अथश्रीभृगुसंहिता महा शास्त्रान्तरगत

कुंडलीचक्र प्रकर्णम

जिसको पंडित लालमणि भृगुशास्त्री शहर मेरठ,ने अनेकज्योतिषी पंडित और बड़े विद्वानों की संगति से बीसवर्ष के परिश्रम और विशेष विचार द्वारा संग्रह कर भृगुसंहिता की एकलक्ष कुंडलियों के फ्रवेसे स्पस्ट कर प्रकाशित किया इस का सब हक संग्रहकर्ता के आधीन है किसी को छापने की आज्ञा नहीं है जिसको इस की कुछ विशेष बातें जानने की इच्छा हो शास्त्री जीसे मत्रद्वारानिश्चयकरें

फ़ैज आम प्रेस मेरठमेंछपा

प्रथमवार ५०० प्रत

मूल्य ।) रु०

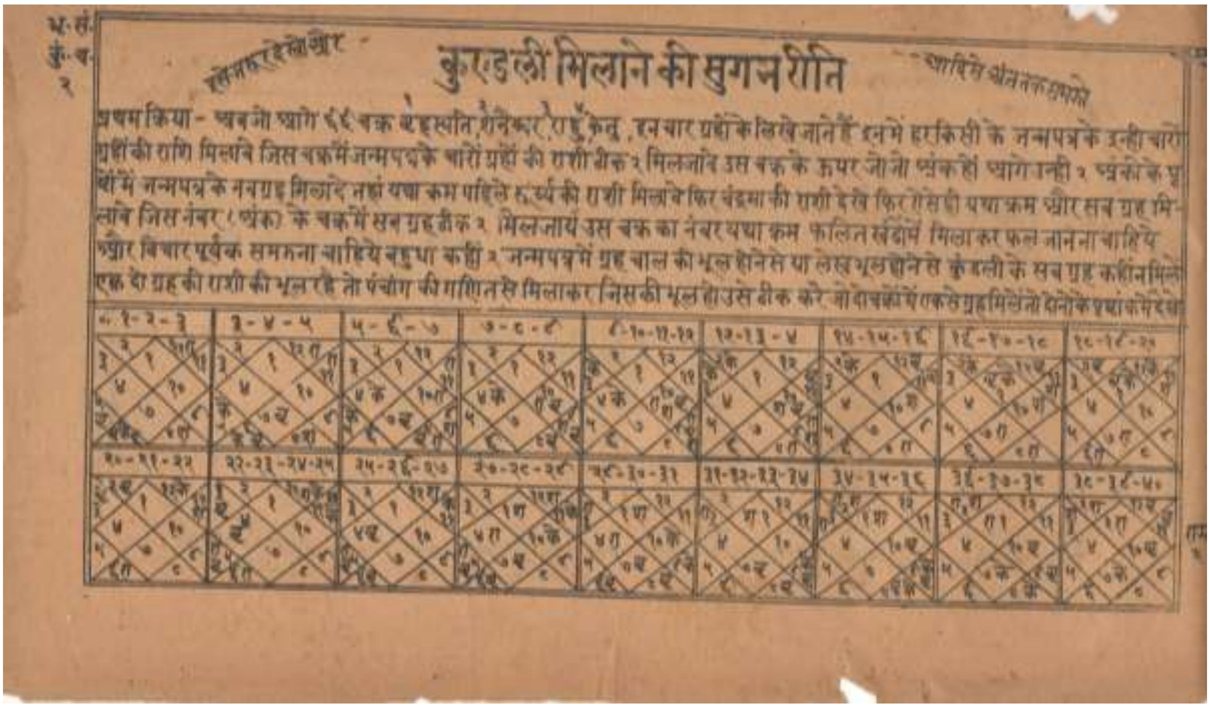

भृ.सं.
कुं.च.
२

कुण्डली मिलाने की सुगम रीति

प्रथम क्रिया - अब जो आगे ६६ चक्र बृहस्पति,शनैश्चर,राहु,केतु, इन चार ग्रहों के लिखे जाते हैं इनमे हरकिसी के जन्मपत्र के इन्ही चारों ग्रहों की राशि मिलावे जिस चक्रमें जन्मपत्र के चारों ग्रहों की राशी ठीक २ मिलजावें उस चक्र के ऊपर जो जो अंक हों आगे उन्ही २ अंकों के पृष्ठों में जन्मपत्र के नवग्रह मिलावे तहां यथा क्रम पहिले सूर्य्य की राशी मिलावे फिर चंद्रमा की राशी देखे फिर ऐसेही यथाक्रम और सब ग्रह मिलावे जिस नंबर (अंक) के चक्र में सब ग्रह ठीक २ मिलजायं उस चक्र का नंबर यथा क्रम फलित खंडोंमें मिलाकर फल जानना चाहिये और विचार पूर्वक समझना चाहिये बहुधा कहीं २ जन्मपत्र में ग्रह चाल की भूल होनेसे या लेख भूल होने से कुंडली के सब ग्रह कठिन मिले एक दो ग्रह की राशी की भूल रहै तो पंचांग की गणित से मिलाकर जिसकी भूल हो उसे ठीक करे जो दो चक्रों में एकसे ग्रह मिलें तो दोनों के फल को मिलाकर देखे

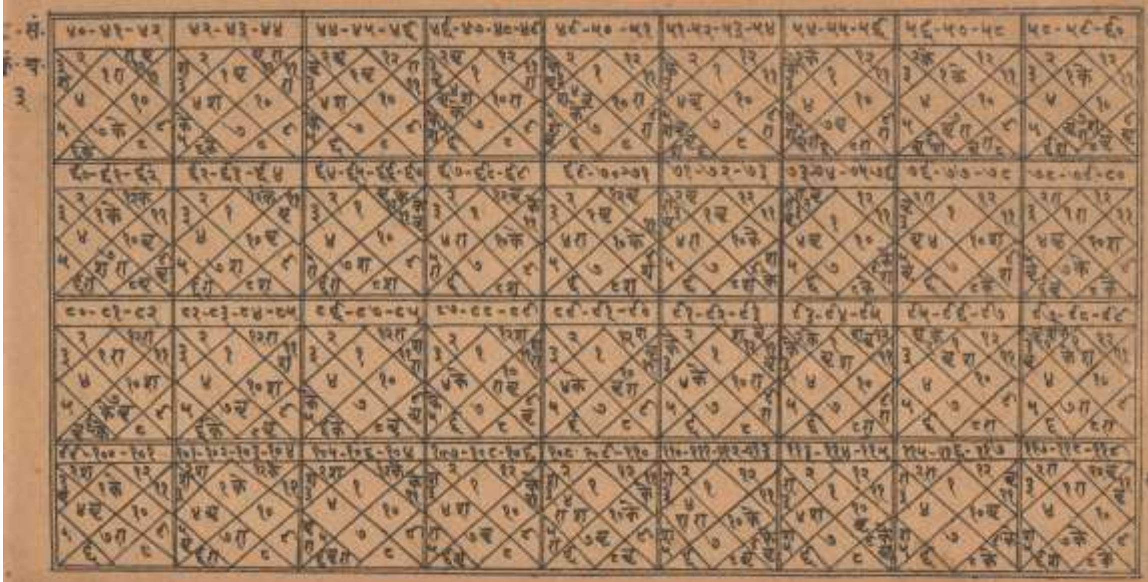

कुंडली मिलाने की दूसरी सुगम रीति — यद्यपि इन चक्रों के क्रम से बहुत ही शीघ्र कुंडली मिल जाती है परन्तु तथापि इससे भी अति सुगम दूसरी रीति संवत् १८८५ वि॰ से लगा कर संवत् १९६० तक की स्पष्ट करके लिखते हैं जो इस रीति से भी अत्यंत सुगम है सो इस प्रकार है कि जौन सम्बत् की जन्मकुंडली मिलानी हो उस सम्बत् के सामने जो जो अंक आगे लिखे पावे उन्हीं अंकों के पृष्ठों में यथा क्रम सूर्य्यादि नवग्रह मिलावे सो सम्बतों का सूची पत्र अब आगे लिखते हैं

सम्बत्	पृष्ठ	सम्बत्	पृष्ठ	संवत्	पृष्ठ	संवत्	पृष्ठ	सम्बत्	पृष्ठ	सम्वत्	पृष्ठ	संवत्	पृष्ठ	संवत्	पृष्ठ	सम्बत्	पृष्ठ	संवत्	पृष्ठ	संवत्	पृष्ठ
१८८५	१ २ ३	१८८७	५ ६ ७	१८८९	९ १० ११ १२	१८९१	१४ १५ १६	१८९३	१८ १९ २०		२२ २३ २४ २५	१८९७	२७ २८ २९	१८९९	३१ ३२ ३३ ३४	१९०१	३६ ३७ ३८	१९०३	४० ४१ ४२	१९०५	४४ ४५ ४६
१८८६	३ ४ ५	१८८८	७ ८ ९	१८९०	१२ १३ १४	१८९२	१६ १७ १८	१८९४	२० २१ २२	१८९६	२५ २६ २७	१८९८	२९ ३० ३१	१९००	३४ ३५ ३६	१९०२	३८ ३९ ४०	१९०४	४२ ४३ ४४	१९०६	४६ ४७ ४८ ४९

भ.सं. कुं.च. ५

संवत	पृष्ठांक	संवत	पृष्ठ	संवत	पृष्ठ	संवत	पृष्ठ	संवत	पृष्ठ	संवत	पृष्ठ	संवत	पृष्ठ	संवत	पृष्ठ	संवत	पृष्ठ	संवत	पृष्ठ	संवत	पृष्ठ
१९१०	४९	१९२१	५८	१९२५	६७	१९२९	७६	१९३३	८५	१९३७	९३	१९४१	१०१	१९४५	११०	१९४९	११९	१९५३	१२८	१९५७	१३६
	५०		५९		६८		७७		८६		९४		१०२		१११		१२०		१२९		१३७
	५१		६०		६९		७८		८७		९५		१०३		११२		१२१		१३०		१३८
१९१८	५१	१९२२	६०	१९२६	६९	१९३०	७८	१९३४	८७	१९३८	९५		१०४		११३	१९५०	१२१	१९५४	१३०	१९५८	१३८
	५२		६१		७०		७९		८८		९६	१९४२	१०४	१९४६	११३		१२२		१३१		१३९
	५३		६२		७१		८०		८९		९७		१०५		११४		१२३		१३२		१४०
	५४	१९२३	६२	१९२७	७१	१९३१	८०	१९३५	८९	१९३९	९७		१०६		११५	१९५१	१२३	१९५५	१३२		१४१
१९१९	५४		६३		७२		८१		९०		९८	१९४३	१०६	१९४७	११५		१२४		१३३	१९५९	१४१
	५५		६४		७३		८२		९१		९९		१०७		११६		१२५		१३४		१४२
	५६	१९२४	६४	१९२८	७३	१९३२	८२	१९३६	९१	१९४०	९९		१०८		११७		१२६		१३४		१४३
१९२०	५६		६५		७४		८३		९२		१००	१९४४	१०८	१९४८	११७	१९५२	१२६	१९५६	१३५	१९६०	१४३
	५७		६६		७५		८४		९३		१०१		१०९		११८		१२७		१३६		१४४
	५८		६७		७६		८५						११०		११९		१२८				

प्रथमके ६६ चक्रोंके ऊपर लिखेहुए पृष्ठोंके अनुकूल और इन संवत्सरोंके पृष्ठोंके अनुकूल आगेके ३०२४ चक्रोंमें सब किसीकी जन्मकुंडलीके आठ ८ ग्रह तो ठीक २ मिलते हीहैं परन्तु नवें ग्रह चन्द्रमा में बहुधा अंतर रहताहै सो उसकी यह रीतिहै कि कुंडली चक्रोंके बीचमें चंद्रके नीचे जो अंक लिखेहैं उनसे चन्द्रमाकी राशी जानें जैसे आगे पृष्ठ १६ चक्र नंबर ७३५ में चंद्रमा ४-१० है तो इनसे ४-५-६-७-८-९-१० इन राशियोंमें से किसी राशी का चंद्रमा हो सो ठीक जानें तथा नंबर ७३६ में चंद्र१२-२ है तो इनसे ११-१२-१-२- इन राशियोंमें से किसी राशी का चंद्रमा जानना चाहिये ऐसेही यथा क्रम और सब चक्रोंमें समझना चाहिये और जन्मपत्रके सब ग्रहोंकी राशी यथा क्रम मिलाकर देखे जिस नम्बरके चक्रमें सब ग्रहोंकी राशी ठीक २ मिलजावे उसी चक्रके नंबरके अनुकूल आगे फलित खंडमें यथा क्रम फल देखकर समझे सुनावे

भ.सं. कुं.च. ६ **उदाहरण** - जन्मपत्रकी नकल ॥ सम्वत् १९१२ भाद्रपदकृष्ण ३ गुरुवासरे घट्य ५ पलानि ३४ उत्तराभाद्रपदभे ७५।११ दिन प्रमाण ३०।५ सूर्योदयम् ३१।६ तत्र मेषे कुंभलग्नोदये श्रीमान् पंडित प्रभुदयाल शास्त्रीजी गृहे पुत्र जन्म जातम् ॥ जन्मकुंडलीयम् ॥

प्रथमरीति - अब हम को यह कुंडली मिलानी है तो इस में देखा कि बृहस्पति कुंभराशी पर शनैश्चर मिथुन राशी पर और राहु मेष राशी पर हैं बस इन्ही तीनों को प्रथमके ६६ चक्रोंमें देखा तो पृष्ठ दो कुंडली नं०१० में तीनों मिलगये फिर उसीमें चौथा केतु भी मिलगया अब उस कुंडलीके ऊपर ३८-३९-४० ये अंक पाये तो बस अब आगे इन्ही पृष्ठोंमें प्रथम सूर्य्य की राशी मिलाई जन्मकुंडलीमें सूर्य्य सिंह ५ राशीपर है तीनों पृष्ठ में देखा तो ५ का सूर्य्य ३९ पृष्ठमें पाया और उसकी तीन कुंडली हैं अब सूर्य्य तीन कुंडलीमें मिलता है तो फिर इन्ही तीनों चक्रोंमें चंद्रमा मिलाया तो जन्ममें चंद्रमा १२ का है और उन तीनों चक्रोंमें चक्र नंबर ८०३ में चंद्रमा का मध्य ७-३ है इनसे ७-८-९-१०-११-१२-१-२-३ इन राशियों का अभिप्राय है बस जान लिया कि १२ का चंद्रमा इसमें मिलगया फिर और भी सब ग्रह यथा क्रम मिलाये तो सब मिलगये इससे जान लिया कि ८०३ नंबरके चक्रकीही कुंडली है बस इसी ८०३ नंबर के चक्रका फल यथाक्रम फलित प्रकरणमें से निकालकर विचार पूर्वक समझना और सुनाना चाहिये

दूसरी रीतिका उदाहरण - इसी ऊपरके जन्मपत्र को दूसरी अत्यंत सुगम रीतिसे मिलाते हैं प्रथम देखा गया कि जन्मपत्र संवत् १९१२ विक्रमी का है तो संवत के सूचीपत्रमें देखा तो संवत् १९१२ के सामने ३८-३९-४० यह तीन अंक लिखे पाए बस अब आगे इन्ही तीनों पृष्ठ में यथा क्रम पूर्वोक्त रीतिसे सूर्य्यादि नवग्रह मिलाये तो उसी पृष्ठ ३९ चक्र नम्बर ८०३ में सब ग्रह ठीक २ मिल गये इसी ८०३ नंबरकी कुंडली का यथा क्रम फल मिला लेना चाहिये - अब जिस किसीकी जन्मपत्री जन्मकुंडली एवं जन्मलग्न मिलाना हो इन्ही ऊपर लिखी हुई दोनों रीतियोंमें से किसी रीतिसे मिलालेवे दोनों रीतियोंसे सब किसीकी जन्म कुंडली अवश्य मिलजाती है परन्तु फिर भी दूसरी रीतिमें जो संवतोंके पृष्ठोंका क्रम है वह बहुत ही सुगम है इस समय संवत १८८५ से लगाकर संवत् १९६० विक्रमी तक का क्रम इस पुस्तकमें साथ करके सब यथा क्रम लिख दिया है सो यह वर्तमान मनुष्योंके काम चलाने को बहुतेरा समझा गया है इससे आगे पीछेके संवतोंका विशेष क्रम जिसे चाहिये हम और अलग तयार करके भेज सक्ते हैं ॥ मिलनेका पता - पंडित लालमणि भृगुशास्त्री - मेरठ सिटी ॥

संवत	पृष्ठांक	संवत	पृष्ठ	संवत	पृष्ठ	संवत	पृष्ठ	संवत	पृष्ठ	संवत	पृष्ठ	संवत	पृष्ठ	संवत	पृष्ठ	संवत	पृष्ठ	संवत	पृष्ठ	संवत	पृष्ठ
१९१७	४९	१९२१	५८	१९२५	६७	१९२९	७६	१९३३	८५	१९३७	९३	१९४१	१०१	१९४५	११०	१९४९	११९	१९५३	१२८	१९५७	१३६
	५०		५९		६८		७७		८६		९४		१०२		१११		१२०		१२९		१३७
	५१		६०		६९		७८		८७		९५		१०३		११२		१२१		१३०		१३८
१९१८	५२	१९२२	६०	१९२६	६९	१९३०	७८	१९३४	८७	१९३८	९५		१०४		११३	१९५०	१२१	१९५४	१३०	१९५८	१३८
	५३		६१		७०		७९		८८		९६	१९४२	१०४	१९४६	११३		१२२		१३१		१३९
	५३		६२		७१		८०		८९		९७		१०५		११४		१२३		१३२		१४०
	५४	१९२३	६२	१९२७	७१	१९३१	८०	१९३५	८९	१९३९	९७		१०६		११५	१९५१	१२३	१९५५	१३२		१४१
१९१९	५४		६३		७२		८१		९०		९८	१९४३	१०६	१९४७	११५		१२४		१३३	१९५९	१४१
	५५		६४		७३		८२		९१		९९		१०७		११६		१२५		१३४		१४२
	५६	१९२४	६४	१९२८	७३	१९३२	८२	१९३६	९१	१९४०	९९		१०८		११७		१२६	१९५६	१३४		१४३
१९२०	५६		६५		७४		८३		९२		१००	१९४४	१०८	१९४८	११७	१९५२	१२६		१३५	१९६०	१४३
	५७		६६		७५		८४		९३		१०१		१०९		११८		१२७		१३६		१४४
	५८		६७		७६		८५						११०		११९		१२८				

प्रथमके ९९ चक्रोंके ऊपर लिखेहुए पृष्ठोंके अनुकूल और इन संवत्सरोंके पृष्ठोंके अनुकूल आगे के ३०२४ चक्रों में सब किसी की जन्मकुंडलीके आठ ८ ग्रह तो ठीक २ मिलतेही हैं परन्तु नवें ग्रह चन्द्रमा में बहुधा अंतर रहता है सो उसकी यह रीति है कि कुंडली चक्रों के बीचमें चंद्रके नीचे जो अंक लिखे हैं उन से चन्द्रमा की राशी जाने जैसे आगे पृष्ठ ३६ चक्र नंबर ७३५ में चंद्रमा ४-१० है तो इनसे ४-५-६-७-८-९-१० इन राशियोंमें से किसी राशी का चंद्रमा हो सो ठीक जाने तथा नंबर ७३६ में चंद्र १२-२ है तो इनसे ११-१२-१-२ इन राशियों में से किसी राशी का चंद्र समझना चाहिये ऐसेही यथा क्रम और सब चक्रों में समझना चाहिये और जन्मपत्र के सब ग्रहों की राशी यथा क्रम मिलाकर देखे जिस नम्बरके चक्रमें सब ग्रहोंकी राशी ठीक २ मिलजावे उसी चक्र के नंबर के अनुकूल आगे फलितखंडमें यथा क्रम फल देखकर समझकर सुनावे

गृहाश्रेसंचभध्योपि पत्नीस्येदंफलंभवेत् बृहत्कार्यक्षानेभूमी व्ययलाभविशेषतः सौख्यशोकान्वितोभूय नरसमो सुस्थिरं मनः भाग्यवंतोगृहास्यत्वा विद्याकीर्तिधनलभेत् धनर्थनकोनेतो के सत्यवक्ता सुशीलनरः छलकिंद्रगातप्यंत सत्यासत्यपरीक्षिक मुशनूच व्ययी दिव्यं सुकीर्तिचितयेत्सदा कससीर्येधनप्राप्य सवावृथाच पीडिता नकाश्चिदाश्रयोभूत्वा दशान्यूनच श्रेष्ठता इशाश्रयास्थितो नित्य इशानुष्टेचक्तोशीता चितचिंताभवदीर्घ पीडयंते चापदुखिवतः माहूर्तेसुविचास्त्र सूर्योपी धैर्यवान्नरः आद्दनगतो काल समवमन्यतजयत् अन्यभागाभयशाप्य पुनरतमरत्तण पुण्यकार्मनभाविता आयुपूर्णभविष्यति मृतवासनभवगा पूजना इनवर्द्धनलाभेनापूर्यन्नित्य बृहल्लाभदिनेदिन आदिवसोहितायत्च वान्हदपानरोतथा गर्भवाधाभपीडयंत ज्वरत्वचनुपनः दंतपीडाविशेषेण भतक्षाश्चनिक्कल कृष्णदसोपिद्रव्या नातभातोतिचिंतनं छायापादश्रवत्देन गडगाधमूलांतथा पुण्यकार्मनभाविता सर्वरोगविनश्यति भ्रातृंदकोवलश्चापि बालवृद्धिसपुत्रकाः मासमासमुखजातं रानमर्वविनाशनं वेदवर्षाचपंचाब्दे षटमसप्तमान्तरे बालकाडाविशेषेण जायतेचादिनेदिने नातलाभनसंदेहा भ्रातभग्नीचसोदरा विद्यासभकुतोबाल मंगलआयते गृहं कष्टव्याधिविशेषेण नश्यंतेपुण्यकर्मणात पितचिंताविनश्यति भजनानंदसर्वदा व्यालवर्षगतंवत्स नेत्रचन्द्रान्नगतदा तातलाभविशेषेण चिंताह्वानन्दवर्द्धनं व्ययशोघ्रसुपस्थितं मंगलंच महोत्सवः विवाहादिशुभकार्यं जायतेचापिभूतले सुविद्यामध्यमाभीति भेदपाठ्यचविस्मन शिशुक्रीडाविशेषेण मिभौति विवर्द्धितः कदाक्लेशमहारोग एकापूनस्थिरामति वन्हिमेकाब्दमारस्य व्यालचन्द्राब्दमध्यमा वृद्धविघ्नभाविष्यति कार्यमानंचलक्षति निजकृत्यसुधर्मता मित्राणांपियवादितः सभामध्यसुवक्तारच सुविद्याधर्मसंचक पत्नीप्रीतिविशेषेण कामक्रीडामनहिता लाभमाप्नभवल्लोके ज्वरबाधाभविष्यति सर्वभोग्यधनादिक्य पुण्यधर्माश्रयोसदा इनत्रिशाब्दिविंशाब्दे भागानंदविवर्द्धनं बाधयमीति विशेषेण लभ्यंतेललनासुखं पियोविशाशविंशाब्दे शत्रुपत्नभयत्वतः भाग्यवृद्धिनसंदेहो चिंतयद्दृढविधैरपि सुसंगान्सीव्यसंभाप्य सुविद्यामदवर्द्धनः एतस्वामपाराएवत्स चितनीय विशेषतः पापकर्मकृतेनाथा अपरश्चेषी– ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥

कुंडलीस्थ ... चे३ विशेषात्तमग्रहा पंचवेस्चतुः मध्य एवश्रेष्ठफलमूदा यदामुख्यगृहाजीव दानमंत्रमुभक्तितः ईश्वराच
भृ·सं· मोनित्यं मध्यम ...दाक्षरी दानमंत्रमुपन्यन विशेषोफलमाप्यते ऐश्वर्यतेजसंयुक्तो मानकीर्तिर्भविष्यत श्रेष्ठकामेन्द्रनो नित्य
कुं·फ· द्रष्टकर्मपरित्याग शुभचिंतकसंयुतः नकस्याशुभचिंतकः आनंदेनगतोकाल व्ययाग विशेषता चित्तचिंतान्वितोभय चिंतयइह
नित्यशंकातिपापविशेषण सर्वपूर्णाभविष्यति इशाश्रेष्ठधनदीर्घ माप्यतेनात्रसंशय: न्यूनलाभदशामध्ये नष्टश्चापिदुश्चितना चिं
४२६ चिन्तालिमन... नीचाशाविशेषत हयसौख्यान्वितोभूय आनन्दभाग्यतत्पर पुत्रार्थसततगृहाले मंत्रजाप्ययथाविधिनेन श्रेयोभवन्तनुक
...मोदिता याचभोगाभवश्चापि अल्पदीर्घभयानक पुनःशांतिप्रयत्नेन सुखदोयोभविष्यति पत्नीचिंताविनोनित्य पित्रपा-
... स्थित उपायं तस्ययत्नेन सद्यश्रेयोभविष्यति कदाकालेधनपुत्र माप्यतेचविशेषता मन ...पूजितचापि भय... विशपन
रोगातोमध्यमेवर्षे द्वयाश्वदतपीडने वन्हिभीतोतृतीयब्दे किवाउत्रपपातितो वृणबाधानसंदेहो अकस्माद्भयदारुणं वेदवर्षान्तरोकाव्य
माप्यते कष्टदारुणोदान दानमंत्रसुपुण्यतः बालवृद्धिदिनेदिने मासवर्षसुखंगत्वा तातमातृश्चमोदिता पंचमासान्तमाब्देन विप्रक्रीडाम
नूतन तातमातमहामोद मंगलंहिदिनेदिने विद्यारंभक्षणेचाद्रौ पठ्यतचोहत्सत शिशुप्रीतिविशेषेण तातमातिश्चनूतन अष्टमेवर्षेसं
प्राप्यतस्याच्च दादशागता तन्मध्येचवदेन्यश मोदवृद्धिमनुत्तम विवाहमंगलकार्यं पुनरंतेमहोत्सवम् विद्याबहिर्वृहन्त्यापिचचलन्च मनोदिता
भिचाराप्रीतिसंपन्ना कामक्रीडाभवनेन भयभीतन्दगर्भे मोदतेचापिकौतुकम् कष्टबाधाविनश्यति सुगन्त्यफलदायक वन्हिचइसभितवृष
अष्टादशानन्यान्तरे आपतोचविनश्यति द्रव्यमाप्तिसंसोद्भव याचकेचमनोहरी अंगनाप्रीतिसंभव रूपयौवनदृष्ट्या लभ्यतेतलनार्जने-
मधमपणवर्षे प्राप्यतेनूतनगृह भाग्यवृद्धिश्चलानन्या लाभकान्यापिचितनः उनविंशचदैत्येश तथाब्देवदविप्राको सत्कृत्यकुशल्य
दत्त कार्यमात्रधनागमः मित्रपक्षपरंप्रीति चेड्जीवपरंमृत्यु गृहक्लेशविवाहंच सुखवृद्धिदिनेदिने गुप्तचिंतान्वितोभय निद्रानिद्रा
चमेदना सिधतुल्यनरेणापि चिंताद्दशतशोस्थिर कामक्रीडाविशेषण पत्नीगर्भान्वितोभवेत कन्यकामयवापुत्र जायतेचमहोत्सवम-

पत्नीकिप्रविशेषेण नूतनजन्ममन्यतो अयत्नचतदाकाव्य विपाकोशोकदायक तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पुण्यकर्मसुभक्तितः सर्वसौख्या
भृ·सं· प्रामोतियं नात्रकार्यविचारणा मृतापुत्रान्वितोभूय पुनश्चशोकनाशनं पंचविंशान्तरोकाव्य तथाचविंशमध्यमा लाभकृत्यभवेल्लोके पुत्र
५१६ द्वारेधनागमः शत्रुभिर्विशेषेण भयभीतोभविष्यति आनंदचापिदैत्येश सर्वोपद्रवनाशनं कष्टनसंततिसौख्य माप्यतेबहुयत्नेन मया
५२० ...जायतेगृहे मोदतेचमहोत्सव ...चिंताविशेषेण स्वजातीमानवर्द्धन त्रयोविंशाब्दमारभ्य चत्वारिंशोपिमध्यमा तावत सौख्यच दैत्येश
...लाभवशतात्रहन्त्वाकार्य नापते सर्वपूर्णाभविष्यति सुकीर्तिस्वपुरमाप्य कलत्रसुप्रशासिता उद्वाहच महोत्साहो जायते बहुवत्सरः
चित्तचिंताविनश्यति भजनानंद सर्वदा नूतनलाभसंपन्नो भूपतेगृहवर्तनं कार्यवृद्धिभवेल्लोके राजद्वारप्रतिष्ठनः चंडीपाठनतोनश
च मत्यसत्यविनश्यति बृहल्लाभप्रभावेण आनंदचापिसर्वदा चतुश्चत्वारिवर्षाणि तथाचसप्तवेदके राजद्वारेजयंप्राप्तिः धनधान्य
प्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयात नृपान्मानमहासुख रागशोकप्रवर्तते किंचित कालविनाशनं दानपुन्यप्रभावेण सर्वसौख्यधरातले-
धानंदमंगलाचार विवाहादिमहोत्सवं सन्तुष्टाणगतवर्षे पूरितमनवांछया आनंदजीवा कार्यैच भक्ताकमानुसारेन लभ्यलाभमतद्र स्व-
वर्षांकमतथाभव पुण्यकर्मणादैत्यश पुत्रपौत्रधनान्वित आल्पसाब्दमायुष्य जायतेनात्रसंशय निजकर्मानुसारेण निधनगोदसंयुत ईश्वर
च्छानुकूलंचैव दैत्याधिमयानघ ॥ ५ ॥ भाषा ॥ इसकुंडली का फल उत्तम है ग्रह बड़े बलवान है पांच ग्रह श्रेष्ठ चार मध्यम है सो जोगम
व मध्यम फल हो उपाव दान मंत्र जाप करावे ईश्वर का ध्यान धरे नित्य पदाक्षरी मंत्र जपे तो अति ऐश्वर्य तेज प्रतिष्ठा पावे बड़ाई पावे श्रेष्ठ
कर्म करे नीच कर्म से बचे सबके भले में रहे किसी का बुरा न चाहे आनंद में बीते परंतु कोई कोई बड़े खर्च के है सो चिंता मानेगा परंतु वो सही भारी खर्च का
काम आवे सब पूरा हो कभी श्रेष्ठ दशा में विशेष लाभ कभी मध्य में दशा में मध्यम लाभ ... लाभ होता रहे किसी समय किसी जीव में चित्त फसे आनंद रंज
दोनों भोगेगा ... सन्तान ... कराव नाश ... भय ... धार्थ... पीड़ा उपाय में
शांति हो धन मिले ... भाग्य ... सर ... रि ... सहगाजुलभा ... इसका
स्थान ... मनुष्य ... ते ... निमित्त ... दानदेतामन

सुतस्थिर्भौमे गृहाचन्द्रे एवंसाकुंडलीफलं आदौभाग्यंचमध्येपि पुनरंतेविशेषत्तः बाल्येचभग्न ८ संस्थं नेवाश्यामीपि संगले तानद्रव्यलाभेका
मृ.सं. कुं.क. दे विवाहादि महोत्सवैः भ्रातभूमी सभायुक्तो मोदन तात्सदा यः वामिभीतोथवन्हि चतुष्पादान पीडितम उच्चस्थेपाति तोभुमौ शर्वरीघात
पीडित वहुविचानशप्यते कार्यभावचभिष्यति वद्धिमतोविशेषेण शज्ञानाचसुलक्षणं युवावस्थासुखभाग्य वृहत कार्याधिपोभुव व्य-
४२१ वसायभूविशेषेण कांतिवंतोप्रतिष्ठित भाग्यवंताधनध्येत सुनामिद्द सुखीनर चंद्रमिवप्रशीति भूवेवातीचक्रुष्ट्रांत ज्ञोशचिताद्दशेजीवात-
भाष्यंतशोकसंयुत कदाचकष्ट रोगार्तो वहुद्रव्य व्ययोभव राजद्वारिधुनागम्य भूमिलाभस्तथैव च तरंगांसिधवाचित जायते बहुन्नतनं
सम्प्राप्ते युभयशोप्य नूतनंतनमसप्यते पुनरत्तेसुखभाग्य आयपूर्णोभविष्यति पापकरप्रवापज येकताभाग्यमदता दानमन्त्रविधानेन मंत्र
च्छमिष्टितनुः पुत्रसौख्यविशेषेण परकार्यरतोनर दयालुः सुविचारस्त्र गीतवाद्यरतसदा मुदरं मृदुवाणीच धनसंयुक्तकौशलः वाणि
ज्यंच धनशाविं वलवानवहनायुतः सत्यवक्ताभतापीच विनितस्वकरोगुणी जोळनत्तुसुमतिस्त्र हेमरत्नविभूषित स्वपुरुषार्थ धनशाति-
मिप्रनात्तृपाति सुख भाग्यवृद्धि सुसंदेह द्विजनामर्चनं सदा वाटिकासंद्रपतेच विपाकधनवर्द्धन कवित्वमतिसंजात नधनपूर्णातिश्राति प-
णसौख्यभवेत्ताक नारीणाप्रीतिवर्द्धनः गोरक्षणभूमिदानेन सर्वसौख्यभवेधुव एवमौगुरएसंजातो भ्रातर स्वल्पमीनिश्चान कांतिपीडयुतो
पत्नी सुतदारातिचितयन्महद्ध वस्त्रवार्गेच भवेडावहुभाषिणा नृपद्वारोधिकारेच यशभूरिमहीतले पितृस्त्र्मरणंजय विपाकेचायिनाश्रिते
पुत्रचकान्यकाद्वाहे सुनागृसुधनव्यय षष्ठसत्पचमेवर्षे नानारोगसमन्वितं शत्रुहानितयामध्य विशकासप्तदारुणं मद्रासुतु [illegible] यात्रा
प्य दानमवसुभाक्तिनं सर्वबाधाविनश्यति विपाकेसुखवर्द्धन षष्ठमेचाष्टमेवर्षे वृणव्याधिनशसय पितुलाभविजायत भ्रातृवाक्यन-
चान्यथा अष्टमेचतथानंद उत्सवजायतगृहे नवीनोवस्त्रागरणं प्राप्यतभद्र मंडले दशमेवान्हिचद्रश्च अकस्माद्वय [illegible] भवेः उद्वाह
च महोत्साहो कुलवधुमशासिना नात्रचतुर्दशेवर्षे तथाच विद्यामध्यमे तानवाधामद्धाकस्ट सुयत्नेकुशलभवे भाग्यवृद्धिन सदहो धन
लाभदिने दिने कामपीडामनोद्वेग चित्तचंचापिव्याकुल नवनारिसमागम्य तेनभोगमनदिता- ॥ . ॥ . ॥ . ॥

पत्नीचिंतयायुक्तो जायतेपिकदाकदा भार्यास्वल्पसुखंप्राप्य अन्यवार्चित्तचंचलं तदांतकोशसंजाता व्रहाश्चिता [illegible] ष्यति विशेकपंचविशोवा
मृ.सं. स्वदेहकष्टजायते तस्यशांतिचदेत्येश जायते पुण्यकर्मणात अभ्यागतद्विजपुज्य तीर्थगंगादिसेवनं प्राप्यतेपरम [illegible] दानमंत्रसभक्तितः
कुं.क. पत्नीकष्टविशेषेण मृत्युतुल्याभविष्यति गर्भरोमातिमानपुत्र जायतेनात्रसंशयः मंगल जायतेगेहे गीतवाद्यमनोदित मध्य [illegible] भव्यसौख्य मनो-
च्छाकार्यसाधून रतविप्रांचविंशाब्दे सुतापुत्रमनोदिता लाभवृद्धि भवेत्लोकेचिंतावृद्धि श्यनुतन सत्यवादीगुरुभक्त नृपालमान्य [illegible] सदा द्विज
४२२ देवसभक्तश्च विचित्रवाक्यमद्रवीत चत्वारिंशावधिवर्षे विनोपभाग्यवर्द्धन विवादादि —— महात्माहो कलत्रभूपसंगम व्यय [illegible]
सुभक्तिसर्वत्रापिनो एवंवहुसुखाप्तापि जायतेमतिवत्सरे मानकीर्तिसमायुक्तो सुजनेभ्योनशासित वृहद्वारपोधिकारीच द्रव्यतेना [illegible]
वृद्धिपदस्थसंजाते व्योमपचावधिततः मनच्छापजित सर्वं विशोपकष्टनवानस पत्नीहेतुविवादंच जायते पुत्रवधूभि संतचकुशलंज्ञ [illegible]
भिन्नवासिद्धिमंदिरे अतः पृथक्सर्वे पुत्रपौत्रमनेकधलाभ कृत्यविशेषेण धनरत्नोनिसंचित सर्वचिंताविनश्यति भजनाज्ञनसर्वदा सन्ध्यादि
वर्षाणि कार्यभारविनिसर्व तदांतसुन्यसंजात सर्वावस्यासुखमहत् शांतचद्रनगेवर्षे आयपूर्णोभविष्यति सर्वकर्मानुकूलेच भाषितयन्मतिममः
॥ भाषा- ॥ इसकुंडलीका फल यह प्रथम मध्यम भाग्यको पश्चात मे विशेष भाग जागे बाल्यावस्थामे बालक्रीडा विद्या सगाई मातापिता का ध
नसुभ काम मे लगे वहन स्त्रोंका का योग हो जल अग्नि चौपाये का भय कहीं से गिरकर चोट लगे विद्या कार्य भावहो चतुर भवाल मंद वात युवा अवस्था मे
वडे काम और मामले देखे लाभ खर्च वहुत कर प्रतिष्ठा पावे भाग्यवान हो एक मित्र सगभ प्रीति विशेष हो उससे सब मनकी बात कहे तथा एक जीव की
चिंता मे क्लेश पावे कई वीमारियां मे धन खर्चे राजद्वार तथा भूमि लाभ हो चित्त मे समुद्र की भी तरंग उठे एक अल्प भारी हो नया जन्म नाने वाचु
पूर्ण हो पाप नष्ट और कुल गृह जिन्हाने भाग्य को मद का स्वाद उनका पूजन दान मंत्र जाप आदि करने से मनो कामना पूर्ण हो पुत्रो का सुख देखे स वका भला
चाहे अच्छे विचार वाली स्वभाव तथा मोह वक्ता पराया काम सिद्ध करे धने पान्दे भक्ति हो व गुरु पूर्व जन्म मे ये तीन स्त्री वंश मे उत्पन्न हुआ भूमा भोग धन धा
न्य गिकार वहुत भला कामना सो एक बेर मे विशेष विवाद रहा उसका हराभरा बाग काटवा दिया सो जो चोकार ब्राह्मण को बहुत सा भारी भर के दानकर
न्याम ना कामना पूर्ण हो ॥ . ॥ . ॥ . ॥ . ॥ . ॥ . ॥ . ॥ . ॥ . ॥ . ॥

भृ.सं.
कुं.प्र.

एवंसर्वेग्रहास्थिता मध्यभागीभवेन्नरः ॥ नातिगौरोन कृष्णांगो गोधूमाकारवद्वपुः॥ तस्कमीसुमदीयात्र दया मूर्तिविनम्रपि:॥ सुभवार्मरतोनि-
त्यमस्थिरागुरुपूजकः॥ सुताप्तसुखास्मर्वे द्रव्य नारीग्रहादिना॥ सिद्धवक्तागुणज्ञस्य सज्जनानंदवर्द्धनः॥ चंचलश्चपलो धीमान् मितवित्तावगुणता॥
गुणीयशोवीनिरस्थी सत्कीर्तिकुलदर्द्धनः॥ कदाकालिमहत्पीडा यमभयभयप्रदा॥ अमृतापीडयतेगुप्त मैथावीर्यपुमाविना॥ नितुनविविधानित्यं पुत्रभ्रातृ-
विरोधिणा॥ पूर्वपापेणपीड्यते हानिचिंताभयंरुजम॥ कलवधविरोधेण चिंतनं चक्रकोपिता॥ ० ॥ प्रथमवर्षे मातृपित्रभय सर्वसौख्यसमागमः॥ मित्र
मानसनतोयशोभिसत्वाकृत॥ मनेच्छाप्राप्तिर्नित्यं निखूनानंद नाराधि:॥ मातृप्राप्तनचिमध्ये द्वाराग्रासृत्वमोदितः॥ धामभूमिधनप्राप्य संपदासूचको
महान्॥ बालदःश्चवत्वीनः भय से भाग्य भाजनः॥ त्वयजातिपरोत्यद्धि भक्ष्यभोज्य पाद्यपत्न॥ अथ द्वितियवर्षे वाह्निपुष्प्रयाकामः॥ बालवृद्धि भवेल्लोक मो
दितंच दिनेदिने॥ ज्वरातिरेचनपीड़ा दशनोत्पत्तिजाकम्॥ किंचितभ्रातादिसंजय मयोमानसुखागमः॥ बालक्रीडाविशेषेण मातमानसुखप्रदः॥ लपयो
च धनदान शरीरारोग्यवर्द्धनं॥ चतुर्थेपंचमेवर्षे ०‸०‸० नानापर्यंतरांतरे॥ ज्वराबाधाज्वरानाम अकस्मात्स्यापतनंभय॥ विद्यारंभकृती बालः संवत्स
अपलोभाति॥ श्रष्टमे द्वादशेवर्षे म तेकामस्मवर्द्धते॥ शिशुगणसंगमेशौनी वनपुष्पवनचरन्॥ विवाहादिमहोत्साहो कुलकांति सुखागमः वर्षादि
साहचर्य विद्यावृद्धिविवर्द्धन॥ लघुत्वेतदापूज्य सवसास्यास्त्विनोभवेत॥ लाभश्चविविधातत्तः भोग्यतंबहुतत्परः॥ नवमेभगतवर्षे वाह्निपुत्तवपक
भालियप्रवसमाधवा पुनःचिन्त्यसदाकदा॥ कामव्याधिभवेद्दोष: शनमुनगशातये॥ भोगश्चसभवानित्यं वर्द्धतेपुण्य कर्मणा॥ वदविशगतेवर्षेव्याल
तथांतरे॥ व्ययनाभभविहार्यः कामाशक्षाविनितन॥ चड नोवपरशैनी मनेच्छावद्धनतं॥ देवदर्शनाच्छमीती तीर्थमहादिसेवनम॥ ग्रह
रभ्य वाह्निवृश्वानगन्तरे॥ लाभवृद्धाभवेन्नित्यं गुणसुखदाप्रदान॥ विवाहादिमहोत्सवो मालकीर्तिवशप्रदा॥ सुमित्र प्रीतिसंपन्ना
स्थानपः॥ पांत्रवेदगतेवर्षे पूर्वबन्धिाभिसमं॥ राजतचमहत्तेजो भननानंदपदवी॥ द्रव्यलाभविशेषेण सतापुण्यगौरव॥ मङ्गल
चामनुस्यवर्दं॥ नफाशनेकालसेन सर्वकष्टविनश्यति॥ व्योमचत्वारिवर्षाणि देवबंधवमध्यमा॥ स्वधर्मनिरतोश्चमान प्रति
ल वृद्धिविशेषेण इष्वरगाधनेमति॥ वाणवेदगतेवर्षे तथा व्याल चतुर्थके॥ ग्रामस्थिते सुयत्नेन ग्रामभूमिधनाभयः॥
स्सुखसर्वदा॥ धनरत्नादिसर्वाणि दासदासिश्च वाहनं॥ वर्द्धतेनात्रसदेहो हानिविशसमन्वनिम॥ नंदचत्वारिवर्षाणि

भृ.सं.
कुं.प्र.
१२४

सर्वविघ्नोनित्यं पुत्रपौत्रादिवेष्टितं॥ कुशलंसर्व्व शियपु माननीयो प्रयत्नतः॥ धनरत्न महतेजो सुखाविष्टोमहत्यशः॥
त्सवं॥ किंचिन्देहदशाशेष निवृतोमृत्यु वर्मणा॥ शरपंचगते वर्षे मत्युप्रशब्दमध्यगे॥ देवदर्शनना भीनो पवित्रो क्रियतेव
पूर्वजन्मपिवरना॥ महतान्तमनुष्या साधुसमागमेगतः॥ व्यापारविपसी चैव धर्मेनिरूमिपालकै:॥ कीर्तिश्च निर्मलीभूता प्रकाश
सिद्धांजनकलस्य मौक्तिक रीसत्ययुद:॥ महदेश्वर्यमाप्नोति भोगान्भुक्त्वायथेप्सितान॥ शशिपक्षाब्दगकाब्द पावन्मानिसमाब्दके॥ नाशकाल
वहपूजिता॥ गप्सप्तमदिनांतस्य सर्वसंपत्समद्विमान॥ विवाहादि महोत्साहो देवपूजोत्सवेध्ययं॥ शतःपरसुखंनित्यं दानपुण्यादिवासकृत व्याल
पृथ्वयुणर्भ मध्यमा॥ उदयैव्वादि ... पुकीर्ति व्याप्तिभूरिशः॥ नानाकार्यप्रयत्नेश्च संपदासंचयो महान्॥ राजोपिमानदत्तस्य किंपुन: जडभा
पवदिक महतदानंचब्राह्मदिकम॥ सर्वकामायसुखदं कर्तव्यो सुखमिच्छता॥ मनेच्छा प्रतिनो नित्यं ईश्वरं क्षापयातदा॥ श्रायुपूर्णसुयत्नेन पुण्य
प्रशासिनः॥ नोचेदन्यूनिभूया निष्फलंजन्म पत्रिका॥ वन्हि व्यालगतेवर्षे प्रयोशुःकाष्यनोसुनिः॥ अपनलं च समृत्यवा देश्यवशमु धार्मिकः॥ दाता
भक्ताप्रमाकाश्च भनिनामपिणाभवः॥ पुण्यं सर्व सुखंनित्यं दानमन्यधरंशिवा॥ भाषा-॥ जिसके जन्मलग्न में यह योग हो वह जन मध्यम भाग्य वाला गोधू-
म्रवर्णनन्न बुद्धि वाला श्रच्छा चतुर और श्रेष्ट कामोंको करनेवाला दोषवच्छ शुभ वा मी मे प्रीति कर प्रसिद्ध गुरुपूजक स्त्री पुत्र कन्या गृह आदि सब सुखोंसे युक्त हो मीठा बो
लने वाला गुणवान् सज्जनोंको आनंद बढ़ाने वाला चंचल चपल यशस्वी श्रीमान स्त्री बो कुलका श्रेष्ट कीर्तिकी बढ़ानेवाले भवको गर्भ बिना मरहे किसी २ समय कष्ट भी अधि-
क होवे वा रूभल्प मृत्यु से भारी भय पावे प्रमेह की गुप्त पीड़ा से वीर्यकी हानी हो शत्रुओंके विरोध मे फिक्र करे और पूर्व पाप से पीडित होनेके कारण हानि चिंता भय रोग
कुल वधुओंसे विरोध करनेवाला इत्यादि अनेक दुःख भोगे सोइसको पूर्वजन्म का पाप संचय में पाता है प्रथम जन्म में यह जन वेश्य वृश में उत्पन्न हो कर नित्य ही पिता म
मे मे मरणता पाण्डेश्वप्रय तनादि भी करता था किसी समय देवपूजा में एक वृक्षभ ... मंत्रों का ध्यान लगाता था इस से आनंद संयोधिन हो कुबेला दी समारा तिसोचाट स
बहुत भय हो गया हा चलित स्वपक्ष मारा अतिपाप से इस जन्म में काशी ... आठ भाग ह इस को शांतिकी कौन पति पत्र पर का नंदन सब पुण्य का
चित्त लिया साथ पंदरा सेल पेट हा अध्याय को विधि से पूजन कराय ... कान्यादान मंत्र पाठ से कार्यकी यथा ... कोट चिन मे ब्राह्मणों को विशेष रूप से धारणा कर ईश्वर के चर
णों मे मन लगावे तो पाप नाश हो और उत्तम फल पावे फिर ... कल्याण मे उत्पन्न हो धर्म पुण्य मे सब ... अन्त मे स्वर्ग को प्राप्त हो जाय -॥ ० ॥ ० ॥

भृ॰ सं॰ कु॰ फ॰ ५२५

धनयोगयदा जन्मः ॥ जायते भूमिमंडले ॥ [illegible] मनोमुदवाश्च नित्यं भोगीद्विनेरता ॥ नाधिकारी भवेदीर्घः मध्य मंत्र सुशीतलः ॥ नित्यं कान्य मुदवाञ्च पुर्णा
सौख्यविनिर्मुक्तः ॥ पूर्वपापप्रभावेण क्लिश्यतेनात्र संशयः ॥ पत्नीपुत्रसुसंबन्ध्य जायते च विनश्यति ॥ पापाश्चितसुयत्नेन सर्वसौख्य समागमः ॥ [illegible] नवैश्च
यत्ननित्यं चित्तचिंतानलयोभवः ॥ भूमिमंडधनं प्राप्य मंत्रयुक्तवद्धपूजिता ॥ मित्राणामस्तनधीनो मजन्नाप्तभनाथम ॥ निनयद्विमित्थकार्ये पुण्यमार्गे भवत्य
शः ॥ कीर्तिश्चनिमेना भूयाद्विवाद्यादिमहोत्सवं ॥ पश्चात्पुत्रसुपीत्रादि तेवह भिन्नैः ॥ देवदर्शनतीर्थेन पुण्यपाप प्रशामितः ॥ सज्जनश्चापक्कन्यान्न व्यापारस्ता
भवेन्मनज ॥ नानाकार्य प्रभूता रत्नुत मुखसंपदा ॥ सुभाष्यादीर्घजीवी च राम वाहनमोदिता ॥ प्रथमे द्वितीये वर्षे वाल्ये वर्षेषु पंचमं ॥ दानं मंत्र सुपुण्येन वा
बन्धुप्रणिवाणं ॥ ज्वरपीडादिनश्यति दंत [illegible] भावशान्तये ॥ सुखान्वे नाम्यते काष्ट गर्वेशान्तिः प्रयत्नतः ॥ मासमस्त सुखप्राप्य भवतभवि मुक्ल चाल वाद
विशेषेण दृष्टिमास्य मनोहर ॥ नाम मासि [illegible] सदा गृहनगन्न मेवच ॥ रमाश्च चाष्टमे वर्षे द्वादशाब्दापि मध्यमा ॥ लेखन पठनं चैव क्रीडने मतितत्परः ॥
मध्यभागी विद्यानोयाद्वृद्ध चिंतानचेतसो ॥ कवित्वीव महत्प्रीतो मनवद्धिश्च चंचलः ॥ कष्टव्याधि शरीरस्य मुखस्थ प्रातिनित्यशः ॥ विवाह मंगल[illegible]
मध्यमा भागी विद्यानोयाद्वृद्धचिंतान चेतसो ॥ ॥
पतंच महोत्सवं ॥ रामनुजोद्वेगवत्स [illegible] मनेनुहृष्ट मधुरो ॥ अयत्नक्कृशितो नून नानाचिंतापि वर्जा ॥ भाग्यश्चित सुपुण्येन विविधं सौख्य भाजनम् ॥
कामकीडामनोद्वेग नारीभोगे सुखमय [illegible] ॥ सर्वसौख्याधिकारांत रूपयौवनशालिना ॥ पुत्रजन्मगृहे सम्यक् पुण्यफलप्रदा ॥ सुशिने नमितत्वं वैराग्य
विशाल मध्यगो ॥ द्रव्यभागी नरावस्त [illegible] सुहृत्स्वा भदिने दिन ॥ चहुवीवपरमीतो मनवद्धिश्च चंचलः ॥ कष्टविवर्भय पीड्य सुयत्ने सर्व मंगल सर्व मुख
नान्ना भाग्य वृद्धिश्चमध्यमा ॥ [illegible] महामंत्र गमयतीवर्धितं धनं ॥ पुनर्नवगतेवर्षे चानश्च मवर्षाब्दके ॥ ईश्वरभक्तिभावेन दानमंत्र समन्वितः ॥
मार्गपतासञ्ज सर्वसाफल्यविभव [illegible] सुताश्च समायन्ति मानसिविविध धरणे ॥ मासं विशागतवर्षे चापगच्छितथान्तरे ॥ द्रव्यभागी विशेषेण [illegible]
रान्ते ॥ मद्यपान्यवहनुलोक [illegible] नहुपाधनम ॥ विवाहादि महोत्सवं च सर्वं बुद्धि महत्यपि ॥ सकलाकाव पुण्य प्राप्य तेमान मनमम ॥ [illegible]
पुत्रश्च व्यापार कर्त्तृभिः ॥ [illegible] चतुर्वर्षे तथाष्ट्यो मचतुर्थके ॥ मानमीयाप्रयत्नेन ईश्वर भक्ति भावतः ॥ कुलकीर्तिविशेषेण महत [illegible]
मानमयामानिके गेहविश [illegible] दशा ॥ कांचिचिंतामनोद्वेग पुनः शान्ति सुखप्रदा ॥ सत्याद्युपीडनादेह पुण्योद्य पुण्यकर्मणा [illegible]
स्वान्तेकमपचिन्ता ॥ इन्दुवेदा [illegible] यातः तथाष्ट्यासरानन्तर ॥ एवं पीतसमं सर्वं वसवाहनं जरपि ॥ पुण्य यत्यागता भूय नीय मन्त्रादि [illegible]

भृ॰ सं॰ कु॰ फ॰ ५२६

सुमंगान्नित्यसंभवाः ॥ [illegible] सिध्राधिकं प्राप्नोति लक्ष्मी सुप्रतिष्ठितं ॥ संपदा संचये नित्यं लाभो भवति गौरवः ॥ धनधा [illegible]
हानं ॥ चाते लग्न संभवे [illegible] मानश्चितनाशवे ॥ तत्र चापसके पर्वे काल मृत्यु लिखेद्वुधः ॥ रक्तांबरजीवाढ्य वेष्टितो [illegible]
तान तदग्रे मन्त्रमाचरन् ॥ [illegible] ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कालाग्निलोचनाय कालपाश विमुक्ति प्रदाय सकल बन्धानि जन्यफलप्रदाय [illegible]
दूरीकुरु २ मृत्यो मेदादि स्वाहा [illegible] क्लीं ह्रीं ऐं ॐ ॥ इति मंत्रजपश्चान्ते सह तु नुपनंदतः ॥ मूर्तिसंकल्प संददा पापविनाश धीमते ॥ कुण्ड धन [illegible]
सेवा सुखाश्रये ॥ ततः शांति [illegible] वृद्धि मानसम्मान सुतम् ॥ रूपसकलमे भूत सर्वत्र गौरवो ॥ सुखादि शोभिनिर्भयश्च मदरे शत्रुमस्तूते ॥ [illegible]
सर्वत्र सुखसंपदा ॥ पुत्रकन्या [illegible] तस्य व्ययकीर्तिश्च निर्मला ॥ भाग्ययोगाद्भवाप्रपत्रो सर्वसंपन्न भूद्धिमान ॥ सुतः पौत्रसुतानित्यं चावस्तु न्यूनता [illegible]
पञ्चगतवर्षे व्योमसमान्तरोतथा ॥ [illegible] जायते मोती कुविसिराज तेकुल ॥ दानपुण्यप्रभावेण मानजन्मस्थदनने ॥ मुनिसंप्राप्त मायुष्यं कि [illegible]
॥ पुत्रपौत्रप्रपौत्रं च वाञ्छापूर्ति सुयत्नतः ॥ यथा कर्मवलीयते तथैव फलमाप्नुयात् ॥ पापाक्लेशमथायाति पुण्याच्छुभ्याश्च गुणमान ॥ कासौ धनेजनस्त [illegible]
तिमानुश्चितेमतः ॥ उपाधिज्ञ कुल्यास्त [illegible] धनी धर्मपरंतपः ॥ भाषा- ॥ जाइस योग मे जन्म भोजन बुद्धिमान् चतुर शयन स्वामी का हित चाहने वाला [illegible]
परन्तु विशेष भाग्यवान् नहीं पूर्ण सुख [illegible] यदि पूर्व पाप के कारण क्लेश अधिक मायश्चित धन श्राति कापूर्ण स्थिर सुख नहीं प्राप्त होता भी चिंता क्लेश पाव विषे
मचा कलह से क्लेशित रहे एवं पाप से दु [illegible] पावे है व्यन्न पूर्व जन्म में यह जनरीति कलमें तत्पर हो उस पर कोप अहबादेस ग्राम का भाविधाति कुछ पुण्य दान भी
करतारहा और सदा मच्छ २ काम करता [illegible] प्रयाय भ्रांति मानने योग्य वा एक समय चित्त को आनंद करने को एकांत में [illegible] एक न्नपि आ
अमुमें जानि कल्यान [illegible] एकांत में मुनि की [illegible] रूप पावन में बादितदवता मन वाणी से मन में उद्वेग पाय उसको लाभ और भय से मादिनवार घल पूर्वक
उससे अन्यत्र मरण कियाति सके उसकाताकि भाग्य [illegible] पाजन्म पैदा से क्लेश पाने आस्त्र मम आप यह भव प्रतात गमात श्रुति को भुकार दाम इस जन्म हि
पश्चात् भी शांति दुःख पाय बहुत [illegible] पाति की सेवक लाप का पाप बल इस जन्म में दुःख का भागी होय भक्ति शांति को मुख्य मानके धन को उपाय भाँति के थी
कीर्ति का सिद्धि मेल यथा विधि पूजन करे [illegible] का मन का धन्य दान का शेषादि धन से यह मूर्ति दान करे और ईश्वर की शरण में मनुष्य पूजा मन पापुवा
नाशहोना चाहिन फल पाव पुत्र पौत्र धनादि [illegible] सदा पुण्य के प्रभाव से उन पर यह पाप और भाग्य में [illegible] फल से भोगती हि जन्म मन मे पावे ॥

भृ·सं· कं·फ· १२७

...॥ नानाकार्यमेव धर्म्य ॥ नित्यं बहु संपदा ॥ भाग्य बान्ध्वक शाली
मत्येद्योगेश्वरो याल सुन्दरस्थलेमाति ॥ भव [illegible] घवति [illegible] ॥ सुतमंत्रोपि पापेरा नारीभक्तो च कामदी ॥ अ
च नानवीर्य प्रतिष्ठिते ॥ वृद्ध वृद्धि विलासी च मलिनो तेजसंयुतः ॥ मि पत्न सुमधीच वाहनोक्ता सुखान्तरः ॥ मृतनेत्रो ... ॥ मध्यमे ...
न्मनो मान्द्यवाध्या कामपाल कृषयतः ॥ उत्पन्न बालकाक्रान्ता ... महोत्सवे ॥ भानदमगलाचार मोदवृद्धिधरातले ॥ ... सर्व
शैनव्यया ॥ मातृचिन्ताविशेषेण सन्मंत्र सुखप्रदा ॥ मासमात्र सुखनित्य ... ॥ तृतीयपंचमश्चवेत् ... ॥ ... प्रपा ...
मनो जायते गृहे ॥ किंचित्कष्टशरीरेपि ... ॥ वान्धि [illegible] उच्चस्थपतितोच्चवा ॥ मगलाजा मध्योपापि ... ॥ ... पतिनोपितवधूरिव
द्रावन कृत्युसर्वसुखागमः ॥ द्रव्यलाभ ... नित्यं ... ॥ ... चेत्सलनोपिरभाति ॥ ... ॥ ... मृत्यु भुक्ति-
॥ अन्नमेद्वादशवर्षे जायका ... ॥ महात्मानो मंगले गान मंदिरे ॥ बहुद्रव्य व्ययानातः ... ॥ ... सुभगा ॥ ... रमते बाल-
चिंतनलापन ॥ यावनात्मादकामापि ... ॥ चंद्रानेव परमंशौचि ... ॥ ... ॥ यद्यादेह प्रवृद्धेन ... ॥ नारीभागेन
सुखवृद्धिस्त्वथबातः ॥ नसुखलभते पदं ... ॥ वह्निसोमगतेवर्षे ... ॥ ... सुकार्येमति भोदिता ॥ ... ॥ ... वर्जन्म काम्यं वा
लाभेच व्ययलाभोपि चिन्तनं ॥ ... मृते कार्ये ततः शांतिस्तु मासतः ॥ चितितेद्विविधानित्यं ... ॥ ... भाग्यवृद्धिश्च चिंतनं ॥ प्रति ...
त्रोविलाभद ॥ नारीभागेसुधर्म ... ॥ नरसा मगतेवर्षे ... ॥ अनंदजायते पश्चात् भाग्यवृद्धिश्च भवतः ॥ ... मुलाधर भूतसिवा
लोका गेहचितंन नाहांशि ॥ ... नसुखलभते ध्रुवं ॥ किंचिद्धान्यादिमवृत्तं भाग्यवृद्धिभवन्तः ॥ ... रत धर्ममतिस्थुयः ॥ ...
भाग्यवृद्धिभवेन्नित्यं ... ॥ लाभच विविधं कार्ये नृपद्वारे धनागमः ॥ ... ॥ ... द्रव्यलाभ ...
दीपेहाभयप्रदा ॥ ... मोदते पुण्यकर्मणा ॥ ... ॥ ... सर्वसंपत्ति ... ॥ इन्दुरामगतवर्षे ...
सम्मननामानन्यानी ... ॥ देवदर्शन तीर्थच पवित्रीकिय तपनं ॥ धर्मेरव ... सर्वसंपत्ति ... ॥ ... धर्मतत्परः ॥ ...
मध्यगे ॥ भाग्यवृद्धि विशेषेण ... ॥ मंगलसुविवाहश्च ... ॥ ... ॥ ... महत्व माधिक ...
... यत्नतः ॥ भौमजा ... नित्यं धनवृद्धि दिने दिने ॥ रसवेश्वानरेवर्षे व्योमवेदाब्द ... ॥ ... ॥

भृ·सं· कं·फ· १२८

विवाहादि महोत्साहो मानवा ... निर्मला ॥ सर्वैश्वर्यसमायुक्तो मोदते पुण्यकर्मणा ॥ चेकचत्वारि ... चतुर्थके ॥ ता...
सत्त्वोनरः ॥ संपदासं च यांति ... मानुसत्तमम ॥ कदाचिच्चिंतयो ... लभोपिय ॥ ... ततः शांतिः ...
गलेनित्यं कुलकीर्तिविवर्द्धनः ॥ ... ॥ पितृधनाधिक ... ॥ ... व्योमप ...
गतिरकाहं संख्या ... ॥ हिरण्यमणि ताम्र ... सुखभद्रा ॥ भाग्यवृद्धि भवनेन नानाकार्य प्रवृत्त्यकैः ॥ ...
ध्वानमना ॥ इन्दुपं चाब्द मास्य ... मध्यमा ॥ वाहनादि सुखसर्व ... ॥ सपवासत ... ॥ ...
नभयपुरुषवत्सरे ॥ पित्रजन्म महान्ते ... मंगलमेवच ॥ ईशभक्ति विशेषेण भजनानंद सर्वदा ॥ ... ॥ ...
मुलसर्वे पुत्रपौत्र धनादिजा ॥ ... ॥ तस्मिन्नब्धतनुं ईशभक्तिसुपयनः ॥ सुनियम सुमारभ्य ... ॥ ई...
धनमौमी भूयसे पुण्यभाजनः ॥ ... मृत्युक्त ... ॥ ... ॥ पुण्यकाम ... नित्यं ... पुरसी
सुखं ॥ ... पुण्यफलं नूनं ... नाकलोकं गमिष्यति ॥ एतत्ते कथितं ... सुखदा महान् ॥ भाषा - ॥ इस योग में ...
... सुन्दर भाग्यवान ... पिता ... चतुर ... भोगने ...
में प्रमकार ... और सब प्रकार आनंद ... पापके कारण मलिन रहे ... और मन में अधिक चिन्ता रहे ... परभी पू
... मृत्यु ... अनेक ... जन्म में ... उत्पन्न ... आत्मा ...
में ... मनसे पीड़ित ... सुख ... रहना एक दिन
... अथ ... मंत्र ... चोर ... ॥ ... दारुण
पाप का भोग ... जन्म में ... पतन पर ... पुनः ... विधान से पूजन और
... भजन ... मन लगावे ... अनेक पाप से छूटे मनोच्छित
फल पावे और ... फिर ... ऐसे यह शांति सुखदायी योग फल है - ॥ ० ॥ ० ॥

सं. कुं. फ. १६

अस्वयोगफलंश्चात्र भाष्यते मुनिसत्तम वापू [illegible] न्वि नोत्तेमं निवृत्ते समाकुलः सदानंदविनीतश्च दाराद्युन्नतमा [illegible] तः भूमी [illegible] लो का
ति समस्त वान्विचत्तरगः वादी धृत मतिलोल [illegible] कृपणा चक्रे गर्भभवेत् गाढ सी मत्य वादी च रिपुणं कष्ट दायक [illegible] लाभी [illegible] फ
मति पक्ष सतति राज द्वारति मान्यञ्च मातुल तस्य तुलितम्यते सदा सर्व सम्पत्समायुक्तः भूमनाभाति [illegible] नत्यश्रियाति चामानी से
त्य कालेच संगम धनवंधु विहीनश्च लोके [illegible] स्वमन्तायते कीर्तिक [illegible] धनागम्य [illegible] निश्चितपूर्ति सत्कर्मो पि भूपनरारा स्वव व्ययपरि पालकः
भूरिदाररतो प्रश्न: कामाधिक [illegible] न [illegible] रो धानी लोके निंदामवाप्नुयात सोभाग्य स्वामि संयुक्ता भवता तत्र [illegible] तः तुल्य [illegible]
यो स्वभूतवाक्य न सज्जाय शरीर रक्षणा [illegible] भौमस्य पूजनं कृतः [illegible] पकारी [illegible] नित्यपूजन पीड्या
वन्दिवारिभयं प्राप्य [illegible] पतिता [illegible] नाना भोग समाकुल [illegible] भूवार [illegible] धनागमः पि
तमीतिविहीनश्च [illegible] निज धर्म परायणः [illegible] राज्य [illegible] तेन [illegible] लभेत्साप-
त्निभादतमेव [illegible] दोष [illegible] संभाद्य [illegible] शुवानां समुपास्थित विवाह पंचा वंशाच त्रिंशवा [illegible]
तथा [illegible] पंचवर्षे द्विवाप [illegible] भाष्यते धन सम्पद् [illegible] भवेत्वास्य [illegible]
[illegible] व्याधि समुत्तः दक्षिणा [illegible] पीडनम् नाभ [illegible] धनत्रापि पूजयेत विधानत सर्वारिष्टनभाविनी धनरक्षा [illegible] मा
तृ रोग समायुक्तो शोचवृद्धि [illegible] दिनं त्रियोदे चन्द्र वर्ष [illegible] भविष्यति [illegible]
[illegible] कालवशाधनव्ययः [illegible] भोग्य यादीच बृहमगल [illegible] कन्या [illegible] वाहच तथा च धर्म मोक्षने धनपुत्र समायुक्त [illegible]
सर्वकर्म प्रकर्त्ता च शीलवान् [illegible] सभः सुराद्यादिकृतशीच [illegible] सुमूर्ति [illegible] दीर्घ [illegible]
शूरश्च कामाधिक [illegible] भूमि संयुक्तो [illegible] दीर्घकाय [illegible] वित्तं नूतन कार्य [illegible]
[illegible] निरन [illegible] जायते समाश्च [illegible] पीडा च दारु [illegible]

कार्यवानूच्चकारयेत [illegible] नाश संदेहो बालक्रीडा [illegible] तत्परः षष्ठे च सप्तमे वर्षे [illegible] विवाह भव [illegible]
ति, अष्टमे नवमे वर्षे पितृ [illegible] भवत [illegible] मृत्युतुल्य [illegible] मंत्र [illegible] भय [illegible]
[illegible] राज विश्वास [illegible] द्वादशे वर्षे [illegible] संज्ञाय [illegible] चन्द्राब्द संप्राप्य शरीरे व्याधि पीडनम् [illegible]
[illegible] भविष्यति पीड [illegible] त्रयोदशे [illegible] महान्कार्य च [illegible] सर्व विघ्न [illegible] कार्य मात्र [illegible]
[illegible] सप्तदशे वर्षे [illegible] निज [illegible] कान्तायुक्त प्रफुल्लितः [illegible]
[illegible] पंच विंशमिते वर्षे [illegible] संनिश्चितम् धन वृद्धि [illegible]
[illegible] वर्षे [illegible] भाषितः [illegible] वर्षे पुनर्मेनं [illegible]
[illegible] विदेशगमन प्रीतिः [illegible] नेदचत्वारि वर्षाणि शरीरे बात पीडित पापशांति कृते पुन [illegible] लभेत्ततः भाग
[illegible] भविष्यति [illegible] सर्वतापविसंधरा ॥ भाषा— ॥ इस कुंडली का यह फल है कि [illegible]
और लाभकारी [illegible] वृद्धि करने वाले [illegible] परंतु यह बलवान [illegible] अधिक [illegible] करने से शुभ फल दायक होते हैं विशेष कर जीवों को अन्न पा-
[illegible] पतियों को [illegible] मूल स्थान के [illegible] दान [illegible] करावे तो विशेष सुख भोगे जिसमें मन [illegible]
[illegible] अपनी इच्छानुकूल [illegible] और ये नीच [illegible] के काम कर सब [illegible] धन बहुत प्राप्त करें परन्तु [illegible]
[illegible] फिक्र बहुत रखा करे परंतु [illegible] कोई भारी काम [illegible] नहीं [illegible] उत्पत्ति से कभी २ [illegible]
[illegible] पीड़ा [illegible] परन्तु यह [illegible] भाई [illegible] मध्यम [illegible] विशेष [illegible] काम को [illegible] राम
[illegible] सेवन [illegible] भाग भोगे [illegible] उत्पन्न [illegible] राजा [illegible]
[illegible] परन्तु [illegible] भात [illegible] अन्याय किया [illegible] उस जन्म में [illegible]
[illegible] जन्म में पाप [illegible] भोजन आदि से [illegible] दान [illegible] विशेष दान [illegible] सुख को प्राप्त हो ॥

रतनेयोगामुभावेसा नायतेन्यासमकुले ॥ ज[illegible] मात्तवाधेषां चहुकाष्टभयप्रदा ॥ उत्पन्नवालकं भूत्वा मोदते भुवि मंडले ॥ मन्दरे वेश्यावाली प्रथ
मचवां नृपतिर्भवम् ॥ मध्यभागी च वात्तोय वीर्य[illegible] ॥ नृतमात मयामाद भानदश्ृह मंकुले ॥ सर्वसौख्य ममायुक्तो जीव त्रिंशानुचेत
मी ॥ चन्द्रशासन पोष्य नृपद्वार कुलाश्रये ॥ [illegible] चिन्ताविशाघरी [illegible] ॥ इच्छलाभ निशायस्य नूतनं वार्तयान्वितः ॥ प्रथमाप [illegible]
स्यमनलभते ॥ सुतमीमस्या विनतेया नाभ[illegible] प्रभवदः ॥ चितयद्विति धानल[illegible] मति ॥ [illegible] चापमाति: प्रसन्नतः ॥ [illegible]
नृपाद्वेत सवे सौख्य मन्वापक: ॥ कांपन्य[illegible] सर्वसिद्धि पलायन ॥ [illegible] भवितेश्वर ॥ नाभं च विविधं नित्यं [illegible] मे पुत्रा ॥ म
[illegible] ॥ आदिनमर्कचरन्कारे भर्त्[illegible] भयप्रदा ॥ [illegible] नात्माभो तुस्तत्र विरचन ॥ [illegible]
[illegible] मनयं पिशा भूमि दिनादन ॥ [illegible] पीडित काहिना मह्त ॥ [illegible] मीतिर्भवि हृन्त: मुक्तापारा यथा नदः ॥ [illegible] न
[illegible] ॥ कीचिशेम विन[illegible] नि अल्प मुत्यु भयावह ॥ का या पात्र मदा वाने [illegible] ॥ [illegible] संयुत: ॥ [illegible]
मुरसवा नित्यं [illegible] ॥ [illegible] वाद्यादि मंत्रात्मासौ भातिनाम सबहेत ॥ ~ ॥ कानिन्लौ [illegible] ॥ [illegible] नित्यं भावयवृद्धि
[illegible] भावन: ॥ [illegible] उनविंशतविंशके ॥ पत्नी भोग विन्यासौ च [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ~ ॥ मुसगान्त्य [illegible] नेनम संमुलागमु: ॥ ~ ॥ कमगाज्जायते पाप [illegible] ॥ [illegible] सुता पुत्र [illegible]
[illegible] मालि ॥ ~ ॥ इति [illegible] परतन्तं ज्ञातन्येः समा [illegible] ॥ ~ ॥ [illegible] ॥ उत्रजन्म महात्म्या[illegible]
[illegible] ॥ ~ ॥ [illegible] ॥ ~ ॥ [illegible] ॥ बहु [illegible] मात्र [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

पनुखोगोत्सुवो बालः भाग्यवान्भोगतत्परः॥ [illegible] यो योगसंपन्नो पुत्रभवति स्कैशिला॥ वेशादा पूर्वपायेण पुष्यवान्सर्वसुखागमः॥ नानाकार्यं भव-
षेण राजतो सुखसंपदा॥ भयस्थितमहादान [illegible] ॥ ज्ञात्वामस्यसुखकारी नावकिंचिद्विचारको॥ यथासह भक्तेन जनसंपत्सुखहिमान
॥ भाग्योदयं सुखसर्वं संचारितां विनश्यति [illegible] प्रमेहा पाडुरे क्रिया [illegible] विनरं॥ रिउनिघ्नमुपाधिश्च पुण्यवान्भवति नश्यति॥ मल्लचार्ये सुशीलश्च
सुमन्योक्ता धनीभव॥ पश्चाभ्युदय स्व [illegible] जनभ्यामपुशोभितम॥ वेदाल्पदारु [illegible] महादानेन शान्तये॥ ईश्वरचिंतयत्नश्च नर्मदा सुख्वि गमति॥ पददो
धमपालस्यन्य प्रगतविधिधत्स्वं॥ मरान [illegible] मनाकूरा वाङिश्च शुभपावकः॥ सुहृदो च [illegible] पि चातुर्यकार्ये साधकः॥ कांश्चिदनीनूनलस्य शीघ्रकारी सदा परः
॥ [illegible] नित्यं नक्ष्रिन्दिरकावह [illegible] चिदरचिनि चिंतयेहूरपापूर्वनदा॥ पु [illegible] पदाप्रत्यये जितशतिः सुख भदा॥ राज्यभयाधिकारंच मनश्चान इ
प्रतिते॥ न्त्वयन्त्वकोशिनां नूनं नाना विल [illegible] नीयमी॥ नम्मान्सर्वश्रयत्नेन गसिन रामचडुनम॥ [illegible] प्रथमभवपंक्ता पापभत बल्लभ नरः॥ दिवमास सुखानित्यं मन्यवान्भूति
वेमच॥ हितीमाद्वतपिचनयामेभ [illegible] याक्रमः॥ बालवृद्धि पहमोदे शिशुक्रीडा मनोहरा॥ दशना [illegible] केलीनृपः॥ [illegible]
नाममानिग्रहे॥ [illegible] दानेन [illegible] बुद्धिरहर्निशि॥ नानालाभनमंदेहा गृहमंगलमेवच॥ चचलस्य पल [illegible] पाठनाननंतरः॥ वेदाव्दे पुनमप [illegible]
वषवाधिनतः॥ भाग्यमेवभवान्नि [illegible] बहूनसुखेनतनम॥ विद्या पदति चोद्भग शिशुनां संयमरति॥ भवन्ति वा [illegible] पि भका [illegible] मचावद॥ किंचिदा चावमेव
ग सुखाभानुत नवदा॥ पुननाक्ष [illegible] कृप आरोपिकोत्सवदयः॥ सुखपवनश्च यतमनो: मामदये शुभागमः॥ नृपान्दि वान्दि चन्द्रेच शास्त्रौभाव्कैतथा॥ लेखन पठन
कार्ये कुशल्चापि प्रतिदिन॥ प [illegible] गतिशोलान्च पुण्यपात्र प्रशांदिनः॥ गहके शनिचारोपि निमन्त्रश्चित नारयंच॥ अशारकाहरतपुन्वान्वितात मदर [illegible] था॥ उपहारिष्ट
हुमेन्त भाग्यवृद्धि धनागमः [illegible] नुकटगतेनपि चोमपन्ना भयक्षया॥ द्रव्यलाभमनुस्यस्य भाग्यवृद्धि महत्तरा॥ [illegible] कार्यसिरतार्थमान्दुचिता पुत्रमोदितं॥ [illegible]
क्लिमहतनमा राजतो पुण्यसंप [illegible] ॥ [illegible] पर पूज्य: [illegible] विशेषण [illegible] मामलि॥ पुनर्भू [illegible] सविशा [illegible] दासुदा॥
[illegible] विधिनन॥ पर्वाशांनिनि [illegible] चंचलः॥ वहुभ्य [illegible] लुभ्यते [illegible] वानरमेव [illegible]
नर्वमारतेः॥ [illegible] नाना कार्यादि चिंतन॥ मंगलविविधान्या यशलाघनतत्परः॥ गमना [illegible] पयान्तांतानिस्सु [illegible] ॥ पन्नहश
पक्षमवविजय [illegible] तिरिपुभयोयो दाशैनाविविधगुणं॥ दामवाल्लनेनित्यं मोदीते भक्तिभावना॥ ॥ ० ॥ नाना कार्य [illegible] ८

खगवन्नयदाचंद्रे शांतव्योफलमाप्नुया॥ [illegible] भाग्यवृद्धि महत्तरा॥ चहुकार्यरतो पुंसः स्वकार्यो रवि महत॥ पर्वपापप्रभावेण प्र-
बन्धुनफलमत्र॥ भक्तिनि नियम्याय शांत [illegible] पुत्र मनारोगे भाग्यते विविधं सुखं॥ कालवृ [illegible] विरोधेण गृहे क्लेशो बदा कुला:॥ मी
नृभूतिप्रभाचारी सर्वदा सुख वर्धनः॥ [illegible] भयप्रदा॥ धनव्ययविशेषेण रिपुदानि सदा भवेः॥ सत्य श्रमे धनं दीर्घः भाग्यते
धानमुमुखं॥ निजविद्यामदक्ष [illegible] महत॥ सज्जनानां सुसन्मान [illegible] जनैः॥ सुकीर्ति [illegible] मनी॥ सुभसमति
दानार्थं दृढकार्यपरित्यजः॥ सुमित्रपरमप्रीती चिंताशक्तोविचिन्तने॥ अथ [illegible] मुख्यवार्ता न कथ्यते॥ [illegible] मना [illegible] चिंततनो॥
[illegible] व्यवहारे महोत्सवे॥ [illegible] तस्यापि पुण्यश्री प्रस्कारी भवः॥ एप विंशति [illegible] पुण्य
विंशतिके नवा॥ [illegible] एतद्वर्षे महत्सुते॥ ध्यानमंत्रं सुयत्नेन नित्य [illegible] द्वितीयेच [illegible] ॥ दिवमासे सुखानित्यं [illegible]
गतमेवच॥ ज्वरा [illegible] पीडया: [illegible]
बालवृद्धि दिनादिन॥ शिशुक्रीडा सुखानित्यं [illegible] मनोहरं॥ [illegible] नमति॥ [illegible]
पनिगोधवा॥ [illegible] महादानेन शांतये॥ गृह [illegible] पुण्यभाजनः॥ विद्या [illegible]
[illegible] लाभमति॥ [illegible] यथाक्रमं॥ विवाहादि महोत्सव मालतुल्य [illegible] ॥ निष्फल [illegible] कार्येषु [illegible] मान्तरः॥ मित्र [illegible]
[illegible] मतिकामवर्द्धते॥ नारीभाग्य [illegible] मनश्चा [illegible] चिंतन॥ [illegible] सर्वभी [illegible]
[illegible] नरः॥ रूपवान [illegible] ॥ ईश्वरकृपया [illegible] ॥ मनश्चा [illegible] नित्यं सु
[illegible] सर्वे भवाः॥ भाग्यवृद्धिर्भवेन्नित्यं [illegible] निश्चयं॥ [illegible] ॥ देवागारे सुख [illegible]
नवा मंगलदायिनी॥ [illegible] लाभवृद्धि [illegible] ॥ नानविंशति वर्षीय [illegible] ॥ विवाहादि [illegible]
द्रव्य मंगलं विविधं [illegible] ॥ मनश्चा [illegible] यथालाभन [illegible] ॥ धनदृश्य [illegible] धनवान [illegible] ॥ सप-
तासचयोतेन लाभवृद्धि यथाप्रदा॥ लाभंच विविधाकार्ये जायते नित्यनूतनम॥ ८ ॥ ८ ॥ मंगल [illegible] नित्यं पुण्यमार्गे सुखप्रदा॥ ८ ॥

भृ·सं· कुं·फ· ४९०

षष्ठेन्त्योशितं नूनं निमग्नश्चिंतनार्णवे ॥ वेदवन्हिमिते वर्षे व्योमचन्द्रार्कसम्भवे ॥ देवपुण्येऽस्य वेदनित्यं सुकीर्तिख्यातिभूरिशः ॥ त्वक
राज्ञीरतस्तत्र भवात्तीर्थ [illegible] णीभवः ॥ यत्र इक्षितृतं तत्र विजयोल्लासु सर्वदा ॥ धनपुत्रादयः सर्वे नूतनं गेहशोभनं ॥ नृपद्वारे तु मान्यं च सुखदं वैद्या
न्वितः ॥ धर्ममार्गोन्मयो नित्यं नारासेतुप्रमोदिर ॥ इड्चन्द्राग्निवर्षे नदान्ते व्योमभल्लके ॥ धर्ममार्गगता भद्रा सर्व वासुरत्नवर्द्धन ॥ राजद्वारे पदं प्राप्य
त्रिनेत्रपतेश्च शत्रवः ॥ शाकव्यापोऽपिकाष्ठ पनः शान्तिः सुखप्रदा ॥ स्वजातीर्णमहत्वं च कान्तकीर्तिस्तनुः प्रमानं ॥ पूर्वपापविनश्यति वाञ्छा पुण्ये राप्य
शिशी ॥ भाद्रे रात्नकानत्या पृथ्वीकरनमाम ॥ तस्मास्तस्यव्यत्न रचितं सर्वमिच्छिता ॥ मन्वारिमहरपुण्यं नपनं नापलंपनि ॥ तीर्थयात्रा च पुण्यं
मोक्षमार्गे ॥ शरण्ये तपसे च भल्पमृत्युभयंकरं ॥ महादानादिभिरु ग्रा भाग्यवृद्धिरजस्त्वय ॥ नापतेविदितं धौरीस्वं स्वप्नं धनादिश्च ॥ सुन्दरपराद्यवत्स्
गृहभार तनसरस ॥ इष्टराधनप्रीतीतिसन्धर्मपुत्रिस्थयेन ॥ ततो सर्व सुमन्लक सर्वनपत्नमुमाभूतः ॥ पापसंसर्पसंवर्ग पयोत्थभवसोभनिः ॥ मिलसंतनिवारितो पुण्य धनमहन्तु
ते ॥ देव व्यसनपीडं दुःखवासः उपयेनो हनिः ॥ नांचकस्य भूतिभद्या चिंतने विविधैरपि ॥ परंतोप्य मतं चन्त्य ज्ञातव्यं प्रत्य कारणः ॥ पुनर्बीरजन्मानुजः नेभय सर्वभगः
॥ इतिलग्ने सुलग्न पदीपपरमपदं ॥ भाषा ॥ नवमे भाग्यस्थाने मध्यमफल जानना व नाश स्थामि [illegible] कीर्ति शक्ति बहुतसे का मीम
लग्न का गरपनीकृतेन्यास प्रतिष्ठ नतो पुत्र नयम पण्डितगरा [illegible] निजबीमारि [illegible] काल व गोकाति
भोधर्म भीर परमें शाश्राशाति सभुद्यकारब्रह्म आचरणे नमनें सर्व सुख भागनेसे [illegible] अन्य परक्लेश चिन्ता व [illegible] भय प्राप्त की जी ३ समय व धन अधिक जा
नगरहुसेवा नीपतकाभी २ थोड़ेही पारि समय सुखिक धनकाल्ल महोत्तम सुखामिल [illegible] विशिष्ट तिवाम हस्ते का चिनवनमुर करभी २ गुरुचिन्ता में मनमें उ
पवि मति शाका भयुद्द नापस्थिन पन्धने अपपासि विर्थ पुण्य पाना पाग्य परमस्थान [illegible] मिस्कजनके व भयवश में जन्मलग्न पतिधनवान भारी सदशा धीर दानप
नपत्रअपजन्य पनी धर्म भाव्याप्त भाव गावि उत्तम का सीसे विशेष प्रति [illegible] में भाति मित्रला बावगई कोकिली समय देवभागले बहु छिन आपने क
न भदिन तीर्थ को क्या भार एक प्र हुए रत्नों [illegible] पाफूर कुछ दिन पीछे नीचे से आपछिजने मास मोगीनी व्याधु गुरु सदा नदने नवीन
बाद ॥ने को धकार राकरण माप दिशानि [illegible] भूपाध का भानो हुआ अनेक दुःख प्राप्त हुई अकावानि को मत घातुक पत्र में माती और रत्न रसन बहु रोड
फिर लाखार भक्ति पूर्वक शास्त्रस को बान को [illegible] जब बाकीजय का पुरुष में मन लगावे तो पुरी सुख पावें किर वेश्य कुल में जन्म लेने मनको नव इच्छा प्रमी त ॥ रा

एनयोग्य यो बालः सद्वर्णविभूषितं ॥ नानमान [illegible] मोदं गृहं बाल विलोकनात ॥ उत्पन्नो मातृ बाधायां मंगलं विविधान् सदा ॥ दानं भंत्र सुपण्य ए-
एनयोग्य बोचालः सद्बवर्णविभूषितं ॥ नानमात [illegible] मोदं गृहे बाल विलोकनात ॥ अर्थकार्ये व्ययो नित्यं मोदते धर्मतत्पर ॥ परोपकारवार्तारो बुद्धिमंनो दयान्वितः ॥ न
रिपश्रु शृद्धि रह निशि ॥ नानालाभ सुखं नित्यं [illegible] सर्वशीलनः ॥ [illegible] पानिहिते ॥ कंचिज्जाव दरं चितं चिंतये दिविधकाना ॥ बालदास्य विलोक्य च सु
हृइन्धु भेत्युस व्ययोतत्र नपन्थित ॥ कार्ये बृ [illegible] भयप्रदा ॥ भाग्यवृद्धिसुपुण्येषु मुक्तक समुक्तवह ॥ अन्नदान
मित्रवर्गमियवदः ॥ सुयत्नवान सवरा मन इच्छा भयपूजिता ॥ कार्याषु हति [illegible] दृढ चिन्तकुलामातः ॥ सक्रमाद्व भय दीर्घः चिंतचिंतागत पुमी
चिंतानित्य शरीरसुख वर्द्धन ॥ सज्ञात्नक शल्यादत्तः इष्टलाभं दिनेदिने ॥ चिंतनानि [illegible] लोक वज्रचिंतनताईशी ॥ भनि माभी विशपुत्रण रत्ना मन्दिरशुभ
नसुतलभनपुत्री पावसदन पापहा ॥ कालचंधुविराध गारपपसंचकाशिना ॥ भनिस्थान [illegible] भाग्ययवक्षशासितवा ॥ स्थानो यस्य भवेद्वृद्ध्यं चदशनव्यथा ॥
जलाशयुतशन पामारामूर्तीतिवर्द्धनः ॥ पापशान्तिस्सयत्नन धनधन्य सुखमुद्बन ॥ माननम [illegible] सदारिक्त पाभवः ॥ पुन्नपक्षभवर्धनागमपस्लनन्द
चान्द्रिभीता तृतीयपादे चलद्येचावनभयम ॥ नानमातृसंवासिद्धा चंचलश्चपलाशिशुः ॥ सुपुत्रो [illegible] बन्धवा नित्य
कृ ॥ स्थापनापूर्व पापस्य महादान सुखं तदा ॥ मंगलं ज्ञान पाणापि सु सद्बुद्धिनिरंतरम् ॥ विद्याभ्यास [illegible] कुशलो मानवर्द्धन ॥ पत्नी पाप्ती-
श्वतसुखवाभन ॥ धनवान्यादि कात्स्य चान्द्रिचारिभयापदा ॥ व्यापनन्दादमवदु तथा पञ्च वशापिया ॥ लिप्यलेखन [illegible] कुशलो मान वर्द्धनः ॥ पत्नी प्राप्ती-
मनुभिन्य पूर्णपुण्यपाभूतलं ॥ मंत्रसारलतां ज्ञाप्य दीर्घमा ज्ञाम ह त्व प्रा ॥ विपत्ति सिद्धिदानित्यं सुजनश्यामशासितः ॥ श्रमत्र क्रीडन बुद्धि रूपयौवनचिंतितः ॥ शा
स्वसामान्यादत्तत्व नेत्रनेत्रदंनतरं ॥ भाग्योदये सुखं नित्यं नारीभागानि सर्वथा ॥ पदाच्चलभते धीमान्लाभ काल्य विनिर्तकः ॥ श्रयत्ने दारुणी कष्ट पतंती चिंत
नाणेपु ॥ मासयम सुखं जाते कष्ट पापि शतये ॥ चान्द्रपत्न गतवर्षे व्यामरामावधिक्रमात ॥ दम्पत्ये सोपनं नित्यं दान धर्मे सुखागमः ॥ मंगलं विविधानि-
नाणेपु ॥ मासयम सुख जाते कष्टापापि शतये ॥ चान्द्रपत्त गतवर्ष व्यामरामावधिक्रमात ॥ दम्पत्यो सोपनं नित्यं दान धर्मे सुखागमः ॥ मंगलं विविधानि- राम
त्य पुत्रतनप्रकाशितं ॥ व्यसाचापि भवन्त्यण कलत्र धुनशासितः ॥ माननमन्त्री विसा यशोभूरि महीतले ॥ देव दर्शनजा मीति पत्र मंगल दायिनी ॥ चंद्र
नीवृक्ष रोचितं सुखि परमतमुदा ॥ नामचन्द्र गुणवर्षे व्याल रमा नत्रवधिः ॥ विवादादि महान्साहो देव पाणपान्सुवे व्ययम ॥ ५ ॥ नाना काव्यं भवध
श्रुणमत्र सकलेशुभे ॥ ५ ॥ नृपद्वाराविनु मान्यं सर्वमातुर्यागता ॥ ५ ॥ सुसंमान्यायतनपदं तेन श्रेय सुसर्वदा ॥ ५ ॥ जातकाम सुखाविष्टो भजना
नंदनत्परः ॥ ५ ॥ उत्पन्ने [illegible] भावेण चितचिंता सुखप्रदा ॥ लाभानि विविधा कार्ये धनवन्नादिसंयुत ॥ सुखैशाक्तप्रदारक्षा महादानेन नश्यति ॥ ५ ॥

कुंडलिस्य फलं चेदं महाश्रेष्ठफलप्रदा ॥ पर्वं प्रयात्र यो भूपाचानां चिंता पि वेदना ॥ दानमंत्रं सुयत्नेन सुख वृद्धिश्च सर्वदा ॥ द्रव्यलाभविशेषेण ...
दिने दिने जायते विविधं लोके पापवृत्तं न पापदं ॥ ... पुत्रोत्मकष्टं च भुंजीतो बहु नित्यशः ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सुखानि ... धर्मवित् ॥ ...
... निपुणो भवः तीर्थचिंता विनश्यति मनेच्छा ... ॥ मंगलं विविधं नित्यं सर्वसौख्यकरं ॥ ... मेलनप्रीती विवाहादि महोत्सवं ॥ मनिष्ठा
... यशभूरिसत्कीर्तिं ॥ भूमिलाभविशेषेण ... कीर्तिविख्यातभूरिशः ॥ भोगी भवे भवो नित्यं वस्त्रं तन्तु तनं सदा ॥ का-
... फलमप्रदा ॥ ... भयदीर्घः चिरं चिंतनं मंडल ॥ ... लिखितं ॥ सस्याप्यं कलशेनातः ... मंत्र ॥
... कालाय ... पुत्रादि ... सुखक्रिनः ॥ ...
... सुदा भवः ॥ कामचितामणी द्रुत ... धन प्रवादितो ... महादानन्न रोधरा ... फलं भनित ॥ ...
गलं सुखवर्द्धनं ॥ ... पीडिता ॥ ... शिशुः ॥ ...
... यथाकामः ॥ ... ॥ ...
... भूपतः ॥ ... तथा मध्ये यथाकाम ॥ नायते विविधान्य ...
... यशभूरिसतिशितः ॥ शरीरकष्टं ... भयागमः ॥ ईश्वर ... परमसुखं ॥ दान धर्मादि यानित्यं
... महत्सुखं ॥ विवाहादि ... भगपि ॥ ... नित्यं ... ॥ ईश्वराराधने प्रीती ...
... ॥ मनेच्छा ... गरीयसी ॥ ५८ ॥ ... यशवर्य ... ॥ लाभवृद्धि ... व्ययं च महतातथा ॥ लि-
... कुशलामानवर्द्धनः ॥ ... सर्वसिद्धि सदा भवः ॥ ५ ॥ कामक्रीडा मनोहरा ... ललनाजनैः ॥ मित्र धर्म सुदत्तश्च काचिन्नवि-
चिंतनं ॥ ... नित्यं विविधा कामक्रीडनं ॥ सुतारत्न मनायेन ... मंगलं गृहनूतनं ॥ ... ॥ ...
... ॥ ... मनेच्छा सर्वपूजिता ६ ॥ ... ॥ ... भवतस्य सुखलभ्यो नशंसितम् ॥
... नाना काम्यमनर्थकैः ॥ ६ ॥ ६ ॥ ... व्ययमोदिता ॥ ... सौख्यं च सर्वथा ६६ राम

नृपद्वारे मतिश्रेष्ठी पि रिपुनस्य विनिर्मुक्तं ॥ आनंदं सज्जनैर्लोकैः स्वजनानंदकारितिः ॥ ... काव्य मुनिराम सुवत्सरे ॥ पुत्रकन्याप्तिवित्तस्य व्ययं कीर्तिं
... ॥ भोगैश्वर्य संपन्नो भूपसेभूमि भाजन ॥ मानेन महता विप्रो यशसे साधनमतिः ॥ ... पराभव न श्याति ॥ अनुष्ठान महा
दानस्य सिद्धिकरं परं ॥ रामवत्सराब्दपर्यन्तं ... भवः ॥ मनेच्छा पूजिता नित्यं ... नूतन सुन्दरम् ॥ ... संपदा ... महान् ॥ बाह-
... ॥ मुनेन महता विप्रा ... ॥ ... ॥ ... दर्शपूर्ण
... ॥ ... महादान ॥ ... ॥ ... पौत्रजन्म महोत्सवं ॥ पत्नी सौख्यं विन-
श्यति ... ॥ ... ॥ भूमिलाभविशेषेण मनेच्छा सर्वपूजिता ॥ दानधर्मे रतानित्यं ... ॥
सिद्धानि सर्वकार्याणि ... ॥ ... ॥ ... ॥ पुण्यान्त्रय सर्वं नि-
त्यं ... ॥ ... मनेच्छा सर्वपूजिता ॥ ... ॥ ७ ॥ इसयोग का वहन उत्त-
म फल है परन्तु पूर्वपापके कारण हीन फल प्राप्त होता ... आनंद बढ़ता है ... दिनों दिन भाग्य बढ़े
जब तक ... शान्ति ... संसार में अनेक भांति के ... प्रकार ... धर्मपूर्वक रहने से
... नित्य अनेक प्रकार के आनन्द मंगल
... विवाह आदि अनेक भांति ... अधिक बढ़े विशेष यश पावे अधिक भूमि
का लाभ ... मनकी सब इच्छा पूर्ण होवे शरीर आरोग्य रहे सब ... महादान को
... फल भोगे ... पुत्री के विवाह को इससे- राम
... लिया ...
... ॥ ... ॥ ...
... नित्य धर्म ... ईश्वर का भजन करना ... भाग्य

सं-
ज्ञ-
५

एतद्योगभये प्रोल्लसतनभोक्ता सम्पान्नरः॥ भाग्योदय महत्त्वस्य गुणानन्दितमन्तरं। लाभं च विविधो बाधे ५५८ अथो पिमदनो भवेत॥ व्रीतिरूपेण न
पुण्यं सम्यक् सदा॥ चंद्रजीवपरंश्रीती भोग्यते बहु तत्परः॥ यादा लाभ भवेन्नूनं पुनश्च मदनो भवेत॥ जीव विना विशेषेण शाशङ्को भ्रमविह्वलः॥ मनेच्छा प्रतितेन
च मोदिते पुण्य भाजनः॥ वन्दिपारि भयं प्राप्य दुःखस्य पतितो भवेत॥ नित्य पुच्छ स्य योगेन चतुष्पादादि पीडितं॥ कलत्र बंधु विरोधेन मनोद्वेग विचिन्तनं॥ पुरा
पकार कर्मीरो सुकृतं भूयो मुक्तिकः॥ दुःसम्भावकृतभवेन चिंतनं विविधं तदा॥ दानविनोदशास्त्र च्च आकुलेविष्णु नामनः॥ कदाचित्कालभविष्यते भयकीर्ति श्राप
भूतले॥ लाभे प्राप्य समशास्त्र दानमंत्रैः सुपूजितं॥ तेन सद्य सुखं लाभ धनपुत्रादिनामद्दत॥ पूर्व पापसमुद्भवेन शांतये धननीवदा॥ मनमी रत्नतोलाके पत्र
नाशिनी॥ भूमिभंग्र धनप्राप्य भारा मम स्वयं वर्धन॥ गज हारेन पुनित्ये दिवालंबत्व शश्वतः॥ सर्वत्र तस्या सुखनित्यं पुण्य पावक शोभितं॥ आयु वर्षं द्वितीये च मास मास भु
स्वामः॥ नानलाभ मतिशोपि किंचिद्विशेषा चिंतां भवेत॥ शरीरे दारुणा कष्ट सर्व शांतिः सुयत्नतः॥ रामवर्षगतकाव्यः चतुर्थपुत्र मे पिता॥ बाल वृद्ध
सुखं नित्यं क्रीडनं मतितत्परः॥ तृणवात विकारेण ज्वरत श्री भयप्रदा॥ कायपत्रान्नदानेन कष्ट शांतिः सुरागमः॥ रसाब्धि नन्द पंच तथा तयथा
कामक्रीडन विविधा नित्यं शिशुणां मनसमति॥ विचार सुमनतक्लान्ता स्थापनां मध्यते मदन॥ नामसंको धितो धाधु सकस्मात्ज्ञायते भय॥ दानमंत्र सुपुण्य
ग भाग्य बुद्धि सतोषितः॥ पत्नी योगादि संयुते मंगल नायते गृहे॥ अष्टमेन्दु षोडशेवर्षे तन्मध्ये विविधं भवेत्॥ विवादि भाल चापि मति काम प्रवर्द्धते॥ बन्धु
स्वजनस्य प्रीतिकारी मदा युत॥ अथान्निबहु विद्यानि राजत्व सुलाभ सुखानि॥ काम क्रीडा मनोहरा विद्व लोकप्रिया॥ विपुले स्वनकापि च कुशला सुभूषितम्
सुमित्र पश्यमादी दृश्यन्ते लंलनागने॥ सर्वत्र स्वप्ने समायुक्त नाभद्रा नो विचिंतनः॥ नगृनुवह्नि चाब्दे भागने शुद्ध यजन॥ स ज्ञानानी सुरूपानी माधुर्यानि मे नि
द्रव्यलाभ सुखा विद्या मानेन मल्ल नाचन॥ सुनपुत्र सुगंग सर्वं धन धान्य कुलादयः॥ स्व कुरुकेशि वैतनु नृपा शासिव शोभितः॥ गज हारे प्रवाहेन वा आपारी लाभ संभवा॥
दिने दिने महत्तेजा धनीच्या पर कारकः॥ पूर्वपापा सुताला तत्र देवताति सुदर्शन॥ इष्टगण च धन भीता सन्ध्य भयस्कर मदा॥ वेद नन्द गते वर्षे पञ्चदा मान्य गोनथ॥ राम
मंगलं विविधा पुण्यं विवाहादि महोत्सवं॥ वृद्ध मृत्यात्मन नाक मानकांति च सुनना॥ मद्धामतान् विदुषा त्रातादि मतिन्यर॥ रिपुरोगा भयचिंतायुं शांति श्रुमनेग द्वि
उवकामुभय कष्टं निमग्नस्थित नाशवे॥ महामृत्युंजया जाप्य भयो मानं विनिश्चितं॥ राम सप्ताब्दे गते काव्य यावन्मृत्यु चतुर्थकं॥ बावत्पुणय प्रभावेण सर्वेच्छा
सुख पूजिता॥ विपदा भय दंष्टाप्य अकस्मात् चिंतने मदन॥ आयपुत्रा सत्याप्यम सर्वश्रेय स्कारी सदा॥ एवं कन्यान्म वेनस्य व्यर्थं कीर्तिश्च सत्तमा॥ ५॥

इष्टलाभभयादी देः कलहेन प्रकाशिता॥ प्रजासुभोगबुद्धिश्च यशसाधन तत्परः॥ मानेन महता विशेष कुलकीर्ति प्रकाशकः॥ शशि चन्द्र विवर्षाणि भूमि
वेदाब्दके तथा॥ मासे वृद्ध सुखं नित्यं साफल्यं जन्म मंगलं॥ वह्निगत्यगते वर्षे पौत्र जन्म सुमोदिता॥ सुप्रबंध सुपुण्येन विख्यातो मति मान्नरः॥ कीर्तिश्रानि
मेली भता दान धर्म सुदान्वितः॥ ग्राम चापी विशेषेण नूतनो मदवाहन॥ यवराशिगतेन वजिनपालाभमुत्तमं॥ रत्न सुमेरिणीत्व भाग्यस्य परमोदयः॥ नागरा
परःशमने विमलोश च तन्नः॥ श्याम पराव श्रिकास्य शारीरिक कष्ट दारुणा॥ नित्यशा शापूर्ति न्यस्य राम नाम सुरक्षन्पते॥ दानपुण्य रतो नित्यं मग्नजन्मस्य दत्ते
पुष्पोदाना नत्व फलेन च ईश्वर भक्ति भवतः॥ सवारि प्राप्त यथा याति चन्दन समस्त सदा॥ वेदशास्त्र गतं वर्षे भावी काल सुरेशता॥ प्रायश्चित्त महादान साफल्य स
चेन्द्र भयः॥ वर्षे स्थाल नगा दुर्ले नपावनन्य भक्ति॥ उपयान्त सर्वं सुखाविहारी मनेच्छा नित्य पूरिता॥ ज्ञान ध्यान समुत्पन्ना कियत मङ्गल साधनं॥ सयदमा-
नसी चिता सतमोक बाल्हना॥ अल्प मृत्यु वशा पातः भाम मशर्व वलित॥ ईश्वरे तप यात्य एवं प्राप्यते सर्व वैभवाः॥ शतनीरी भवेत्तस्य लोक पाम भसे
सिना॥ पापादि नृत्त पतन्या स्वपूर्व निधनाजनः॥ एतत्जन्मानि लेवत्र भयजन्म विनिश्चितः॥ जायते पुत्र मे गेहो पुण्यात्मनवे सुलागमः॥ भाग्यपणी प्रापि
णी भूयात्परं तन्त्राधिकारिभिः॥ एवं पुण्य परं तुल्य सर्व श्रेयस्कारो सदा॥ भाषा-॥ इस योग के प्रभाव से यद्जनु दाता भोक्ता सुखी हो तेतीस वर्ष की अवस्था
में भाग्य बढ़े लाभ के धन का मला सच्चे भी व्यतीत हो पूर्व पाप से क्लेश पावे पुण्य यत्नादि से नित्य धन दहा एक जीव से प्रीती ले सुख मिले भ्रम काम लाभ हो फि
र धिक चालीस की चिंता में रहे आशंका नाश भ्रम में विह्वल हो या आकारे इष्ट धन हो न सम्मत सुख पावे मन की इच्छा पूर्ण हो करी ऊंचे गिरि अग्नि जल वा चौपाये से
आप में भय पावे कुलवधू पुत्र के विरोध से मन में उद्वेग चिंता रहे पर प्रकारी हो अन्न नौका पुण्य भविनिकन ते दुःस्त से चित्त में चाह हो अनेक विचार करे एक दशा में दानी हो चित्त
भ्रम से व्याकुल रहे कि सौ समय काम सुख श्री कीर्ति पावे पूर्वजन्म के पाप की शांति करने से फिर संसार में पुत्र पौत्र धन आदि सब सुख प्राप्त हो सब्बी मद्र वासी और धन का द्र-
व्य को वृद्धि हो दरबार में जय पावे शत्रुओं का नाश हो सारी अवस्था सुख से बीते पुण्य दान हो सन्तेन्द्र प्रशंसा पावे पूर्वजन्म में यह जन उत्तम कर्म भाव से श्रोते धनवान् वैश्य था राम
नगर में धर्मादिसे अत्यन्त प्रतिष्ठा पाई पुनः कामसे मोहित हो कुसंग में पड़ मद्य पानकर वेश्या से धन का व्यसन पड़ गया तिसी से सब धन नाश कर कलंकित हो पर स्त्रीगमन
नरक पाया भागी हो इस जन्म में अनेक दुःख काया बना विविध बाधाओं के निवारण से श्रुति नीति पर वेद मन्त्रों की शांति सुख महानामा की आराधना कर शत चंडी विधान से पूजन
दशांश आचार्यके ब्राह्मणों की कन्या की दोनों वस्त्र आभूषणादि दान दे ईश्वर के चरणों में मन लगावेगा मन सुख पावे अग्रजन्म में उत्तम घर जन्म ले सब इच्छा पूर्ण हो आवे॥

तस्य भोगेऽथ पापैः यहसौ स्थैर्यं चेष्टिता ॥ नातविश्र सुतापत्नी मोदते च तत्परः ॥ भूमिमंडधनं प्राप्य सुकीर्ति ख्याति भूरिश ॥ गोहस्य निकटे रम्ये वृक्षो वापि
तस्य मूलोऽथ पापैः यह सौम्य रसा चेष्टिता ॥ नातमित्र सुतापत्नी मोदते च तत्परः ॥ कचिच्चिद्विनु परमीनोह्यपि शोक विचिंतने ॥ न्यून विपाक भक्त्याम वृद्धि दीर्घ फलप्रदा ॥ परत्र तस्य सर्वाभूषास्तु
जाता अथ ॥ जन्मभूमिस्त्यक्त्वा पूर्वं मन्यतो वसनं मुदा ॥ लाभश्च विविधो नित्यं सर्वत्र सुख साधने ॥ सुखं शोक भवा
भाग्योनिवर्द्धनैः ॥ न कश्चिद्धीयते नापि मनसा कार्यसाधकः ॥ दशा भवेत् सुखानित्यं मनं ब्रह्मो पतिता ॥ बृहस्पत्यं भुपावर्या ओषधि परमं मुदं ॥ बहु काल
न्यून लाभ्य मार्गाच्च कार्य हानि मदन्त्यः ॥ नाशचिन्ता हृदि गा निशाकर्मा मा पितॄनः ॥
बुद्धि मनो धनागमः पत्नी सुखं भवा ॥ पूर्वापर विनाशाय मासा
मनश्चिन्ता सर्वे पुण्य मुपभवनैः ॥ दानमनसु पुण्ययुता दीर्घायुर्भुक्तवहूनैः ॥
कदाचिद्दारुणो कामे मानापमान विचिंतनं ॥ गुरुत्वाया सर्वप्राप्त कृष्ण भूमिकान्तर ॥ पिण्डगीतां गृह
ततो धृतौ कृत्स्नेन यत्नेन मुयोग्य मति निर्मला ॥ मृत्यु मंडिते चरणे [illegible] ॥ शिशुवृद्धि कृतो [illegible] तान नात
तसुभक्तिनः ॥ हत्यामथ सत्वाध्म सर्व सयत्कश शनिश्चिता ॥ तृतीय पंचमे सप्त मधादे वल्लभ ममाव ॥
कौशमास्य गतेन शतयः ॥ नानाविध विनश्यंति मात्रमाता च्चिरो भवत ॥ तृतीय पंचमे सप्त मंदिरे मंडदकानयः ॥ गुह गायन्त्र रातिस्या कथा पत्र गुल्मानया ॥
॥ ~ ॥ ~ ॥ एक त्रिधा पदे श्रादो चंचलस्य पत्नी मतिः ॥ कष्टेवाधा च भूवनापि द्युताविनोदादकानयः ॥ उच्चादारि मुधानकं मित्र
भक्ति भावं गा सुतकशो विनश्यति ॥ ध्यानाचाप गात कान्त्य या च हूय सुकादश ॥ बन्दिमामगनुषय कनविशालगता ॥ कामदामालाभर लिलप्त
मदा ॥ नामकीर्तिविशयस्य गतानुसयनपदा ॥ अन्यकष्टविनश्यति कोडने बहुतत्परः ॥ मूलाप भाग वृद्धिश्च कामच्छा पद्म पतिनि ॥ द्रव्यलाभ भवेन्नाशे
न ग्रहः ॥ मामस परमभीतो रूपयंकचिन्तन ॥ पापशालि मनमयन भद्रहाह रनानि ॥ कुवेरोमन्त्र भारध्य सुकापार मनुमनः ॥
विद्या सत्यं मा ॥ व्यामुनेत्राब्द मारभ्य शनविशय चाकसं ॥ कार्यनिताविभ्रपण बुद्धिवनादि वचनः ॥ रनतव्यचिवनां वान्द्यामनुगं
महनेन ~ दिता पापि मोहिता ॥ चिनाशक मनाहूयं इस्य नेत्र नानतेनः ॥ भाया भालना भया हलजनभूद मोदकू ॥ मगले वैविधा
द्विता मित्र ख्याति धनाढिमदननदा ॥ नमामायपरमाणां आगम मादचाहुतः ॥ ~ ॥ ~ ॥ मना प्रवान्विना पापा इपत्यसौ जन्यः ॥ बाडनादि सर्वेज्वरे दामदामस्य सर्वदा
यत्नाधनादिविर्नित ॥ इंद्रस्य स्थिर चा वीर्यं कुन्तकाति मशमितः ॥ चित्त ध्यानं दत्तापिस्था हृत्यता भूयभावतः ॥ माससवि मनसि निलं भ भव भवं बनत नम् ॥ प्राप्ति नमा द्व नारभ्य ~ ~
द्विको धर्मज्ञानमस्य प्रीतिकारी महामुखा ॥ मननमद्र नाविशी पुण्यं यशस्य निवर्द्धनः ॥ राम

पाचन्यं च विपाद्के ॥ तावत्कालत्वविर्नेन भाग्यस्य परमोदयं ॥ नूतनो कार्यमारम्य सुभासिद्धो सुखीन्नरः ॥ पिपासादि महोत्साहो मंगलं नायते
गृहे ॥ पूर्वविमला विनश्यंति यनम्य नगनो भवः ॥ पुत्रशत्रु कृत्स्नेस्थिन्वा मन्यक्षो भीति दर्शितः ॥ सपुण्यान्योदिने नित्यं सर्वकार्याणि सिद्धति ॥ माने
न महतो विशो पदार्थं च प्रतिष्ठितं ॥ सर्वकामभवेत्कार्य दानमथ सुखश्रदा ॥ द्विगुणी चिवकन्याच सुस्थिरं शोय नश्यति ॥ ज्वरत पमगतेयं व्योमवेत्तान्त्र
रीनया ॥ उद्यान विभ्य योद्धव्यं कार्यं च बहुनूतनं ॥ चिनयद्विविधा नित्यं संकल्प्य च विकल्पता ॥ सुखोद्यमनुमलनु भवि [illegible] ॥ कस्माच्च भयं ध
विभक कराले मुख ॥ ईश्वर कृपया न्याय सर्वशोक विनश्यति ॥ सम कन्या गृहे सुपू शशिने दास वारुने ॥ तथा च भूति मंत्रुशा नृपा पार्थ प्रदि क्रना ॥ सैव भुक्ति समस्तके
सर्वेषां शासन ॥ नवनारसु सोडामः सुविलसुभमाहरि ॥ नरपन्यादि धनं पतुनम्ल सुखप्रदं ॥ मनः श्वापजनता सर्वं मंगलं मादनित्य शः ॥ कादुचे परमभीतो
राधिकाया मपान्तला ॥ द्रव्यागोरुजान्वयः आपनो धनि सुचकः ॥ सत्य धर्म गतेन चाय सुखं पुण्यमञ्जयं ॥ गन शशाति स्त्रयुत्रेन मुक्ता रा यथानंदः ॥ नगनराज्य
गत्वा प्रभानीविलोयते ॥ पुण्य कामेश्वरो नित्यं सुखसर्वत्र भूतले ॥ यथाग्रे पितुपुण्ययुत सभव चात्रसे कुलं ॥ वृद्धि मनोति राजश्च सुखं सर्वत्र भूतले ॥ ~ ॥
॥ भा० ॥ इसयोग में जन्म होने वाला जन सब सुख संपन्न होता पिता माता मित्र पत्नी आदि सब सौहिन भूति पानंद भोगे सम्यो धनआदि काल भर सेव्य शत्रुका कोनि से
विधावित स्थान व मान्य ता भाव घर के ओर कोई वृक्ष वा जल का स्थान हो अथवा जन्म भूमि को त्याग और गाम सुख सब सौकि सौ मित्र मे भनत भानी रहे हय भाग्य
चालित निना करे विवाका मपत्नु परंतु बुद्धि अधिक फलदायक दो परोपकार में मन लगाय सच से आनंद पदे भयन चित्त से कि सी का दुख न दे श्रेष्ठ जनों से का मुकता सिद्ध
नारे उन मरणा मे नित्य सुख पावे बहुन सी इच्छा पूरी हो सब जगह सुख का साधन करे अनेक प्रकार से काम सिद्ध हो परंतु सुख भोग में शोक का गुरु या भी हे तिम से
का जस दशा बावन भकाम हा तब भी अधिक हो बहुत से काम बिगडे इससे विचार तथा दान मंत्रादि से सब सुख हो अधिक भाग्य बद्यज्ञ न से आनंद भोगवे पूर्व पाप की शान्ति
को निमित भक्ति पूर्वक मत्युक्षिता क्रन पुण्य से सुख भोग मध्यम नन्म मे बहुजन स्वयं का स्या चढे श्री भगवान उत्तम भाग्य पुण्य वनता रहा आनंद सहा पाई ईश्वर का भजन
भी करता परंतु कुसंग वसत्र श्या गाम भोग मा फिर तुचा भी रसन ने लगाति सौ से आदि हवा तब काम बिगडे नानाज ग्राह को का बहुत सा धन लाबी दशा का भाग्य राम ॥ इनको
पाये इस जन्म में पन्ना दुःख पावे इसको आ निकले बिके कल श मे बहुजनसा सा नाना वाद में उन कसु धन में भर लाखु तब में संतत धन श्रद्धा भाग्य करे सौं दिन दान कर भार्गवा पंचापकाद्य या
अौ कि पत्र का बल करता ये द्वार रखा स पुरस्कार कुन्न र भवन पवाव ईश्वर के भजन मे मन लगाय बालस्व सुख पावे और स्याग का ड जन कुल मे जन्म ले पूर्ण आनन्द भोग ॥ ~ ॥

सर्वलेटेष्ठमानेन धनधान्यान्वितोभवः ॥ नानमानसुखंसत्यं सुखार्थे व्याकुलंसदा ॥ गुरुदेवसुमत्तश्च विप्रश्रीमुखवर्णितं ॥ पूर्वपापेणपीडयंते नृपाज्ञय स
समन्वितम् ॥ धनवधुक्रियते लोकत्रस्यमनायते ॥ प्रथमेणधनंप्राप्यसुभ्यंतेलसनाजनैः ॥ साभिमानी मलीनश्च [illegible] विना प्रशात् ॥ सत्वपेपिध
नधान्यं नोप शांविधाबाचित ॥ वियोगकालहोदुःखं पितपीड़ामनायते ॥ आयुश्चिन्तमखारानम विघ्ना प्रानिलनरः ॥ ईश्वरभक्तिनरा सुमतिप्रियभापणः ॥ सु
बुद्धि धनाध्यक्षो दत्तादि मतिनत्परः ॥ मन्त्रमेकुरुते नित्यं सुधान्यं मायतेकुले ॥ सर्वसौख्यसुतापत्नी धनीपुत्रसमन्वितः ॥ मद्रुपभूषणोवस्त्र यानंचतत्पदा
न्विते ॥ सर्वकर्म सुभागाय बुद्धिमतो विचक्षणः ॥ परान्त्रस्याति भ्रातृश्च गुणग्राही दृढव्रतः ॥ धर्म वार्ता सदावृत्ति सद्भावि कुलवर्द्धनम् ॥ मातृभक्तिरतो चिन्ता चि-
न्ताधिक कदापिच ॥ योभुवः स्वामिसंयुक्तो नयाचंचविलासितः ॥ तन्त्र बुद्धि विनाशाय [illegible] ॥ पाण्डित्य [illegible] शील बुद्धि दिने दिने ॥ सुपुत्र
संततिर्जाति गजत उत्सव देभवा ॥ चित्तोदार विनीतश्च सुसंगान्मान वर्द्धन ॥ सुमति सत्य भार्या च रिपुहानि कुरो भुवि ॥ चतुर्वर्ग पवाद्गा विभोग जायते धनः स्व
र्धर्मभवकाल परधर्म विद्वषकः ॥ धर्मगण सदाचरणा सर्वसंपत्समृद्धिमान ॥ [illegible] शिशुवृद्धि दिने दिने ॥ [illegible] शान्ति [illegible] पुनः
दानभवनपाणाम्ब [illegible] सुखमदा ॥ तूर्णविपश्च [illegible] पानवर्द्धनः ॥ शिशाकोद्ध विशपूणा तानुभात सुखभवा ॥ [illegible] नूतनो लक्ष मगपन्त
॥ किंचिदानादिभक्तर्ण श्रयवृद्धि स्वसर्वदा ॥ श्रम मेहादशवर्षे मंगलादि विधास्तवं ॥ [illegible] मिथ्याभीति [illegible] ॥ [illegible] मंगलेकार्ये पत्नीलाभा
नसशयः ॥ धर्म मार्गगतासना देवभक्तिविचिंतने ॥ कुशलस्सर्वकार्येषु भाग मभ्रयं वर्द्धने ॥ [illegible] सुस्नात [illegible] कुवखान्धमह
न्यमः ॥ कुशलस्वकार्येषु कामकाउ [illegible] मोदिना ॥ [illegible] विचरेत्विमोहिना ॥ पत्नीगमेवतितस्य कन्यारत्नं प्रजायते ॥ मृतः प्रजापि मावलापूर्व
पापेणपीडिता ॥ चित्तचिंतागृहे क्लेशो वृद्धि समगाहस्यः ॥ [illegible] पंचविंशाब्दिकेतथा ॥ ~ ॥ ~ ॥ दानभवादि पुण्येन ईश्वरभक्ति भवतः सर्वसौख्य
गुमानित्यं विपाकनाभदोमहान ॥ [illegible] विपणीभवः ॥ मानकीर्तिसुखं नित्यं सुजनेभ्यो प्रशंसितः ॥ धनपवाद [illegible] प्रियाचप्रियभा-
षिणी ॥ देवतीर्थजनेषमीनी यात्रामंगल [illegible] ॥ [illegible] किंचित्कालं विनश्यति ॥ [illegible] नित्यं [illegible] विविधोत्सवं ॥ मानेन महता विशो
पदस्य महतां भवः ॥ [illegible] पत्नीमंत्रपादक ॥ ~ ॥ ~ ॥ नानाकार्य भवंश्च गजतेसुख मंदिरे ॥ सुजनोसमो धाम [illegible] निर्मला ॥ सुपत्नेवि-
निधकेशा कुमारी चिन्तनभवत ॥ [illegible] मुनिराज [illegible] ॥ ~ ॥ पुण्यात्मनयोगस्य बृद्धि [illegible] ॥ [illegible] नित्यं विवाहादि महोत्सवे ~ ~

कलकीर्तिकारोपुंसः मानतांशेभयप्रत्नतः ॥ [illegible] विरूपाणो पिपतितं ॥ किंचिच्चौरभयाद्वापी चिंतनं पत्न साधितः ॥ कार्यवृद्धि विशेषेण व्य
पुत्राभी महत्वता ॥ सुतजन्म विशेषेण साफल्य सर्वदेभवा ॥ सभाग्यमहतायाधि देभाग्यंच विनश्यति ॥ मनं [illegible] नित्यं मोदनंधर्मतत्पर ॥ द्रव्य
[illegible] भाव्यं पश्चचविविधकिया ॥ [illegible] सर्वसंप्रहृतत्परौ ॥ स्वधर्मनिरतो भागी [illegible] ॥ श्रीमान्विचक्षणा यात्रः कुलाधि
जनृप । भेव ॥ किंचिच्छत्रुभयंमान्य राजाया [illegible] ॥ सर्वशांतः सुयत्नेन प्राप्यतपूर्णविभवाः ॥ यतः परि [illegible] शत्रुवत्सरत्वाधिः ॥ विदेशातु र
[illegible] सप्तभीतिकार्यवच ॥ वापीकूपतडागाद्य मादरमानतत्परः ॥ मिष्टान्नरसमश्नाती कानावाक्य मपान्वकः ॥ नंदनत्वाशेविवाह पंच जन्मसुखप्रदा ॥ वेद
वाणामिते वर्षे तुजात्या विप्र भयावह ॥ शुभकार्ये व्ययोनित्यं उपदेवान्नन्देगृहे ॥ नंदपन्चाब्दगकष्टे [illegible] दशा ॥ सुपुण्य सरस्वती नित्यं सर्वश्रेय
स्करभवः ॥ देवब्राह्मणभक्तश्च चिकित्पापि [illegible] ॥ [illegible] दानदानसमायुतः ॥ [illegible] मतवाष पन्चतत्त्वमयाभवत ॥ [illegible] वृद्धिसुपुण्ययोगा
ज्ञात्वानंदनपाश्वको ॥ श्रम्रजन्मसुयत्नेन धनीधर्माभवर्द्धित ॥ ध्यान्दामत्य पदंदेवे भयंसमतभाजनः ॥ दानमत्र्य [illegible] ज्ञात्वातत्वपरंतपः ॥ भाषा ॥
[illegible] इसमानस यहजन धनधान्यसे युक्ता हो पितामाता का अल्प समयपाके और सत्य के निमित्त सदा व्याकुल रहे गुरु तथा परमात्मा का भक्त हो परन्तु विप्र
हो दानसे [illegible] भय [illegible] कारणकरके राज्य भय भी [illegible] रह समार में [illegible] धन [illegible] भी मान [illegible]
लिन [illegible] गुरु [illegible] पत्नी से [illegible] दुःख [illegible] की पीडा [illegible] महादान आदि पुण्य के
प्रभाव से [illegible] धनवान हो [illegible] कुल में [illegible] धनादि [illegible] आभूषण सवारी आदि सब
सुख [illegible] और [illegible] धर्म में चित्त [illegible] नित्य [illegible] धर्म का [illegible] पूर्वजन्म
में [illegible] और [illegible] भजन न पाकिया परंतु फिर [illegible] माता पिता को कुपवचन कह
उनका [illegible] इस जन्म में [illegible] इसको शांति को
[illegible] आभूषणादि [illegible] आचार्य को दान दे धर्म पुण्य में मन लगावे [illegible] मंत्र जप
ना ईश्वर की कृपा से सब आनंद [illegible] अन्य जन्म में धनदान धर्मात्मा ब्राह्मण हो सत्य देव का ध्यान कर मोक्ष का पात्र बने ॥ ~ ॥

[illegible] ॥ [illegible] नृपद्वाराच्च नाशयः ॥ पुत्रपत्नी सुमित्रैश्च मैत्रो प्यतिदिने दिने ॥ रंडसोदानि भीति मु-
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ मित्रोक्त [illegible] वाधुवानो [illegible] ॥ कु-
[illegible] ॥ [illegible] विदेशगमन भवेत् ॥ [illegible] ॥ [illegible] शत्रुलाभ्यूत मी-
[illegible] ॥ मुक्तं सुंदरी [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] विबल
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ निसूरी नृपनंदनो कुमति [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] विनिश्यति ॥ [illegible] ॥ न-
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] नित्य शः ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ पंचमे [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] महानिशि ॥ सर्वसौख्य समृद्धिश्च [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ पुत्रे मंगलगानंच भविष्यति सुखप्रदा ॥ [illegible] शिशु-
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] विशत्पावधितः ॥ [illegible] वायते विविधोत्सवं ॥ लाभ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] मध्यगा ॥ [illegible] वृद्धि [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ दिव्यस्थान मनोरम्यं प्राप्यते सुखता भवि ॥ [illegible] राम
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] संशयः ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ व्ययेच [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ नानाकार्य [illegible] मंगलगानि मंदिरे ॥ पत्नीकष्टान्निनाभय कुक्षिपीडाभयप्रदा ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ईश्वराराधने [illegible] मध्यमा ॥ कार्यवृद्धि विशेषता ॥

भाग्योदय सुयत्नतः ॥ इडुवेदगतेवर्षे [illegible] ॥ [illegible] भाग्यस्य परमोदयं ॥ नानाकार्यप्रबंधश्च राजतेसुखसंपदा ॥ [illegible]
सं. [illegible] ॥ लाभंचविविधानित्यं नृपद्वारविशांतरे ॥ [illegible] दंपत्योर्भवति सदा ॥ [illegible] ॥ सुखंग-
[illegible] विस्तृतानात्र संशयः ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] सुभक्ति
फ. [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] भजनानंद सर्वदा ॥ [illegible] ॥ [illegible] शांतये-
१२ नः ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ~ ॥ ~ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ~ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] कुले ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ रामेणाद्वकी किंचा पंचतत्व विलीयते ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ मनेच्छा सर्व प्राप्यते नित्यं सौख्य समागमः ॥ भाषा ~ ॥ [illegible] अधिकार
[partly illegible] राजमाने ॥ [illegible]
[partly illegible] देराजद्वार में धनमिले [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] राम
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सर्वसंदेशमानेन [illegible] नितिष्टिनं ॥ पितृणाक्य भपत्स्यंते कठोरमनानिश्चितः ॥ कालानुसारविद्यारियंत्री पधिरनः सदा ॥ विनीतो प्राज्ञ शांतश्च दारापुत्रस
मायुतः ॥ [illegible] मसन्न सुखकोमले ॥ मान्विको राजसो चैवनामसंवृत्तिसंयुतः ॥ नकाश्चिद्बाधते नापं नमतिके विचक्षणः ॥ ज्ञानजो च धना-
[illegible] ॥ धनसमानपाने च बुद्धवे सुखवर्द्धनः ॥ नृपानुकंपया [illegible] सुखनसुखं ॥ सर्वसंपत्समायुक्तो पुण्यकर्मे या मोदिना ॥ कार्यो
[illegible] विकारिभिः ॥ [illegible] क्लिश्यते पापकर्मणा ॥ आयुरक्षा [illegible] हृष्टः ॥ प्राणाश्रितं सुपत्नेन [illegible] सुखम-
श्नुते ॥ सुसंपन्नस्तु [illegible] प्रियभाषणः ॥ पूर्वे धनादिकं [illegible] समन्वितः ॥ [illegible] जनैर्जनः ॥ [illegible] धनधान्यप्रदाना
[illegible] ॥ [illegible] सुतदारादि चिंतयेत् ॥ [illegible] पत्नी [illegible] भजायते ॥ [illegible] सर्वविघ्नावशाभने ॥ द्विज [illegible]
[illegible] समन्वितः ॥ पापशोतिनकौ तस्या क्लिश्यते विविधैरपि ॥ पूर्वपापानुसारेण [illegible] विचिंतनं ॥ जन्म [illegible] पीडिते ॥ [illegible]
[illegible] नाशिनश्यति ॥ [illegible] समारभ्य [illegible] ॥ [illegible] भाविनो भयं ॥ [illegible] मृत्युमवाप्नुयात् ॥ द्वितीया जन्म [illegible]
[illegible] ईश्वरकृपया तदा ॥ [illegible] भाविनश्यति ॥ [illegible] ॥ [illegible] मेधीती कीडनेवि
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] स्वयंच महतो भवेत ॥ [illegible] नित्यं [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] प्रकाशितः ॥ [illegible] ॥ [illegible] वृद्धि दिनेदिने ॥ लाभं [illegible] नित्यं भोगं [illegible] ॥ त्र
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] प्रजायते [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ विदेशागमनं [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] धनलाभस्ततो भवि ॥ [illegible] कार्याणि सिद्धति ॥ शुभकार्ये व्ययो नित्यं [illegible] ॥ मानकांत राम
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] सदा ॥ इत्थ
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] वृद्धिर्महोत्सवं ॥ ८

शरीरकष्टसंपन्नो चित्तचिंतापरीयणो ॥ औषधिरत्नमंत्रेण सर्वकष्टं विनश्यति ॥ विवाहादिमहोत्साहो सुखी [illegible] ॥ चंद्रवंद [illegible]
[illegible] च कामतः ॥ नित्यं चिंतातुरो भूयात् [illegible] शोकसागरे ॥ [illegible] महादान [illegible] ॥ [illegible] सम्पदा ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] सदा ॥ [illegible] मंगलविविधानि ॥ [illegible] सर्वकार्यं [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] महीतले ॥ [illegible] ॥ नानाकार्येषु [illegible] सर्वदा ॥ [illegible] नित्यं सर्वथा
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] शुभकार्ये व्ययो नित्य
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] नित्यं [illegible] सर्वदा ॥ [illegible] ॥ [illegible] नित्य
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ भाषा- ॥ [illegible] ॥ [illegible] औषधि आदि
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] राम
[illegible] पावनोईश्वरकी-
[illegible] ईश्वरकी कृपा से पुण्य
[illegible] पावे ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

अस्यथो॥ विचारेण सुंदरं [illegible] मतिः॥ ईश्वरभक्तिभावेन नृपद्वारे [illegible] नागमः॥ तीर्थयात्राजपं पुण्यं कारये [illegible] तत्परः॥ तेन सर्वे सुखं लोके चिरं
[illegible] भाग्यात॥ [illegible] सर्वं [illegible] भवेत्॥ माननीयमतिश्चापि [illegible] पूजितः॥ [illegible] निवर्द्धनं॥
भाग्यमूले सुखं नित्यं संपदां [illegible]॥ प्रजानुभोगवृद्धिश्च भूमिलाभो विशेषतः॥ केचिज्जीव [illegible] भवेत्॥ [illegible] पुत्रपौत्र
[illegible] विशेषतः॥ ऐश्वर्य [illegible]॥ सन्माननं [illegible]॥ साधुसेवा [illegible] ख्यातिः [illegible]॥ [illegible]
मनने पुण्यवृद्धि भवेत्॥ शरीरे [illegible] भयं भवेत्॥ सुपुण्यं [illegible] नित्यं [illegible] दिने दिने॥ [illegible]॥ [illegible] विना
विनाशार्थं प्रायश्चित्तं सुखं भवेत्॥ [illegible]॥ [illegible] भूमी [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ धनदानादिना नित्यं यशो [illegible] विवर्द्धनं॥ [illegible] भाग्यं [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible] गृहे॥ [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible] विशेषतः॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible] मतिः॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible] धनसंपत्सुखं [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]॥ रसनेत्र राम
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ नयेनो [illegible] नित्यं [illegible]॥ धनलाभ [illegible] पुण्य [illegible]॥ [illegible] लोके कामदेवसम-
प्रभा॥ ९॥ प्रायश्चित्तकृते पापं सर्वकार्याणि सिद्ध्यति॥ ९॥ शत्रुनाशं तथा नित्यं सर्वोपद्रवनाशनं॥ ९॥ [illegible] प्राप्यते पूर्णवैभवः॥

मु.सं.
भा.कु.
२६

चेद्यदि [illegible] प्रीती जायते सुखवर्द्धनं॥ [illegible] देवपुण्यं [illegible] तथा॥ मासे वर्षे सुखं नित्यं [illegible] पुण्यभाजनः॥ [illegible]
[illegible]॥ निजकमातुमरणं लाभं च विविधं महान्॥ पुत्रकन्या [illegible] भवेत्॥ [illegible] पूजितं [illegible]
[illegible] भयप्रदा॥ पुनश्च सुखदा पुण्ये मासे वर्षे सुमंगलं॥ [illegible] शरीरे दारुणं भयं॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible] पुण्येन [illegible]॥ [illegible] नित्यं भाग्यं च महतो भयात्॥ [illegible] पूजिता॥ [illegible]
[illegible] चिंतनं॥ [illegible]॥ [illegible] नित्यं [illegible] विविधं महान्॥ [illegible] पुनश्च महतो भयं॥ नरपंचाब्द
[illegible] मृत्युभयं [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible] सर्वकार्याणि सिद्ध्यति॥ [illegible] मृत्युभयं [illegible]॥ [illegible]
[illegible] पुत्रपौत्रधनान्वयः॥ [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible] जन्मनि जन्मनि॥ सर्वपापविमुच्यंते [illegible]॥ [illegible] सर्वे प्राप्यते परमं पदं॥ भाषा ९॥ इस योग के विचार से
यह जन सुन्दर और चपल होता है ईश्वरीय भक्ति करने पर राज द्वार से धन का आगमन हुई [illegible] पुण्य आदि [illegible] संसार में सब सुख पावेगा
[illegible] सुख भोगी [illegible] मान्य [illegible] पुत्र [illegible]
[illegible] पुत्र पौत्रादि [illegible] अधिक [illegible] लाभ [illegible]
[illegible] पुत्र [illegible] शरीर [illegible] करने से अपने कुल में [illegible]
[illegible] पूर्व जन्म में यह जन [illegible] निर्धन [illegible] इस को [illegible] नित्य [illegible] राम
[illegible] धनवान [illegible] पुत्र [illegible] इस जन्म में [illegible] इस को
[illegible] पुण्य [illegible]
[illegible] पुण्य मार्ग में तत्पर [illegible] पाप [illegible] राजयोग पावे॥

मं.
फ.
९

मनुष्याणाद्रुपचारान्न: मयास्ने यह्नवागता ॥ नातमातमहामोदं मफलं मर्वदैभुवाः ॥ यथादेहमवद्वैन धनसमुत्थसृद्धिमान् ॥ किंचिहानादिमेत्रेण भगवच्छान्ति
मीवृतः ॥ अथ पामृनभतिशय संपदा संचयां भस्यन ॥ सुकार्यं [illegible] पोषानि वित्तभुवि स्सुखभद्रा ॥ पर्वपापकृतं विघ्नं हानि चिंताकृतोषिता ॥ मनोहर [illegible]
[illegible] भोग अतिदुःखिता ॥ विवादकलहमोहा भार्यापितृ [illegible] ॥ नरस्मात्सुवमयुत्तेन दानधर्ममतिस्त्यदन ॥ भाल्वा भक्तितानि ने [illegible]
[illegible] पुरुषवृद्धिश्च सर्वदा ॥ धनेच्छापार्जितातेन मानुनी रामकृत्ननि: ॥ [illegible] नित्यं मुखं मयेन भूतले ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] मादत [illegible] ॥ [illegible] लोके नरपुत्रशुभचिंतकः ॥ [illegible] भाग्यस्य परमोदयं ॥ [illegible]
[illegible] ॥ वापीकूपतडागादा मांतिका [illegible] ॥ [illegible] पवित्रीकृततनं ॥ [illegible] सुखनित्यं भूतक्रापा [illegible] ॥ नेत्र [illegible]
[illegible] विचिन्त्यनं ॥ [illegible] ॥ [illegible] दानादि सुखवर्द्धनं ॥ चतुर्थ [illegible] विचारभमनोहरः ॥ पतन [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] लाभतुलागनः ॥ मंगलनाथपतेगेहा श्रेयोमान सुमृतान: ॥ षष्ठम वाहवर्षे शिशुका संगमे [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ विद्यां [illegible] पत्नीयोगा य मंगलं ॥ नंवाब्दे द्वादशैवर्षे विद्यालाभसुखपद्धन ॥ सर्वसौख्य [illegible]
मि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] मारभ्य यावत्षोडशवत्सरे ॥ [illegible] नित्यं हृष्यते [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ मुनिस्यभगतवषं यावद्विंशतिवत्सरे ॥ [illegible] द्रव्यलाभदिने दिने ॥ शरीरे जायते [illegible] ज्वरो [illegible] पीडितं
॥ [illegible] ॥ दानमंत्रेण पुण्येन महेशभक्तिभावतः ॥ [illegible] सदा ॥ व्ययदा [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] भूमि [illegible] धनधान्यं मुक्तानि [illegible] ॥ [illegible] पादलाभ [illegible] विंशति ॥
[illegible] नित्यनूतनं ॥ [illegible] नित्य [illegible] ॥ देवपरत्यान्नवतस्य व्यय [illegible] निर्मला ॥ दम्पत्यो [illegible] पुनः ॥ राम
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] नृपद्वारादितामहत ॥ उद्वाहादिनमहोत्साहा [illegible] पुमान
[illegible] नित्यं मनेच्छा [illegible] ॥ [illegible] ॥ ईश्वराराधनं [illegible] विलीयते च शत्रवः ॥ इत्युग्रमगते वर्षे [illegible]
[illegible] ॥ विवाहा मंगल कार्यं [illegible] ॥ [illegible] महादान [illegible] ॥ भूमिशशोविशयेण विजयाभिमानित्यशः ॥ लाभश्चान्य [illegible]

[illegible] बहुभिर्जनैः ॥ चतुर्विंशतिवर्षाणि [illegible] ॥ [illegible] सुखामनवति मेदिनी ॥ [illegible]
शि ॥ [illegible] यथाम्भा [illegible] ॥ [illegible] चिंतनं ॥ [illegible] नित्यं [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] सर्वदा ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] निवारणं ॥ [illegible] चत्वारिंशवर्षाणि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] पूर्णपरमोदयंगति ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ पुत्र-
[illegible] जयोभवः ॥ [illegible] भूमि धनेशाप्य [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ पंचतुल्य [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] सर्वदा ॥ भाषा-
[illegible] उत्पन्न [illegible] मंगलदायक [illegible] माता [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ २ ॥

भृ.कै. सर्वेषु देशमानेन योगोयं लाभदो भवः ॥ भाग्यैश्वर्यसंयुक्तो कीर्तिविख्यातभूतले ॥ विप्रदेवार्चने प्रीती रिपवो दासवत्स्थले ॥ नृपद्वारगजानामिंद्र तीर्थदेवाल-
येरति ॥ मातृपितादिवित्तश्च लभ्यते नात्र संशयः ॥ स्वार्जितधनपानेषु नानाभोगसमन्विते ॥ कृतनेभरतानित्यं निश्चितं तत्फलम्भवेत् ॥ मृष्टान्नरूपसंपन्नो मंगल
कु.फ. च मनोहरा ॥ विख्यातश्च धराभागः स्वजातिमानवर्द्धनः ॥ ततजं पीडयंत भार्या [illegible] सुखलभेत ॥ आलस्यं जायते देहे भूषणवर्द्धितगृहे ॥ गजद्वारनि-
मान्यश्च [illegible] पीडिता ॥ गुरुदेवासदा भक्तः सर्ववस्तु भलभ्यते ॥ इद्दरामगते वर्षे भाग्यवृद्धि दिने दिने ॥ भाग्यस्थिते [illegible] पाप दानमवसुभक्तितः ॥ मंत्रगु-
५५८ रुदाकाम्यः मनश्चातन पूजिते ॥ भयदं मानसीचिंता नसुखं लभते क्वचि ॥ पीडितु बहु पापेण यत्कीतन पर्वजन्मदि ॥ नारीपुण्यात्मकोश्च नैवपुण्यं धनी सुखी ॥ [illegible]
पुत्रकोरितनूनं कानिनिताक्लीपुषी ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन रक्षितं तु सुखसाधने ॥ सर्वावस्था सुखानित्यं विस्तृतो सर्वेभवाः ॥ मध्ये पुत्रतथापत्ने भ्राता बुद्धिधनागु-
सुभिश्च परमं नीती मानतो भवत्यनेः ॥ पूर्णाप्रस्तु सम पत्त चाल्य मृत्युर्विनप्रयाति ॥ भाग्यस्य महानभयान्तएं भार्याधनी भवेत ॥ मध्यमे क्षितियत्नेषु [illegible] प्रयत्ना
[illegible] रसुभूत दंत रोग नश्यते ॥ मातासिता [illegible] काष्ठ शांतिः सुखान्वितः ॥ न वर्षे पंच वर्षेषु जातयोग सर्वोत्सवे ॥ मोदकाद्यविज्ञानीया दानपुण्यसमानतः
पूरणभासमुत्पन्नो [illegible] ॥ दानमंत्रपुण्यस्य तथा शांतिस्तु सर्वदा ॥ क्रीडते विविधे योनित्यं नातमानसुखलभेत ॥ सार्द्धे नवदर्षे तु पंचमे भाय
स्थानमः ॥ विद्याभ्यासरतो किंचित्क्रीडाप्रवक्तृस्वरः ॥ तानलाभभविष्यति विवाह पंचवर्षिका ॥ सैंव भामगलं भाग्यः पितुः धर्मतत्परो ॥ रत्नकाष्ठतथा नित्य मानपु-
एषगुणमदा ॥ दशमैकादशे वर्षे नात्राभव्य समेवत ॥ [illegible] स्वसेनानित्यं शिशुगणसंगमरतिः ॥ आरभेद्वादशे वर्षे तथा पंचदशांतरे ॥ कामेच्छा मवलापादि पत्नी
भगमुश्चिनन ॥ स्नानाश्वलताभूमी रूपयौवनमाहिता ॥ विवाहवृद्धिविशुद्धय वर्द्धयंति समंततः ॥ भाग्यस्थिते सुपुण्यस्य सर्वत्र सुखभूतले ॥ द्रव्यमार्गविशेषपा-
मनश्च [illegible] पूजिता ॥ मानवंशप्रद्वे वर्षे व्यासनंवंचमध्यगो ॥ देवाविभुखमभयत मानाकृति सुमंगल ॥ [illegible] सुभगनामानः द्रव्यलाभर्दिने दिने ॥ भ्यस्न
मन्त्रीगाम्पः ॥ रांच मंगल्यचितनं ॥ चकानिरोनिविशाद्वे पचान शांतिकनया ॥ भाग्यवृद्धिभवन्नित्यं दशाश्च पत्नकारीतदा ॥ सर्वसौख्य सुपवेन धनदारात्मजादयः रण
पंचवर्णापवादश्च किंभवन्नानपवत ॥ पूर्वपापवशीर्येन दुःखशोकमयप्रदा ॥ भाग्यस्थितस्सुपुण्यस्य इन्द्राभाग्नि भवत ॥ सर्वसौख्यान्वितो गेहे मनोवांछित
त्पूजिता ॥ रत्नपिंगादिवर्षाणि व्यामवन्तिन चान्तरे ॥ नानालाभव्यघानित्यं प्रमोदमसीतले ॥ पुत्रस्त्रीवस्त्रकाये दानमंत्रसुलभदा ॥ मंगलं विविधोक्ता
ब्धः सुखसाधननित्यशः ॥ कश्चिन्नित्यपरमीती सुपात्रलाभवोभवः ॥ इद्दरामगते वर्षे षट्पंचवत्सरान्तरे ॥ नानाकाम्यावसिद्धिर्नेम्भवते बहु विस्तरात् ॥ ५ । ५ ॥

भानेन महतां विशेषा भ्रातावृद्धिमहोत्सवे ॥ उद्वाहो मंगलं कार्य प्रीतिसाधनमानति ॥ सर्वदासन्न प्रीतिनित्यं सुकार्येषु प्रपीतया ॥ कुलकीर्तिसभायातो मा-
भृ.फ. नसंगतिस्वस्थसत्तमा ॥ देवदर्शनलाभीता दानधर्मादितत्पर ॥ ईश्वरभक्तिभावेन श्रद्दतमवसदा ॥ आत्मवान्नि [illegible] मायंतं शोक विप्रहो ॥ पुलिराशिमु
कु.फ. तत्वस्य यावदष्टागतेरवि ॥ तावदंतमहाचिंता रिपुनाम्य धनक्षय ॥ मनोवा [illegible] मतामि सर्वकार्य समजितैः ॥ सर्व [illegible] सर्वशत्रुविनाशनं ॥ मासेकवर्ष-
ज्ञानित्य राम चत्वारिवत्सरे ॥ चतुर्दशगते वर्षे पितृजन्मप्रतागिन ॥ [illegible] प्रकुष्ठ सुकामत ॥ [illegible] सुकाष्ठ दिनश्यति ॥ शन्य
५६० आस सुसंनित्यं मादनपद्मदिमरातु ॥ लाभश्च विविध योनित्यं सततम्मन्तारसान्मकः ॥ धनसुतालमयानुच सर्वपीनविश्कन ॥ [illegible] पूजितभव [illegible] नूतनाइव ॥ दा
नप्रस्यरतम्श्चापि इह ध्यानतत्परो ॥ सभूमिवनुतवाश्व देवागारसदाभाति ॥ [illegible] ॥ मभीवानअनोगृहे सर्वत्वा सुमपूजित ॥ पापस्थ
दरासद्दतवालवाधामपीडित ॥ पुनःकष्टविनश्यति भक्तानंदनित्यशः ॥ भाग्यवृद्धिस्तुपुण्यस्य भयानदनगात्मको ॥ [illegible] गतभाजुः निभृतपवंतके ॥ भाग्यवृद्धि
मानने शास्त्रज्ञो वोधात भवेत ॥ पुण्यमस्य मन्त्वगणस्तु कुलं पुमयागतिः ॥ [illegible] तथैवायम द्विजन्मिन ॥ सर्वसौख्याधिकारीच भाग्यतः परमागति-
नानननमालाविशेषपरंतत्वविविधकः ॥ भाषा ॥ नवमहीके इसमें बारसे [illegible] बारे ग्रहहे इनके प्रभावसे धनके भाग एश्वर्यादिसे युक्त हो कीर्ति प्रतिष्ठापु-
ब्देवता ब्राह्मणोंके पूजनमें प्रीति करे तिसतसे शत्रु भीदासका समान रहे राजद्वारसे धन पावे तीर्थ और देवस्थानोंमें प्रीति हो माताको भेवासे इसका कियाहवा धन पावे
पुनः अपनेभवं धर्मभाव धनसचारी [illegible] अनेक भोगोंसे युक्त हो नित्यपाति [illegible] मैं तत्पर रहने में निश्चय सुखपावसदर [illegible] रूप मयुक्त बलवान् पी-
मनारतर हा [illegible] पहरे अपनीमातामें मान्यता पावे [illegible] शरीर में [illegible] हो [illegible] धनं चासीसे परका मरयवन्द राजद्वारमें-
माथिको मान्यता पावे दानरोगसे भयहोगुरु देवको भक्ति होनेसे सब [illegible] भक्ति पूर्वक पूर्व पापका पश्चिमस्कार नेपरसव सुख भाग्य हो पूर्वजन्ममें [illegible]
श्रीकुल [illegible] विचार [illegible] सन्मान नहो कियमध्यमे माहि राम
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ५ ॥

बृ॰ सं॰ औ॰

मध्यभागी तुरीयांके पर [illegible] ॥ पुत्रं [illegible] विविधे [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] नवपुरी धनी [illegible] ॥ दानधर्म [illegible] तस्य शांतिः [illegible] ॥ [illegible] ॥ नानाकार्य [illegible]

[illegible] ॥ सौजन्य [illegible] भूरि [illegible] ॥ संपदा [illegible] ॥ [illegible] ॥ भूमि [illegible] नूतनमंदिर [illegible]

॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] सुतं [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ दशनी [illegible] सुंदर [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ भोगा [illegible] नित्य [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] मंगल ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] धर्ममार्ग मतिस्थित ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] समागमः [illegible] -

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ राम

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] विनाशने ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] -

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] महत ॥ ५ ॥ ५ ॥ सोमवन्हि मितिवर्षे वाण —

बृ॰ सं॰ औ॰

सचान्तरांतरा ॥ [illegible] भजनानंदं सर्वदा ॥ दानधर्मे [illegible] नित्यं [illegible] सर्वे विभवा ॥ [illegible] मान वर्द्धनं ॥ [illegible]

[illegible] विवाह [illegible] ॥ देवदर्शन [illegible] सदा ॥ [illegible] ॥ नानाकार्य [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] सुखसंपदा ॥ [illegible] नित्यं [illegible] ॥ व्यापारे [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

४२४ [illegible] ॥ [illegible] नित्यं [illegible] निरंतर ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ -

[illegible] नित्यं [illegible] ॥ [illegible] सर्वत्र विजयप्रदा ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] पुण्य [illegible] महत ॥ कीर्ति [illegible] ॥ [illegible] महत ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] मोदित पुण्यभाजनः ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ भाषा ५ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] राम

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

भृ सं-
कै-च
४२३

एत्पोपिथरावातः तन्यतोनुविनिंकौ॥ मंगलविविष्णोर्वे नागनातान्यमोदिता॥ भाग्य वृद्धि स्तुकुलेवा मातेवर्षे महत्सुखं॥ यथादेहनवर्द्धेतः धनसंपत्स
मृद्धिमान॥ प्रकला सतातचविद्वधु माधुरगेसगमेरतिः॥ मित्राणां मातुलपुत्रः हरपतेतुलभाजिनिः॥ बालवाचामनोहरा सुषावस्पुरति चक्र॥ कलकान्तीदितं
नेनगुनदानिभयप्रथा॥ कदाचि हानिवाक्य तस्य चौरभयंमहत्॥ विवापि शत्रुवाधाति सकलेचविरोधिता॥ तस्मात्तत्स्वकलेन रचितोसुखलाभदे॥ चनेनमहु-
विशेषशत्रुरिमद्दीनत्वे॥ व्यापारासिद्धि चानित्य नृपाद्यास्थानमयः॥ साधुसेवानुरक्तायां श्रद्धाभक्तिसमायुतः॥ पन्चवानादितोनित्यं नर्यवेन्सुखं बहुना॥ सर्वकष्टविनि-
वृत्तिर्गर्वशत्रुभोगतः॥ निक्ष्य सुखदोनित्यं पानबोलिभृशाश्रिता॥ तुलाप्रवरमायुक्ते पूर्णयोगो धनीभवः॥ स्वामभूमिधनप्राप्तः॥ एतद्योगगृहे स्थितः॥ मध्यमा-
महोत्साहो मंगलगेह भाग्यतः॥ तातमात महोत्साहो मपितृश्च नृतोधिका॥ तुलराशिगतुपकाम्य॥ यावच्चक्रगतेरविः॥ तावदतमेहत्कष्टं भतका चापि विक्ल्वः॥ मन
शांतिस्तुयत्नेनशत्रुवृद्धिर्दिनेदिने॥ द्वितिवर्षान्तरेकाल्पः सुखदासप्तमग्रहे॥ दक्षोत्तविनिबोध पौत्रगृनासंरक्षायः॥ कार्यसन्नाबुदानेन मनःसौख्यमवाप्यते॥ तान
विंतासमाप्रज्ञा पौत्रानाभसुखस्य॥ मात्रकासनमसुक्ता उत्सन्नमुसमस्य॥ स्तुर्थपचमयसे नागधनाधिकमात॥ लाभवविविधोनानःगृहमंगलचचिंत॥ काल
श्रीप्राणोनित्यं विद्याभमहोत्सव॥ घृणावातेनपौरुष्ंगो पलमाच महद्वयं॥ ~ ॥ मगलंकामुयोगापि सवर्धेन प्रशासितः॥ महद्यत्तनुधात्रि राज्येनम्ना
मनुत्तमुम॥ ~॥ दानमंत्रेनसुपुण्येण सर्वलोक्य समागमः॥ सर्ववर्षसमारभ्य ध्यानदशेन्द्र द्वादश॥ भोगाभवेभयोनित्यं वहतीपनिरोधतन॥ सिध्यते
तन कार्येषु कुशलोमानवृहनः॥ सर्ववार्षसमाप्ते तुलपिद्व सुपूजिनान॥ उत्साहनायतेतस्य मोदवृद्धिर्दिनेदिने॥ भावनात्वादकृत्यञ्च शिशुरणसंगमेरति॥ कु-
लपावृतुत्वनित्यं कुलगत्ककोशसर्वदा॥ ईश्वरभक्तिभावेण मनच्छा सव पूजिता॥ सुराभावाब्दमासस्य अशेषदशसुवत्सरे॥ स्वकुलमोधमान्तहि तन्यमक शिशु॥
कवरधनधुनभोतिवानावितृतिमपरः॥ पर्वीभोगावित्नालीन वाञ्छन्कावर्जकीतं॥ मित्रोगाप्तंसत्येनमीतो नूतनं मोदनित्यशः॥ लाभवविविधोकाव्य तापनेतवदर्षि
वः॥ जनिवमानधावृद्धि चान्द्रसिंपान्वमध्यमा॥ मंगलविवि धोविहे सुपुत्रप्रसवद्भवः॥ विवाहमनमंत्रे इहसांत्रसंपात्रमदा॥ ~ ॥ नूतनमहनाविप्रलाभकृत्यवि- राम
वितरं॥ ~॥ चेदविंशतगतेवर्षे ज्वालप्रदानधान्तरे॥ लाभकाव्यविशेषा मनाकृष्णिसुखमदा॥ सुपवधसुयन्तनसर्वत्र सुखमेविनी॥ दारिकोड्वकंसार्मःप-
वीपिशभूषणा॥ जीवपिदानमंत्रेण पुनः शांतिस्सुखागमः॥ सप्तसीरिनुकासंच नापदृष्टारंगामयेत्॥ अरण्यशांतिः मशोनित्यं भवत्यानंदसर्वदा॥ मागलंविवि
धोनित्यं मोदनेवञ्जनत्परः॥ नवनवंचविशाब्दे वेद चान्द्रितधान्तरे॥ अव्ययामव्ययोभावि उज्ञान दिभिञ्चलम्॥ सर्वमेनित्योश्रीमम पशसाधन नित्यशः॥ ~॥

भृ स-
कै-च
४८

पुत्रोभितंकुलंतेन पूज्यंचाति मनोहरा॥ भार्यांतेतु विवादंच जायते एववंधुभिः॥ सभारामतडागेषु विविरन्तौचिमोहिता॥ अभ्यागत द्विजं पूज्यतीर्थे मंदा
दिसेवनं॥ प्रारविंशतिचर्षारिा व्योम चत्वारिमध्यमा॥ चित्तचिंतातराभूय सुदेहाकष्टनाथते॥ देव्यापाठेननश्यंति दानमंत्र सुखप्रदा॥ भाग्यच महनोभूय
इतनेपुण्यसंपदा॥ त्वचलेविपरन्याहि पुलमतास्त्रिजायते॥ नेत्रवेदगतेवर्षे पौत्रजन्मसुयत्नतः॥ सतवृद्धिमहोत्साहो शस्तवर्षे धनागमः॥ राजद्वारेजय-
माप्यनृपात्मानुमहत्सुखं॥ रोगशोकप्रवर्तंते किंचित्कालेविनश्यति॥ दानपुण्याहिनानित्यं मनच्छा सुवपूजिता॥ आनंद मंगलाचारं विवाहादि महोत्सवं॥
ध्यानधारणावाधिवत्ससर्वेच्छासुखपूजिता॥ आनंदकोशकामेच भन्त्यचाकर्मनुसारतः॥ वत्सनुचाणगानुवमुमला भारणहरादशा॥ व्यालर्वचाब्दमारभ्य जायते
कविनहो॥ द्रव्यदत्सुतनुन्यरणश्रेयस्कारीसदा॥ नित्यचिंताविनश्यंतिमोदनेभक्तिभावतः॥ अतः परिमुखसंये यहचग्राब्द मध्यमा॥ गमनागमनपेन्नित्यं ज्ञानादि मति
श्रपरः॥ सकीर्तनेतोयतभीती सवदासुखसंपदा॥ श्याम सप्ताब्दोविवुनागव्यालब्दनोवने॥ आयुवृद्धिः सुपुण्येन सर्वेश्वमस्त रोदभा॥ दुश्वर हाम पाहुतंसर्वे च्छानित्य
पूजितैः॥ आनन्दमन्त्यंवा सुमार्लिधनीज्ल॥ नृपवदानतिभुभी उप्रतेजो महायशाः॥ भाषा॥ ~॥ नीचास्वक इस योग में जन्म भया तिससे घर में अनेक आनंद मंगल हो
पिता माता सुख पावें श्रेष्ठ पुण्य के प्रभाव से भाग्य की वृद्धि हो और हर महीने वर्षों में अत्यंत सुख पावे ज़ि ति २ शरीर बढ़े धन संपदा दिका सुख भोगे बड़े २ सत्पुरुष पंडि-
त साधु महात्मा की कृपा से ज्ञान हो मित्रों से आनंद पावे सुंदर स्त्री जननी पोद रख काम पीड़ा से मन में उत्साह हो युवा अवस्था में निश्चयपनि का प्रीति हो गए कुछ गुप्त क
लेश से भय हो किसी २ समय दारुण काम पावे चोरसे विशेष भय हो मित्र शत्रुता करें और कुटुंब से विरोध हो तिसी कारण सब प्रकार सुख साधना को यत्न से ला
करें तो विशेष मान्यता पावें और अत्यंत यश सहित व्यापार कर्म सिद्धि दायक हो और राजद्वार से धन प्राप्त हो श्रद्धा भक्ति से साधुजनों की सेवा करे मंत्र दानादि सेव
न करे तो सब कष्टों का नाश हो मान कीर्ति यश को पावे धन उत्साह आदि सब का सुख बढ़े विना यत्न अनेक प्रकार के क्लेश हो पूर्व जन्म में यह जन विप्र कुल में जन्म लेकर
श्रम से प्राप्त धन होने अनेक आनंद भोग करके राज कीर्ति यों से अधिक प्रीती करें ईश्वर का भजन करता था आनंद में अपना समय बिताना एक समय लोभवश दोक राम
तिसे काहन नेसंबंधी राजा के पुत्र को भोजन में विष देदिया उससे उसकी मृत्यु हुई तिस इस जन्म में पाप का भागी हुआ अनेक दुःख पावे इनकी शांति को सर्पोपन्न
पि का चंदन सोराज उत्व की मूर्ति बनाय पेपालन कि विधान से करन पर सर्व पत्र कारति कि उसे का दान करे गायत्री का जाप करे और नित्य दान जाप में मन लगावे -
तो सब पापका नाश हो मनोकामना पूर्ण होवें तिस ता सब प्रकार के सुख मासहु क्लेश नि मिश्रफल ज्ञानी से इत धन धान्य पवन कलत्र मनकी समान पाम शोभा पावे॥

सर्वसंपद्वहमानेन योगोयं सुखवर्द्धनः॥ धनधान्यादिसंपन्नो भवत्यत्र न संशयः॥ सर्वसौख्यान्वितो लोके महोत्साहं दिने दिने॥ मध्याह्ने सुरैश्वर्यः भूपवत्कभवेत्सदा ॥
सन्मानं च सदा नित्यं सुजनैर्मान्यवर्द्धनम्॥ [illegible] सुखैः पुत्रपौत्रप्रियः॥ भ्रातानिकागतकं सर्वसिद्धिं प्रकुर्वते॥ इत्येवंविधं जन्मफलं वर्णितम्॥ महर्षि भृगुणो
नरो शाप्यते सर्वदा॥ पूर्वजन्मनि धर्मकर्मविनिर्मुक्तः॥ पुनः धर्मगतः पूर्व कर्तृत्वधर्मं प्रयाति॥ सर्व सौख्याधिकारेण पीडितः पूर्वपापतः॥ नक्षत्रं लभते
पूर्वे पापफलं पापकृत्॥ नागपुत्रात्मकेशेन पीडितं विविधं ततः॥ शोकार्तोचिंतने दीर्घैः विभ्रमो व्याकुलमनः॥ पापमृत्युं सुखं विभवं रत्नमंत्रादिविधिर्यथा॥
पीड्यते नु सदा सर्वदुःखं प्रपूजितो॥ श्रवणं दानं तु सर्वथा सर्वपापक्षयो महान्॥ पत्नी पुत्रादिमान्यश्च सर्वतः सुखभाजनः॥ मानेन महता नित्यं राज्ञानिवर्त्यतां
भवेत्॥ अत्यंतधनस्थानेभ्यः पूर्णसुखसमन्वितः॥ प्रथमा च ज्वरो व्याधिर्द्वितीयं च विश्वं चिंता॥ ५॥ चिंतनं चिंतान्वितो नित्यं नृपद्वारे धनं लभेत्॥ यामक्षेत्र
प्राप्ते विभवं च यथा सर्वं॥ कुटुंबं जायते नित्यं शतायुर्भवति नरः॥ ५॥ तृतीयान्वे भवेत्नित्यं मातृ पित्रे तु पोषणं च पितृ सर्व सदा सुखं भोगं लभेत्॥
बहुलक्ष्मी प्रसन्नः सदा गोपालादि मनस्ततः॥ चतुर्थं च मातृ च पालनं दिने दिने॥ नानाभावं विशेषेण मोदते भक्तिभावतः॥ नवसीडानवान्भवेत् प्राप्तेषु
भृगुणः॥ मानसं सर्वमयुक्तो भक्ति किंचित्प्रसिद्धि॥ [illegible] सर्वदा मन्दधीसुखम्॥ मंगल कार्य संतानो न्यूनं भवेत्स्वगृहे॥ [illegible] सर्वं
पत्नीपिनसंशयः॥ ५॥ संसारसुखं लभते बुद्धिदीर्घं दिने दिने॥ लघुकालप्रकटस्य विद्यास्तु भविष्यति॥ नरो दाक्षिणं शिशु सोभाग्यं सदा॥ वृद्धा च
मंगलं दिव्यं कुलकीर्तिप्रशंसितः॥ महर्षि भृगुणोक्तं च शाप्यते मानवं जनं॥ पंचमस्थानविरोधिनित्यं अथवा शुभं च सा॥ सप्तमे दशमे नित्यं हास्य
त्तिः॥ सुसंपन्ना च सुपुत्रश्च विद्याबुद्धिशुभान्विते॥ ज्वरादिपीडायुतो देहमध्ये भवन्ति च॥ दानधर्मे सुशीलनित्यं विरहेण सुखं नात॥ पतनस्य जन्मनि विवाद
पीडितः॥ सर्वसंपन्न मातृसुखा भाग्यवान् जनस्ततः॥ नानाविधशुभ संपत्तो सर्वसौभाग्यभोगितः॥ विद्यावृद्धि विशेषेण सुसंपन्नो यशस्वी॥ भाग्ये सर्वसुखं भवेत्
सत्पुत्रोऽभिजायते॥ मानवी विभवोन्नतः सर्वदा नरः सर्वदुःखः॥ नवमे केवलं सर्वदा नित्यं सर्वसुखं लभते॥ केतुश्च शांतिविधानं वेदेषु सुखं प्राप्यते धर्मस्य पति॥ सप
संपत्तो लाभं विविधं यदा॥ तेजस्वी सुरूपा पंचम भक्तमनुरक्त सदा॥ ईश्वरभक्ति भावेन मनुष्यो सर्वपूजितम्॥ साधुजनसंगमे प्रीतो देवता पूजने
मतिः॥ चिंता दारसुभोगाच्च मित्रत्वं वीतिराहुः॥ कार्यं च भूमौ भूत्वा पश्चात् जायते कुले॥ अतः परिसुखसंपन्नः शांतिसुपत्नत्वं॥ अग
स्य सुवित्तं भाग्यं च वृद्धिं दिने दिने॥ विश्राम भोगेन तु सर्वसौख्यं भवेत्॥ दशम्याम् सर्वतो नित्यं सुखं धनान्वितं॥ कुलान्वयं सर्वदा मंगलं सर्वतोभवः

स्नेहमेवयुतः चिंतातनये इच्छा सर्वप्रजिता॥ विवादादि सदा लाभो मानकीर्ति वृहत्यपि॥ मंगलं विविधं नित्यं कुलानेन प्रकाशिता॥ मानेन महतापि हो राजते सु
वंशपदा॥ शत्रुक्षयो महन्लाभं ययोऽपि वृद्धसाधितः॥ सर्वसौख्यगमोऽगृहे सुखचिंता विनश्यति॥ नेत्ररोगाद्भवेत्सदा किंचित्क्लेशं भवाधकः॥ शिशु
नैनं भवेत्तदा जनन्या सुख संतोषः॥ सुपात्रदानादि सर्वथा विजये प्रीत भावमानसा॥ सर्वशत्रुभयं याति निर्वाणं गुरुदर्शनः॥ गर्वाधिमान रो मान्यो सुप्रतिष्ठो यशस्वी से
नेषु परजनस्य सुहृत्त्वं मंगलं महदाततः॥ व्यापारे लाभ योनित्यं नृपद्वारे धनागमः॥ ग्रामपुत्रादयः सर्वे पापक्षयो नृपाधिपतेः॥ तावत्कालं च विकाल्यः पूर्णमा
नोऽभिवृद्धितः॥ येन मंत्रं प्रयोगेण सर्वव्यापं विनश्यति॥ अपमृत्युर्विनश्यति नित्यं सदा शुद्धिमहोत्सवः॥ लाभं च विविधं नित्यं सफलं जन्म भूतले॥ नृत्य-
गीतौ सर्वगर्वे शोभितेऽभङ्गविलासतः॥ १॥ दानधर्ममतिः स्याच्च तीर्थदेवादिदर्शनम्॥ स्वतुपंचमावर्षे तथा सत्यप्राप्तेऽपि भूपमान्यो विशेषेण—॥८
नयकामदर्शकः॥ सर्वमार्गविनिर्मुक्तो नीलमणी भावयेन्नरः॥ शमेनधर्मपौरुषेण नित्यं परब्रह्मनिश्चितः॥ सुपंचमं जन्मतो लोके वैरस्य परमेश्वरम्॥ व्योमसम्पु
न्निवर्षे सुनिगमनयापित्वा॥ गोदानाद्य सुवित्तश्च धनश्च निधनेवपुः॥ अन्यजन्मनि भविष्यन्ति पुत्रपुत्र्यो सर्वपूजिता॥ भाषा ५॥ सब प्रहों के योग से
यह शुभ बहुत योग है इस में जन्म लेने से यह जन धन धान्य आदि से युक्त रहे विशेष भाग्य का उदय हो सब सुख पावे शांति उत्साह बढे यह जन जन्म से
सुंदर वान् हो सत्य विद्या में मन लगावे श्रेष्ठ जनों में मान बढे मीठी वाणी बोलनेवाला सुन्दर शील वान् हो गाने बजाने में अधिक प्रीति करे पीछे से लाभ धन को लो
भारी घर की लोगों में सज्जनता बढे रूप नीति से युक्त हो कुछ मलिन रहे और हित रहित हो वह मनुष्य के वस्त्र आभूषण पावे धर्मात्मा हो कभी २ धर्म से विमुख हो
य सब सुखों का अधिकारी हो कर भी पूर्व पाप से पीडित रहे और जब तक उस की शांति का यत्न न करे पूर्ण सुख न पावे स्त्री पुत्र और आत्मीय का सुख भी न
प्राप्त दुःखे व्याकुल और शोकार्त अत्यन्त चिंता करे और विभ्रम से चिंताव्याकुल हो तथा परन्तु प्रायश्चित्त दान सेवादि से सब सुख पावे पूर्व जन्म में यह जन वैश्य था उस
के जीविका व्यापार कुटुंब बढ़ गया था तिस से धन बढ़े सुख नाना प्रकार जन धन कुटुंब को बाकी का उदय करके शिव का तथा और साधुन को मुख्य माना था तिस के मन
उपार्जित सो इस जन्म का भाग्य तिस की रात दिन सेवा वन्दना करे तब सम्पूर्ण सुख पावे जन्म सुख से भोगी तिस के सब धर्म के पुण्य से नित्य आनन्द से जीवन्त वरस आवश्य करे तब
आश्रय से उत्तम सुख समेत वन पावे तिस धर्म रत्न से चले तो पुण्य से सब सुख तो पूर्ण अवस्था भोगे मनुष्य सब इच्छा-
पूर्ण होनायें और उपवास प्रमाण से और आगे जन्म में सुंदर राज्य शरीर पावे पुण्य से सब अभिलाषा पूर्ण हो आशय सुख परम आनन्द मिले॥ ५१५॥ सप

बृ॰ ही॰
कुं॰ कु॰
५८७

[illegible] ॥ एवत्तु धर्मो नृनिश्च सर्वसंपत्समन्वितः ॥ नायश्चित्तं सुयत्नेन पापशांति श्च कारयेत् ॥ भाग्य वृद्धि ममत्वेण धने श्वपे-
न [illegible] ॥ [illegible] ॥ मान कीर्ति विशेषेण वर्द्धयंति दिने दिने ॥ बृहस्पत्यागमे गेहे [illegible] सुखाधितं ॥ पूर्व पाप
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] मंगलं ॥ [illegible] ॥ म
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] मंगल कार्य गृहे [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] मंगलं [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] सुयत्नतः ॥ [illegible] भवे-
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] गृहमंगलमेव च ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ मंगलं [illegible] ॥ [illegible] तथा-
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] धीमान् [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ मा-
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] हास्य [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ धन धान्यस्य वृद्धिश्च [illegible] ॥ [illegible] राम
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] -
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] भजनानंद सर्वदा ॥ ८

बृ॰ सं॰
कुं॰ फ॰
५८८

[illegible] ॥ [illegible] ॥ मंगलं च [illegible] ॥ [illegible] नित्यं दान धर्मादि
तत्परः ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] भक्ति संपन्ने
[illegible] दायिनी ॥ साधुसेवारतो नित्यं विनयं धर्मतत्परः ॥ [illegible] ॥ [illegible] विशेषेण गृहं चाति मनोहरं ॥ पु-
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] म-
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ नृपत्व
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ भाषा ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] राम
[illegible]
[illegible]
[illegible]

मप्तधोगे सखुत्पन्नो मे च मार्गी गुरुणान्वितः ॥ जन्मतो भाववाधा या अनसानेन वर्द्धनं ॥ नानलाभविशेषेण मंगलं गृहमापतः ॥ यथावद्ब्रह्मणे धनसं-
पन्नमूर्द्धिना ॥ भोगानुभवोनित्यं वर्द्धते नात्र संशयः ॥ [illegible] चिन्तितायवा सदा ॥ नानाभोग्या शुभलक्ष्म मानयोगे प्रयत्नतः ॥ तनुसुम-
राशौ दिपाके बुद्धचिंतनं ॥ कार्यसिद्धि विशेषेण मंगलविधि धान्यनं ॥ जन्मभूमित्यजोह्यन्यन्यत्र वसते गुरु ॥ व्यापारनिरत [illegible] सुखो कायक्लेशो ॥
५६ ह्यस्मिन्वाहनं प्राप्य मित्राणा मोक्षनं सुखं ॥ मनीषुवान्वितो भूप सबंधे स्वदारधशो ॥ पूर्वपापप्रभावेण पूर्णे वीर्य नसस्थिर ॥ चित्त चिंता विशेषेण बालुक काम
कर्मो ॥ दानमंत्र सपुण्यं च भगवद्भक्ति भाजनः ॥ श्रेयो बानं नाद्रिशारत मोदते नात्र संशयः ॥ धनधान्यादि सर्वाणि [illegible] मतो नात्र ॥ [illegible] नाना-
कार्यभवं धकैः ॥ [illegible] विराजते ॥ [illegible] नन्मभवनं ॥ [illegible] भोकाव्यं कामं सपाल ॥ नयने क्षिति [illegible]
वन्हिवदयथा क्रमः ॥ [illegible] सदा ॥ ज्वरो विरोमनपंडयः ॥ [illegible] पीडनं कायपावा-
कनेन श्रेयवृद्धिनिरंतर ॥ विविधा सौख्यानांनित्यं [illegible] ॥ [illegible] मान्त चिंता व सीयसी ॥ पुत्रमेव [illegible] नंद यथा बाधितनः ॥ भ
हवंभूषणवस्त्र प्राप्यते नानभुक्तमम ॥ विवारंभ [illegible] पठनादिश्च मोमनः ॥ मंगलं [illegible] गोपि सुखत्वी [illegible] ॥ दिवाको [illegible] चिंता
न्विनो भवेत् ॥ [illegible] शांतिस्तु [illegible] ॥ [illegible] ॥ पत्नी नानी सुखानित्यं मित्रश्च रमते सदा ॥ ९५ यौवन [illegible]
ललनानने ॥ मानि [illegible] कृत्यान्वितः ॥ विद्या [illegible] सुसम्पन्न [illegible] ॥ [illegible] मान कीर्तिमानिर्भि
[illegible] ॥ [illegible] सततपापकार्येषु [illegible] ॥ [illegible] सर्वकामं [illegible] ॥ प्रकाशनिक
नेन ईश्वराराधनभक्ति ॥ [illegible] ॥ ईश्वर [illegible] भक्तिनिर्मिताम् ॥ [illegible]
॥ माप्नुतमानमाधिकं [illegible] पितुसपान्वहन ॥ [illegible] मनविना ॥ [illegible] चित्तं
[illegible] ॥ किंचित्त्यादिमवेन ईश्वरे भक्ति भाजनः ॥ [illegible] मान [illegible] नित्यं शुद्धि दिने दिने ॥ [illegible] मिनलयं [illegible] ॥ मंगलं वि-
विधं नित्यं [illegible] ॥ [illegible] मन्नमा भवेत् ॥ मानकीर्ति [illegible] ॥ वनमध्ये सुखं मन्ये [illegible]-
[illegible] भवा ॥ इंद्रगमान्नमारभ्य [illegible] ॥ [illegible] नित्यनूतनं ॥ [illegible] च

नानाकार्यभवं धकैः ॥ [illegible] ॥ [illegible] व्योम वेदाब्धे तथा ॥ सर्वसौख्य समायुक्ति सुता पुत्रं च मेदनी ॥ मतायु-
भोग वृद्धिश्च [illegible] पूर्ति भविष्यति ॥ नानाकार्यभवं [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] मोनिपदृशि भ
[illegible] ॥ [illegible] पितृप्रभवाः ॥ दानमत्र [illegible] सर्वशांतिः प्रयत्नतः ॥ ईश्वरे भक्ति भावेन [illegible]
[illegible] मंगलविधि धोनित्यं जायते नित्य नूतनं ॥ सर्व [illegible] ॥ [illegible] प्रशंसा सर्वतो दिशि ॥ देवपुण्यान्स
[illegible] ॥ [illegible] ॥ भूमिग्रामादिकं [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ मनश्चिंता [illegible] ॥ दानपुण्यरतो नित्यं [illegible] ॥ [illegible] भवेत्ततः ॥ [illegible] मान
[illegible] ॥ पुण्यदाना दितोनूनं [illegible] सदा ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ स
[illegible] ॥ ईशभक्तिः [illegible] ॥ सर्वत्र मंगलो नित्यं [illegible] ॥ ५ ॥ भाषा ५ इस योग में जन्म
होने से [illegible] जैसे २ शरीर बढे तैसे २ धनु संपत्ति
[illegible] भोजन और [illegible] मान्यता पुत्र पिता के मरने पीछे
[illegible] आनंद में निवास करे व्यापार में तत्पर हो [illegible] धनवान हो
[illegible] कारण [illegible] नहीं [illegible] चिन्तायुक्त हो किसी वस्तु
[illegible] ईश्वर [illegible] करने से मन [illegible]
[illegible] परन्तु अभिमानी था जो दान करना [illegible] इच्छा से करता और [illegible] अधिक देता था कोई याचक
[illegible] दुःख [illegible] इस जन्म में दुःख का भागी हुवा इस की शांति को भक्ति पूर्वक [illegible] शिव मंत्र का जाप्य करावे, जाप्य करता ब्राह्मणों-
[illegible] भोजन और [illegible] शक्ति [illegible] दान करे सत्य [illegible] में तत्पर हो ईश्वर के भजन में-
चित्त लगावे [illegible] परम आनंद पावे पुण्य के प्रभाव से फिर अगले जन्म में भी [illegible] सुख भोगे ॥

महाश्रेष्ठं वमध्येपि पतिस्येदं फलं भवेत् कुम्भार्के तेभूमौ व्ययलाभविशेषतः सौख्यश्री कान्तियो भूय नसंगोप स्थिरं मनः भाग्य वंतो ग्रह स्थित्वा
निष्ठा कीर्तिं धनं लभेत् शनयैनुक्रातेलाको भन्धनका सुखीनरः छलछिद्र गनष्यंते सत्यासत्य परीक्षया सजने च भूयादीर्घ मुनीर्तिचिंतयेत्सदा कहा
दीर्घ धनप्राप्य सर्वस्थावमोदिता नकश्चिदाश्रयो भूत्वा दशान्यतु च श्रुत्वा ईश्वरश्च स्थितो नित्य दशानेष्ट चक्रो शिला चित्तचिंता भवेदाघे पीन
डयंते चापदुःखिता साहसी सुविचारस्थ संतोषी धैर्यवानरः भानदेनगतो बाल स्वभवत्मन्यते जागत भूल्य भूए भवप्राप्य पुनरंते सुतसो पु-
ण्यकर्मप्रभावतः आयुपूर्णो भविष्यति मनं श्रीदानमंदुरा पूजनाद्वश वहने लाभत्रोपन्धीनित्यं उल्लाभदिनादिन् आर्विवर्षादितीये च वन्दिपाना
त्वा गर्भबाधाभपीड्यंते ज्वरश्वरचनयनः इतपीडा विशेषेण भूत छायाश्च विह्वल कृष्य देहोपिदृष्ट्या नात मानानि चिन्त छाया पत्र प्रयत्नेन गुडु
गोपूजनतथा पुण्य कर्म नभापसा सर्वरोग विनश्यति आनंदकोशले चापि चाल वृद्धि यथाक्रमः मासे मासे सुरद् नाल मृत्यु सर्व विनाशन वेद वर्षे च
पंचमे पष्टमेसतमान्तर वालक्रीडाविशेषेण जायते च दिनादिन तातलाभनसंदेहो भ्रातभग्नी च मोदिता विद्यारभश्चोनी बाले मंगलश्चायते गृह कु
दृश्याधि विशेषेण नश्यनुपुण्य कर्मणात पितृचिंता विनश्यति भगिनानद भवेदा व्याल वर्षगते वत्स नेव चन्द्रान्त रोमस्तु ज्ञान लाम विशेषेण दि
नो ज्ञानदवर्धन व्ययदीर्घ सुपुस्थिरत्य मंगल च महोत्सवः विवाहादि शुभकार्य जायते चापि भूतले गुणिषा मध्यमायोनि मंदपावर्ष चाथिनं
विद्याक्रीडा विशेषेण पितृ प्रीति विवर्द्धन : रुद्रकोशमदृशापदं एकाग्रमनस्थिरो मति वन्हिमेकाब्द मारभ्य त्वात वनान्त सभ्यना बहुगिणान
लक्षितं वायमनद सिद्धानि निनकान्यसर्वे भूते मित्रा प्रिय वारित सुभाम ध्येस्वजात्र सुविद्या धर्म सत्वक पत्नी प्रीति विशेषेण कामुकी-
मनंदिता लाभप्राप्ति भवल्लोक ज्वरबाधा भविष्यति सर्वसौख्य धनादिकं पुण्य धर्माश्रयो सदा रुद्रविंशद्विविंशब्दे भाग्यानंद विवर्द्धनं बा-
मा प्रीति विशेषेण लभ्यते ललनाजने त्रिपाविंशाष्टविंशब्दे शुभाशुभ भयावनः भाग्य वृद्धिन संदेहो चितसंदेह विधेरपि सुरंगा सौख्य
शिवाब्द सुवर्ष मोदवर्द्धनः एतस्मात्कारणा वत्स चिंतनीय विशेषितः पापकर्मकृतो वाधा पुण्यश्चैव निवार्यते ॥ ॥ ॥ ॥
॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥

पापाद्यसंभवेदीर्घं ज्ञानतत्त्वद्वयीमिते धनपुत्रसमायुक्तो जायते पुण्यभावतः मानकीर्ति विशेषेण सर्वकृत्या विवर्द्धिता नाना मंगलको
यं दंपत्यो हृदयं परितः चित्त चिंता विनश्यति सुमित्राणां च मेलनं गहनेश्वगते वर्षे देवविंशांशकेतथा चिंतयेनूतनो कार्यं द्रव्यलाभ
विवर्द्धनम् सुतापुत्रविशेषेण प्राप्यते नात्र संशयः नानामंगल कार्य जायते गीतिका पुरे दीर्घ विवाहदंगृह सुयत्न कार्य तिष्ठते शीघ्रं
तन्मयत्न सर्वदानंद संभव: सर्वकार्य प्रयुज्यते बहुचिंता विनाशनं पुत्रवाप्ति गतवर्षे व्योमचत्वारिमध्येमा सुखासिद्ध सुखी लोके राजद्वारे
मानदत्त विवाहादिमंगलं कार्यं नृपतेश्च महोत्सवम् सुवर्णं सुपूर्णं श्रेष्ठ नूतनं जायते गृह वाहनादि सुप्रवेशात्वा रासदासिश्च मोदिता चिंत
श्रामा चसंप्राप्य प्राप्यते पदनूतनं सुधावालाभदो वत्स जायते तीर्थदर्शनं वृद्ध्यार्थी प्रतापी च स्वकुलमान भाजयं वृहद्रोगान्वितो देहो किंश्च
ते चानि दुःखिता दानपुण्य सुकर्माणि सर्वथा सौख्य प्राप्यते महा शल्य विनश्यति आयुर्वृद्धि सुरांगडुर्वे शशिवेदनारोकाव्य रसचत्वारि चानके-
भवत्कालान्तरोपत भूरि सौख्य समन्वित चन्द्रलोक परप्राप्ति स्वच मात्रा नृपालक पुत्र सौख्य विशेषेण प्राप्यते पुण्य कर्मणात नगवेदमितेव-
र्षे शशिपंचाब्दके तथा द्रव्य पार्थिग्रहगस्य पाल्यनु भोगलान पौनजन्म निलयापि पुनरंते च प्राप्यते पत्नी काष्ठविशेषेण शूल्यं सैव्याति दारुणा नेत्र पंच
नवीकाव्य व्यालपंचाब्द मध्यमा पुत्र पौत्र सुखंतेषि सुजनो भवेप्रसन्नशासिता यतः परिशुल्क सर्वे प्राप्यते च यथाक्रमं श्रेष्ठमितानि विश्वाहारो ग्राम प्राप्तु वि
निश्चित रसपक्षामितिमायु जायते सुख संयुत पुनश्चानिधन भूय लुक्तायतेच ग्राविरोः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल यह है कि यह श्रेष्ठ है और
मध्यम भी है मोट च्या परवड़े २ बार बार सम्मलाभ और सुख दुःख दोनों उन्नति के साथ धन प्राप्त करे सत्य बोलु लोगों की निंदा रहे छलछिद्र से शत्रु सत्य को
पिछान कि लोक बुरा न चाहे दीन दशा में फिकि चिंता करता ही रहे परंतु हिम्मत वाला हो संतोष वृत्ति से रहे आनंद मान करे विनायक अल्प में प्राणों का भ-
यहो सुपुत्र से प्राणों की रक्षा हो पूर्ण आयु भोगे तथा लाभ मां के पूजन दान आदि से विशेष लाभ हो है सुकि फल जन्म से निर्विघ्नपूर्वक वशी वड़ा धनपात्र पाव-
पुर गुरीके समीप नंद गांव में निवास कार सब प्रकार का आनन्द पाता था एक समय भुवन्नको गोमन गांव की गलिमें वंदपार देवताओं को सकी प्रेम पताल का दश
न को चला गया कुछ दिन वहां रहकर रमई आकार देखा तो अति शोक माना बहुत कुछ दानपुण्य करने पर भी पाप का भागी हो तो स्वर्ग को गऊवन वाय-
दान करणा मने च्छा फल पावे धन संतान तथा कुलको वृद्धि हो ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥

भृ.सं. कुं.फ. ५०३

पुत्रलाभफलं चेदं विशेषादुत्तमं मतम् पंचमेश्चतुःसप्तमे एकादशे फलं यदा मध्यफलं तदा दानं मंत्र सुभक्तितः ईश्वराराधनोनित्यं नाप्यमंत्र सदाक्षरी
दानमंत्र सुपुण्येन विशेषफलमाप्यते ऐश्वर्यतेजसंयुक्तो मानकीर्तिप्रतिष्ठितः श्रेष्ठकर्मरतोनित्यं दुष्टकर्म परित्यजेत् शुभाचार [illegible] नकल्याणं
दानमंत्र सुपुण्येन विशेषफलमाप्यते [illegible] सर्वपूर्णा भविष्यति [illegible] धनदायं सौ
भाग्यतः आनंदमंगलोत्साह [illegible] चिंताचिंतान्वितो भूय चित्तमुद्वेगनित्यशः [illegible] सर्वसौख्यान्वितो भूय आनंद भोग तत्परं पुनश्च
[illegible] न्यूनलाभं दशामध्ये [illegible] किंचित्कालं [illegible] विशेषतः सर्वसौख्यान्वितो भूय [illegible] पुनः [illegible] आयुर्दायो भविष्यति
[illegible] मध्यफलं [illegible] पुत्रवृद्धि [illegible] भवेच्चापि अल्पदोषो भवेत् [illegible] पुनः [illegible] आयुर्दायो भविष्यति
पुत्रोत्पत्ति चिंतान्वितो नित्यं पितुःपीडा [illegible] तथा [illegible] भविष्यति कदाकाले धनं पुत्र प्राप्यते [illegible] चापि भूय
[illegible] कर्णपीडित [illegible] कष्टदायकं [illegible] तदा [illegible] वर्षघात
[illegible] लाभं दिने दिने [illegible] सुतत्ताप्रियमानी तथा [illegible]
न [illegible] मंगलवृद्धि दिने दिने विचारभक्ति [illegible] प्रीति विशेषेण [illegible] सौख्यसंपत्तिश्च, द्वादशी
[illegible] वृद्धिरुत्तमम् [illegible] त्रिंशत्प्रीतिं च [illegible] मित्राणां प्रीति संपन्नो-
[illegible] चंद्रमिते वर्षे [illegible]
काम क्रीडाप्रवर्तने भयभीतिश्च दृश्यते [illegible] सुपुत्र फलदायकः [illegible] महद्भयं [illegible] मा सम
[illegible] धनागमः
[illegible] विशेषेण [illegible] तथा [illegible] वादविवादके [illegible] कार्यनाश धनागमः
पुत्रेण नूतनं गृहं भाग्यवृद्धिश्च [illegible] विशेषेण [illegible] सिंधुतुल्य न रोगापि
मित्रपक्षं परं प्रीति चंद्रबीज पुरं प्रियं [illegible] सुखवृद्धि दिने दिने [illegible] निवानिवृत्ति च भवेत सिंधुतुल्य न रोगापि
चित्तोद्वेगन सुस्थिरं काम क्रीडा विशेषेण पत्नीगमान्वितो भवेत् अन्य कामप्रवासश्च जायते च महोत्सवम् ॥ • ॥ • ॥ • ॥

भृ.सं. कुं.फ. ५०४

पंचकिविशेषेण नूतनं कर्म मन्यते अयनं चगवाकाव्य विपाके शोकदायकः तस्मात्सर्वप्रयत्नेन प्रयत्न कर्म सुभक्तितः सर्वसौख्यागमो नित्यं
नानाकार्यविचारणे सुतउत्सवान्वितो भूय [illegible] शोकनाशनं पंचविंशतरे काव्यं तथा चत्रिंश मध्यमे लाभं कृत्वा भवेल्लोके राजद्वारे धना-
गमः [illegible] विशेषेण भयभीतो भविष्यति आनंद चापि [illegible] सर्वोपद्रवनाशनं कारणसतति सौख्यं प्राप्यते बहु यत्नतः मंगलं जायते गेहे
मोदतेच महोत्सवं [illegible] विशेषेण स्वजाती मानवर्द्धनं [illegible] त्रिंशाब्द मारभ्य चत्वारिंशादि मध्यमा तावत् कालं च [illegible] व्ययलो
भविनाशनं [illegible] सर्वपूर्णो भविष्यति सुकीर्तिं सुपरं प्राप्य [illegible] उद्वाहं च महोत्साहो जायते बहु वत्सरे-
चित्त चिंता विनश्यति भजनानंद सर्वदा नूतनं लाभ सुपुत्रो प्राप्यते गेहनूतनं कार्यवृद्धि भवेल्लोके राजद्वारे प्रतिष्ठितः चंडी पाठेन [illegible]
च सत्यसत्यावनश्यति [illegible] आनंद चापि सर्वदा चंद्र चत्वारि वर्षाणि तथा च सेर्प वेदके राजद्वारे जयं प्राप्तिः धन धान्य [illegible]
सर्वसौख्यादि [illegible] नृपात्मानं महासुखं रागशोक प्रवर्तते किंचित् कालं विनाशनं दानपुण्य प्रभावेण सर्वसौख्य धरातले आनंद
मंगलाचारं विवाहादि [illegible] पूरितं मन वांछया आनंद [illegible] लाभालाभ सुखं दुःखं यथा-
कर्मानुभव [illegible] धनान्वितं [illegible] जायते नात्र संशयः निजकर्मानुसारेण निर्धनो मोद संयुतं ईश्वरे [illegible]
संचय [illegible] ॥ भाषा ॥ इस कुंडली का फल उत्तम है [illegible] बलवान है पांच ग्रह श्रेष्ठ [illegible] मध्यम [illegible]
पूजन मंत्र जप करावे ईश्वर का ध्यान धरे नित्य पंचाक्षरी मंत्र जपे तो [illegible] तथा बड़ाई पावे श्रेष्ठ कर्म करे नीच कर्म से बचे सब
के भले में रहे किसी का बुरा न चाहे आनंद बीते परंतु [illegible] मानेगा परंतु [illegible] चुका [illegible] सब पूर्ण हो कभी श्रेष्ठ
दशा में विशेष लाभ कभी मध्यम दशा में मध्यम लाभ और न्यून में न्यून लाभ होता रहे [illegible] चित्त फसे आनंद [illegible] पूर्वोक्त संतान यम
[illegible] दीर्घायु [illegible] मिले [illegible]
[illegible] पूर्वजन्म में [illegible]
कर [illegible] ॥

धनाभिमानपदावेदं मवशाङ्कुन्द्वफलं ॥ आदौभाग्यं च मध्येपि अनरतेविशेषता कार्यवस्त्र वस्त्रीलयंते ॥ विद्याभ्यासो पिमाल नानद्रव्य शमिकार्य
मृ.सं. विवाहादि महोत्सवः ॥ भूतभग्नीसमासुतो मोचते शत्रुभयम् वारिभीतोपयवान्दि चतुष्पादन पीडितम् ॥ उष्णस्थेपि तोभूमी शरीरे घात
कुं.फ. पीडितं ॥ बहुविद्यानुभव्यंते कार्यमात्र वासिद्धाते उग्रमतो विशेषेण सज्जाता बुमूलवरण सुखावस्था तलभाग्य बृहत् कार्याधिपो भवेत अप
४७५ लाभ विशेषेण कान्तिवन्तो मानिप्रत भाग्यवंता धनध्वता सुपासिद्ध सुखौ नर चद्रमित्र पर भीति सर्व वार्ता च वाष्यते क्लेशचिन्ता द्विपोजीवान् ॥
वाम्पृते शोक संधुन कदाच कष्टरोगार्तो बहुद्रव्यव्ययो भव राजद्वारे धनागम्य भूमिलाभ स्लर्थवच्च नरगो संधुपावने नायनु वंकु मूतन भन्यो
दीर्घभृत्यमाप्य नूतनं जन्मनमश्यते पुनरत्ने सुखनाप्य आयुपूर्ण भविष्यति पापक्रूरग्रहापूर्ने पंकूता भाग्य मंदता दानमंत्रविधानेनन मनेच्छ
मिवुर्ततनः द्वौ मैत्र्यान्विशेषेण परकार्य विशेषेण परकार्यरतो नर दयालुः सत्यचारु श्रुगीत वाद्य रत सदा अवर गुड मार्गाच धन सुख
क कौशलः वाणिज्यच धनं प्राप्ति बलवान कृत्य पुनः सत्यवृक्षा मतापीन विनितस्थ कारगुणी सौख्यसुसुपूर्तिस्थ हेमरत्न विभूषिता खपुकथापु
धन प्राप्ति रिपुनाशनृपात सुख भाग्य वृद्धि सुख देहं द्विजनामचनसदा यादिका मद्भयानव विपाके धन वर्द्धनं कार्यत्व मति संज्ञात नयधनपराय
निष्टति पूर्णमोक्ष्य भवल्लोक नारीणां मीनि वर्द्धनः गोसुवर्ण भूमि दानन सर्वमोक्ष्य भवेध्रुव राजसी सुरा सजीतो भातर सुख्य प्रीति ज्ञानं कान्तिमोद
पुनः पत्नी मुनदारानिचित्तये त्सत्थवत्स भगेच मचण्डाबह भामिणा नृपद्वाराधिकारेच पत्रो भुरि महांतलं पितश्च मरणं शेष विपाको चाये नान
शनम् पुत्रच कन्य का हाहे सुमार्ग सुधन व्यय मद्यमानचमे वर्षे नानारोग समन्वित मात्रु हानि तथाम ध्ये विशे कष्टच दारुण मह ख
मृत्यु नवजाप्य दानमंत्र सुभक्ति सर्व बाधा विनश्यति विपाके सुखवर्द्धनं अष्टमे चाष्ट मे वर्षे भूणाच्या धनरा सेय पितु लाभ विनाश
यान भूगुवाक्य नचान्य अष्टमे चल मनरे उत्सवं जायते गृहे नवीनो वस्त्रा भरणं माप्यते ग्रह मंडले दशामे चाद्धे च दाक्षे अकार्य प्रसंग
उदाहरण मलोत्पादो कलत्र धनग्रामिता पुनश्च तद् दशोवर्षे तु थाच विशम मध्य मे नान बाधा महाकष्ट तु यदेक शैल भवे माप्य उवि
नसंदेहो धनलाभ दिनेदिने काम पीड़ा मनोद्वेगं वित्तबैरापि व्याकुल तव नारी समागम माने भोममनदिता- ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

पंचचित मायुक्तो जायते पिकासकदा भार्यास्वल्पसुखं माप्य धन्यत्रापि तु चंचलं तरान सौज्ञासजातो ग्रहचिन्ता भविष्यति विद्यांक पंच विज्ञोवा स्वदेहे कष्ट
भू.सं. जायते तस्य शान्ति च दैत्येश जायते पुण्य कर्म सागत अभ्यागत द्विजपूज्यं तीर्थ समुद्रादि सेवनं माप्यते परमं सौख्यं सनमंत्र सुभक्तितः पत्नीकष्ट
कुं.फ. शेषेण मृत्युतुल्यो भविष्यति गर्भीरोगानि मात्सुन जायत नाद्रु शाशयः मंगल जायते गेहे गीतवाद्य मनोदितो मध्यलाभ भूयो सर्व मनेच्छा कार्य ताप
५७६ न्ने रत विद्या च विशाब्दे सुनाउत्र मनोदिता लाभवृद्धि भवेल्लोके चिन्ताद्विश्च नूतनं सत्यवादी गुरुभक्त नृपामात्य भवेत्सदा द्विजदेव बस भक्तश्च
विविधवाक्य भवुर्वीन नन्दारित्रपाधिवत्स विशेष भामवर्द्धन विवाहादि महोत्सादो कुलवधु प्रहाणम व्यय धन प्रसन्नात्मा सुभक्ति सर्व तोपि
ना एवबहु सुखमापि जायते जनेनत्संसु मानकीर्ति समायुक्तो सुजनभ्याम शासितं बृहद्राज्याधिकारी च दृष्यते नात्र संशयः शशिरन्ध्रदाब्दं तनाते
व्याम पचा चाधितता मनेच्छा प्रजित सर्व विशेषेक एनाशनम् पत्नीहृत विवादं च जायते पुत्रवधुभि अंते चक्रगतं जातो भिन्नवासाद्विमंदिरे श्रनः
मारि मुखनवं उवपीव मनकथा लाभहात्य विशेषेण धनसंचाति संचित सर्व चिन्ता विनश्यंति भजन नंदसर्वदा सून्य पशु पिवमन्ते कार्य भार वि
निमुक्त तनानी सून्य सभाने सर्व वस्था सखमतं मातृ चद्रग्गवर्षे आयुपूर्णं भविष्यति सर्वकामनुकूलच भाषितयन्मतिमुम ॥ भाषा- ॥
इस कुण्डली का फल यह कि प्रथम मध्यम भाग्य हो पश्चात में विशेष भाग्य जागे बाल्य अवस्था में चाल तोडे विद्या पढ़े मंगलाचार हो पिता का धन लाभ जान
मर्म लगे बहन भाता का चाग हो जल अग्नि चौपाये का भय कार्यों में गिरकर चोट लगे विद्या कार्य मान हो चतुर अकाल मंद दाना युवा अवस्था मु-
वहु काम चार मामले दश लाभ सब बहुत कार मतिष्ठा पावे भाग्यवान हो एक मित्र से गुप्त प्रीति विशेष हो उसमें सब मन की बात कहें तथा एक जीव-
नी चिन्ता से केश पावे कई बीमारियों में धन खर्च हो राजद्वार तथा भूमि लाभ हो चित्त में समृद्ध होवैगी नित्य नई तरंग उठे एक अल्प भारी हो नया जन्म रम
मान आयुपूर्ण हो पाप ग्रह अधिकार रमह जिनसे भाग्य को भेद कर रक्खा उनका पूजन दानमंत्र जाप आदि करने से मनो कामना पूर्ण हो सब सुखद
नवका भला चाहे अच्छे विचार वाला दयालु तथा सब सबका पराया काम सिद्ध करे धन धान्य युक्त हो ते सुकृत पूर्व जन्म में ये जीव स्वर्गांश में उत्पन्न
हुआ धर्मार्थी धन पात्र या शिकार बहुत खेला करता हो एक सेठ से विशेष विवाद रहा उसका दरा भरा बाग कटवा दिया सो नौ आकार ब्राह्मण को बुला
ता स्वराभरके दान करने कामना पूर्ण हो- ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥

सं॰ प॰ १७

गर्ब्बसर्वं भवान्नित्यं धनमेतत्फलं यदा॥ विवादश्चोपनृपद्वारे सत्यासत्यस्य चिन्तकः॥ ईशानान्त्या मृपुण्यात्मा जायते चोत्तमे कुले॥ कृपा यात्रामिने ध्यान्ते गृहे नत्वा
दर्शकः॥ यानि नानाविधान्येव शुभचिन्ताविशेषतः॥ लाभोपि मध्यमं कार्यसिद्धिर्न हस्यते॥ पुत्रसुखं भयं प्राप्य प्रतिष्ठा भयचिन्तनम्॥ तीर्थचिन्ता महाक्लेशः
प्राणप्राप्तामहतापि॥ सूर्यभौमसमायुक्तः दानमन्त्रसुसम्भवः॥ सर्वायतीर्थदिनं ध्यानादि शास्त्रसमागमः॥ धनपुत्रसुखं प्राप्य वंशवृद्धिर्दिने दिने॥ स्वजनान्य कु-
शलोल्लाभः शत्रुक्षयादि नामपात्॥ भेदनीति महामोदं रिपुरोगविनाशनम्॥ विविधं दर्श संप्राप्य नूतनं कार्यमारभेत्॥ सर्वोत्तमं महालाभप्रसूतं वा
यत्नकुले॥ दुःखमीनस्थान्वितो नित्यं विशेषोप्यय भूतले॥ पुण्यभाग्यमयं घोरं शास्त्रपूर्णं पुनर्भवेत्॥ सुपुण्यं मङ्गलं सर्वं गमनेच्छा प्रवर्तते बुधः॥ सदानन्दभयं हा-
नः नदाच मङ्गलमतुलम्॥ मातृपीडाविशेषेण पुनश्च मोदते भुवि॥ इन्दुनेत्रान्त विषयाणि शिववृद्धिय यथाक्रमः॥ गृहरोगेण पीड्यते भूतक्षय मनश्च विप्लवः
॥ महान्तो शंकया जातं जातं जानाति चिन्तया॥ यदा करणनाशकः इन्द्रारापुनर्नाशतथा॥ छायापातान्तदानेन सद्यः सौख्यान्वितो शिशुः॥ कारयेन्नूतनं
क्रीडाशिशु चातिमनोहराः॥ इदं वर्षसमारभ्य व्याप्तवर्षान्तरं तथा॥ तात मात महामोदं शिशुवाक्यमतिप्रियः॥ आधी विद्यासमारम्भ प्रज्ञातेन विस्मयन
न॥ विवाहो मङ्गलगेहे नृपनारि समागमः॥ तातभ्रातृसमायुक्तो मोदितो मतिवत्सरे॥ कृष्णपाण्डुज्वरो नित्यं तथा विस्फोटकादयः॥ महामृत्युं जपोनाम्यं उन्नति
शुभनाविधिः॥ तथा शान्तिमचेतनं आनन्दं जायते ध्रुवम्॥ नवमवर्षगते वत्सं तथा चु शरचक्रके॥ विद्यापीडिश्च मध्येपि कामक्रीडा प्रवर्तते॥ नानाद्रव्यं व्ययाको
धर्मगृहादि मङ्गलोत्सवे॥ याति भीमानथा यन्दि उच्चन्यपतितो यदा॥ स्वकास्मान्नायते कष्टं पुण्यकर्माणि शान्तये॥ उनरन्ते मतो याव मङ्गलानि च बान्धवाः॥
पादशाब्द समारम्भात यावच्छाब्द मध्यमा॥ लाभहान्यान्तोभयः नृपश्चैव भाग्यवर्द्धनम्॥ पत्नीमित्रगते भाग्यरूपयौवन मोहिता॥ लाभचिन्ता हृदये सं-
कामवेगेन पीडिता॥ उद्यन्तो धिकं च भक्तया कालेपि विभ्रमः॥ पुण्यपापं सुपुण्यं तु पुनरेव मतं तुष्टम्॥ विंशतिका पञ्चविंशाब्दं नवेशत्र यथाक्रमः॥ इ-
ष्टलाभं नयादीषु कार्यसिद्धिसमागमः॥ यदा कालभवेद्धीर्यः दानमन्त्रेण शान्तये॥ सभाग्यं कुरुते तेन मानकीर्ति विवर्द्धनम्॥ पत्नीगर्भं विमाद्युक्तो महानन्द राम
महोत्सवम्॥ मनश्चक्रपूजित सर्वाः पुण्यवर्णं च पोतदा॥ रम्यविंशोत्तु त्रिंशाब्दे चिन्ता चिन्ता बलीयसी॥ सुहृद्यं सुखयत्स्तोके कुलेनैव मतिश्चितता॥ पुत्रवंश
आयाम्येन भूय मे भाग्यमेव च॥ सप्तदानं धर्मवृद्धिःविख्यातो मतिमान्नरः॥ मिष्टवार्त्ता सुप्रेमी च धर्मकार्येरति सदा॥ क्षयानार्ध गतेपि च सर्वे शान्ति-
सुपालनः॥ नवपञ्च महदेवराजिनिर्माणं सुखम्॥ सनवारा तथा भ्रातु सन्तोष्यति दिने दिने॥ मयवाप-॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥

सं॰ प॰ १८

न्तरायुतो भंगकारी निभाग्या॥ मानेनमहता पीडा कुशमन्त्र यानित्यशः॥ दानमन्त्रमहत्पुण्यं भजनानन्द राम तदा॥ भूमिलाभविशेषेण स्वनामे न्द्रनन्दन
म्॥ शान्तिसन्निमित्तिपर्यं शारविशान्तरं तथा॥ विवाहे मङ्गलं प्राप्य कलत्रं गाढोत्सवं॥ व्ययंच भक्तेनो मृधान सुखीनि स्थाने भूरिशः॥ सन्देहार्गे नृपान्ये वाचित त
यादनपरिता॥ नाशयदसि नित्यं कुभाग्य वाहनस्थिति॥ अन्यवर्षान्तरं प्राप्य बालदासि मनोनतनम्॥ नीचयतान यशपरंपरवाणि मतिस्थितः॥ चौरभये चानिष्टं नृप
विशेषोन्नीति कुर्वन॥ सुखोर्ज्जितयोर्नित्य तेनदीर्घ मानीस्थिते॥ रत्नवामगतं पर्यं नगान्यासमगुणा वचे॥ मोदितोमङ्गलं कार्यं उत्साहादि महोत्सवे॥ मानकीर्ति विश
द वर्द्धवान्निदिने दिने॥ दानमन्त्रसुपुण्येन कुमान्सी ख्यातिशोभनः॥ इन्दुर्यदा विवेदाब्दे अश्मसाक्षं सुप्रदम्॥ धर्मान्नपाप कर्म्माणि धीप्यते काश शासनम्॥ तथा
स्वर्पप्रयत्नेन भूमिपितेषु संचयः॥ इन्द्ररक्षपथस्पृश्य साम्यं रसने वै भया॥ ग्रामभूमि पुनरत्नं भूषणानामनोहरा॥ ज्योमपञ्चगते पर्वे पीव महोत्सवम्॥ भास
वेधसुखमाप्य गुरुक्लिष्ट गानिद्रिः॥ वन्दिपश्चाब्दमारभ्य: यातको पीतिरालयम्॥ तेनकः भवदीर्घः सर्वनिदितानु निष्ठन्तः॥ तुषयेनरूपयो भयः आपत्कृत्ये स्वगतः
न्यूनयशाब्दपर्यंतं सर्वेच्छा मनपूजिता॥ ईशध्यानविशेषेण गृहकार्यविसर्जितः॥ नन्दयशाब्दकपाल्यप्रीतेन भाग्यदर्शनः॥ शारसशाब्द मायप्यं तावत्पुण्यकर्म-
णः॥ अग्यायविकुपएपन नाश्नेचान्तमें काले॥ सर्वसौख्यान्वितोभूयः गतानन्दनवनम्॥ इति॥ भाषा ५॥ इसपत्र का फल मध्यम है तो बहुत विघापान चतु
रसत्यासत्य का ज्ञान। बुद्धिमान श्रेष्ठ कुलीन ईश्वर का मानने वाला पापों का क्षया यतनकर्ता कोई दया में भक्त मन का कामना को नाद इत्यादि निकि को हो गये बहुते भय पाव
कीर्ति प्रतिष्ठा में भय हानि कौ चिंता में और दुःखपाइस्थी माल और पुत्र आदिक चिन्ता अन्यत्रध्यानसे पंचांग तुरन्त मासी वृद्धि और धन का लाभ रहे मित्रों से मांति
को आनन्द घर विंशपद्रव्य मिले शत्रु नाश आदि पाना शुद्ध धर्मका आनन्द बढे विशेष कार्य्य का आरम्भ करने से अधिक लाभ होवे सुख दुःख लोगों को मन के भावे
सभा आनन्द सौं विचार दाम आप्यमेरा ताकर नेपराक्रम पूरा भाव स्थान को एक ग्रह जन्म में सन्जन विनयफल मे उत्पन्न होय उपरोक्त अन्यकार इन्द्र मन्यमुख लाथो पजन्मान चलेत दहन बहु
त थे नित्य स्नान का रदान लेने में तत्पर पाप में ध्यान मानो पाधन हर कार आपने घर में रखता और ईश्वर को भजन मेरा नहीं करता सदा दिवस भोग कि पाकर भी धनमानता राम
हित नहीं विचारा इस से महापाप का भागी है या इस जन्म में अनेक दुःख भोग इन की शान्ति को ईश्वर के चरणों में मन लगावे यथाविधि कार्य्य सिद्धि का शुद्धा नकार अन्त में श्रम
आर्य्य को यथाश्रद्धा भक्ति पूर्वक विप्र को स्वर्ण दान भूमि सेवा नगर का रीर नित्य प्रत्य कर्मों में मन लगावे तथा पापों से छूट मने क्षमत पूर्ण सुख पावे सब आपत्तियों चाना
महा परम आनंद योग पूर्ण अवस्था प्राप्ति भाग्य का उदय के प्रभाव से इस समय काल में जनके सिसब हरत पर घर में मंगल का साथ-॥ ॥ ॥ ॥ ५॥

सं.
क
८

मर्वेलेटेभ्रूमानेन न व्यथायोभयेश्वरः॥ यस्यांगदेभवेन्नान्म मांगल्योदकस्मभवः॥ मासे पंचित्तंवात वाल वृद्धिर्दिनेदिने॥ यथान्देहमवर्द्धेत धन संपन्न भूद्धिमान्
लाभं बविविधं चापं मावते पुण्यवान्स्पर्णः॥ पूर्वधाम मनोहरं मेशयाविहृचेतनः॥ कलत्रपुत्रेोधुना मानक्षानिभयं हृशः॥ गृहवाधाभयंतेष्वेते अमेदोयेप्ये
रथेतिगम॥ भूमिलाभभयं लिताद्विविधं चमनोगतिः॥ नृपद्वारेभयं दरव सुपत्नशांतिमर्दिता॥ मे यान्धितविधानं नकिंचनभक्तिभावतः॥ ईश्वराराधने प्रीति-
दामुल्पफलमद्य॥ मर्वपापक्षयानित्यं धनधान्यविवर्द्धनम्॥ देवपूर्णान्यचितत्य स्यकीर्तिश्चनिर्मला॥ मनाथोमूमिर्नाप्नोति जातकाम्मुना मद्वादे वदर्शनजा
भांतिवीथे मन्त्रादिमचनम्॥ पुण्यभागेनुपुत्रस्वमानेन महता नृणाः॥ मुतक्स्तुसलोके भाग्यवृद्धि दिनेदिने॥ नायनेपीडितो पापनाशकार्यविधाराम॥ अथमेष्टि-
यौधे नवधने नाथामस्तकिमो॥ इयते इबन्दवे कादीमेतत्फलंवरम्॥ व्याघ्यपावाचदानेन सर्ववाधा विनश्यति॥ वातमात मसल्पीमस्य हृदि नाम्य मनोहरा॥ नृ
सौधि पंचमेनये वर्षेवर्षादि नानृमें॥ बालकीडारतो भय तुद्धिचित्तवभायमान॥ मुण्यानविचारण कर्हिचिन्मोटकं महत्॥ रु अलंकारितो मलः मुखपारिहत्तपंकारा
सकलश्च फलोभवत् कीर्तनेविविधैरपि॥ मगलं वासयोगापि विचारंभशतलद॥ भावनान्यादकांष्टेन उत्कृष्टेपतितो भवा॥ किंचाचाक्तिभयं धारोपुनरेनेमुखं
गमः॥ यदेने हादशवर्षेनपोम स्थं भूस्नुसमः॥ विवाहोमंगलं कार्ये व्ययो दीर्घप्रतिष्ठितः॥ पानदत्पने नित्यं बालकीडासुभ्भरः॥ चंद्रस्त्रोवृपरे मौलिपदाचे-
गुजन्मपुनम॥ वाहन्याधिमसुलन्धो औषधोभवतिशान्तये॥ विष्यस्वरवनकार्येष सुबलापिनन्दनूरे॥ मवेक्षणभय्योरोपे: कुलकीर्ति प्रसादितः॥ कर्मादिम
मर्वकार्येषु गतलाभ गुरुसमदा॥ पान्नियमाद्केचाइ मध्यमा व्यापितकथ्यते॥ पत्नीयानि विप्रवाण रूपयौवनविनमन॥ चंचलस्वचलो वाक्ः नेश्वेमास्थं
एनमदि:॥ चिन्तयेहिविधं काम्यं रुपाविभ्रमो मनः॥ भोगाश्वैभयोनित्यं दहतेनायसंशयः॥ उमादिवंतपानिवे शर्मार्थं प्रविष्टधिर्भाक्तो॥ सुपस्माड्डते
यथा गुषो पदोनिशयुपत॥ चंचजन्य कलोमयो मंगलंगान मन्दिर॥ कुशलं मर्वमान्वस्य राजते उत्पवैभवा:॥ नवंर्वानितनोनित्यं आकमेदविविभूदलः
॥ व्याधो शयविसामीच्च चिनाहारसुदर्शना:॥ भूनिन्यवावल्पीनः तन्मथे नृनत्नैः॥ देवविंशतिवयोगी तथाच भ्याम पसके॥ द्रव्यलाभभ्ययो धीर्घः कामं राम.
शुभवाये भूतन:॥ मेवनेशाम्बिरा इति गुरूल सदवनंदिनी॥ मतिष्ठामानविमयो सुसंगहृदेनसदा॥ सकलान्यनिरतो भाग्यवान पाप्यते वांछितंपदम्॥ भागी कस्टभुक्तो
के गैपपोमेनवकदा॥ किंचिद्धानादि मंडुले सुपदकोगृनाशनम्॥ इत्युपचान्यचनस्य व्ययंकोशनिर्मला॥ विंशतुधान्तिकमान्देनारस्त्रापेधिनितं शतानिकाम-
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

सं
क
८०

सुखाविशेषविवादादिभवोन्नवं॥ मानेन महता विधी शरीरंकाहपीडितः॥ तत्वसोभयं पदे बालमूर्तिलिखेद्बुधः॥ तदग्रेकापिनो भक्ता मन्नविंशसहस्रकम्॥
मंत्रः॥ ह्रीं ऐं क्लीं कं कालायन्नेलोचनायतर्वकष्टहरायतेनमः क्लीं ह्रीं ऐं ह्रीं॥ वेदाध्याय विधानेन दानभक्तितः॥ स्नाता बुधः सुखमाप्नोति भाग्यवृद्धिर्दिने
दिने॥ शुभगेस्थानरे वर्षे व्याभवेदयथाखसः॥ संपदा विस्तृतो नित्यं पुण्यकार्ये महत्यशः॥ विद्याविमदोत्साहो व्ययै कीर्तिश्च सततम्॥ स्यातेत्स्वह सिवेश्य
भार्गुनमन भूषणे॥ जनारण्य परं प्रीति देवतीर्थेषु मंदिरे॥ सत्त्वनेनायते प्रीति धनी व्यापार कान्तुक्तिः॥ अनाह्वतंस्तरंवाचनावन्धुपाले भवेत॥ अनेकाचपतिता
सर्वं मान्यातिमहत्यशः॥ वैकृतवाणान्द्मेमाप्य पीडिता महात्मव॥ वाणराशेन पार्श्वे शत्रुघात महत मेयम॥ वान्दुरचामितचापे सतकाम च कारातः भलं
पदेनन भूर्तिना निमग्नमाबुनासव॥ भवभवमूलमंत्रस्य प्रणवं संपुटं जपेत्॥ तेनुखवमरणोलोके विपाके लाभवर्द्धन क्षेत्र॥ न्यूनपराकृत्यकाव्य व्ययखसराम्बु दि-
ना॥ निवर्तनायते दद्याः यागंयाति नलीनता॥ ज्ञायापरान्नदानेन इष्टभक्तिभावतः॥ सर्वारिष्टप्रयाकाव्यः भजमानन्तसर्वदा॥ स्वतः पारमुखं सर्वभ्याम
नन्दान्द मासुपमम्॥ पुण्यान्प्रशस्तनीयापि पुनजन्म मकुले धनसगृहान मंत्रेण सर्वच्छा नित्यपूजितम॥ महत्वशादिदेवत्वमाप्नोतिपरमांगतिम्॥ इति॥ भाषा-
मृषपरवा को इष्ट लग्न में ध्यन्ने भूमीशदाई सके जन्म से घरमें आनन्द मंगल रहे महीन चार वर्ष सुख से बीते दिनादिन बालक की वृद्धि होजैस जैसे शरीर रहे धनसम्पदा
दि का विशेष लाभ पावे पुण्य के प्रभाव से लाभ कि काम हो पन का मसवद्र स परत पाप के कारण मन में उग्र का धनक नशायन चित्त थिर रहे कुल में धर्म में निवन्धे
इस मान कानि का चित भूय देवसुख बाधामे पीड़ित रहे नमेद्र स कीय त्यय हो भूमि की प्राप्ति में भय चिन्ता रहे मन में दुःख था वा राजद्वार से भय दीखे परंतु प्रायश्चित
करने पर नित्य आनंद भोग पूर्व पाप के नष्ट होने के प्रभाव से धन धान्यादि सब सुखों की वृद्धि रहे ये पूर्व जन्म में यह जन श्रेष्ठ वैश्य कुल में उत्पन्न हुआ धर्मात्मा
का भजन करता रहा एक समय धर्म का अभिमान कर अपने सब कुटुम्ब सहित तीर्थ यात्रा को चला तो चलते समय भूल से घर में एक गऊ और वछड़ा बंद कु- राम.
एरह गये इससे उनका कुछ ध्यान न रहा तीर्थ पर जाय बहुत दिन लक्ष्मी दान किये परंतु इधर वह गौ वछड़ा भूख प्यास से व्याकुल हो इस धन का शाप दे गई कि मेरे
ग्रपेलाम वैश्य नतीर्थ में जाय दान का फल नहि पावे दुःख से इस पाप से छूटने को बहुत दान पुण्य किये परंतु वह शाप न छूटा तिससे इस जन्म में दुःख का भागी
हुआ इसकी शांति को यथा श्रद्धा सुवर्ण का पत्र बनवाय उसपर लाल चंदन से गौ वछड़े का चित्र लिख धूप भरि उसे कलश के ऊपर रख दान करे तथा लक्ष मात्र
बीज मंत्र का जप करावे तो सब पाप और शाप नष्ट होजाय पदों के अनंतर वह सब सुख पावे पुण्य के प्रभाव से प्राणी को वहे फल मनुष्य जन्म से और परम गति को पावे॥ ५॥

नवयोगाद्य चा यातः स्थापयेणवसुंधरम् ॥ बुद्धिवंतो धनाढ्यश्च विद्याभ्यासे समेधाः ॥ कश्चिन्मतिसज्ञानं कदाचिद्विशेषदीर्घेण ॥ [illegible] विशेषेण मानकीर्ति
मुखप्रदा ॥ मुसलेश प्रदायोगो जायते पूर्वपापतः ॥ या पत्नी च विशेषेण [illegible] कलम् ॥ नानाचिंता विशेषेण ईश्वराराधने मतिः ॥ पुण्यवान् [illegible]
स्त्रीमानसौ [illegible] ॥ दुःखितं पूर्वपापेन नमुखं सुस्थिरो भवेत् ॥ [illegible] शुभयोगफलं [illegible] ॥ [illegible] नवपूर्णे धनागमः ॥
[illegible] प्रदा भवेत् ॥ [illegible] भाग्यं च मेरुणा ॥ संपदा सत्वयोवृद्धि विरुद्धनिग्रह [illegible] ॥ [illegible] दंतवा
[illegible] ॥ गृहदोष प्रयोग्यत शुभतं सुख संभवः ॥ [illegible] वस्त्रवृद्धि [illegible] ॥ [illegible] नानमाने विशेषेण सु
[illegible] मेदिनी ॥ धनवृद्धि [illegible] न्यापि बहुदर्शितः ॥ [illegible] भयम् ॥ [illegible] करः ॥ [illegible]
[illegible] वृद्धिमत्यापि ॥ नृपवर्षे समारभ्य नेत्रचन्द्राब्दमध्यगः ॥ विद्याभ्यासरतो बाले क्रीडते मति तत्परः ॥ [illegible]
॥ नानचिंता विशेषेण [illegible] ॥ भूपामान सपुण्येषु पूर्वपत्ने [illegible] ॥ ईश्वराराधने प्रीतिः [illegible] मतिः ॥ विवादशाहक [illegible]
[illegible] ॥ चिंतन कोऽप्यनु गृहः [illegible] ॥ [illegible] सर्वारिष्ट निवारणः ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] कुशल्यमान मुत्तमम् ॥ मंगलविधिधानित्यं [illegible] मेदिनी ॥ [illegible]
[illegible] ॥ सर्वसंतानपाल [illegible] वृद्धिकारः सदा ॥ [illegible] गृह मंगलमेव च ॥ [illegible]
॥ [illegible] ॥ सुताश्च सुखसंपन्नं राजतगृहमन्दिरे ॥ पितृकीर्तिकरो [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ सर्वकार्येविनश्यंति [illegible] वर्द्धनम् ॥ [illegible] मेदिनी ॥ सम्पदा [illegible] नित्यं भूमिला
भ [illegible] ॥ [illegible] विधिभा [illegible] मंगलम् ॥ [illegible] कीर्तिश्च निर्मला ॥ [illegible] परा [illegible] ॥ ॥ [illegible]- राम
[illegible] ॥ [illegible] प्रशासितः ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] कार्यं [illegible] ॥ [illegible] नित्यं ज्ञानध्यान [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] कष्टपीडाविनाशनम् ॥ [illegible] धरातले ॥ [illegible] ॥ सो- ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

मत्वंचारिवर्षाणि तथा पंचचतुर्थके ॥ [illegible] विस्तृतिविशेषं भवेत् ॥ ईश्वराराधने प्रीति आनंद भूमिमंडले ॥ सर्वेच्छापूजितं लोके भूमिलाभवि
शेषतः ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] नूतनं [illegible] संभवः ॥ [illegible] दिनेदिने ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ व्यापारवृद्धि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ नानाकार्य [illegible] सुखीभवेत् ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ भाषा- ॥ इस योग में उत्पन्न होने वाला मनुष्य सुंद
[illegible] बुद्धिमान धनवान और [illegible] किसी समय [illegible] के कारण [illegible]
[illegible] परंतु ईश्वर के चरणों में मन लगाने से [illegible] के द्वारा सब सुख नित्य प्रति [illegible]
[illegible] तब तक [illegible] भय रहै [illegible] धन
[illegible] धन का [illegible]
[illegible] परमात्मा का नित्य भजन किया राम-
[illegible]
[illegible] भाग्य [illegible]
[illegible] धर्म पुण्य के काम करने से फिर [illegible] ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

भृ.सं. कुं.फ. १२३

मितेवर्षे सून्यबाणमितेतथा दीर्घवार्यलभतीच भाग्यवृद्धिर्दिनेदिने शुभकार्यधनव्ययं मंगलाचारइत्येकं नीचलाभ भविष्यति गुरुचिंतया-
रोगं रक्ततामवतान्वेन तथावितप्रयुक्तं गलक्षरोतिगान्यंच भृगुवाक्यनचान्यथा क्वचिताचमाप्नोति गुरुचिंताकारीरस्त भनव्ययनूनीति-
श्च जायतेनात्रसंशयः चंद्रवेदमितेवर्षे पंचबाणमितेतथा ईश्वरभक्तिनपरमत्र पर्वयात्रानुजायते रिपुभीतिसमायुक्तो दीनजातिरिपुभयंत थ-
नव्ययविवादेन समागेदेवसर्वतः लाभकार्यविशेषेण आनंदभूमिमंडलं उत्पीडाचनाप्नोति दानमंत्रचशांतये षटबाणमितेवर्षे सून्यरस-
मितेतथा इष्टदेवभक्तिविशेषेण इत्युतमत्रजायते शुभकार्यधनव्ययं मंगलाचारइत्येकं पुत्रपौत्रसमायुक्ता भाग्यवृद्धिर्दिनेदिने किं-
चित्कष्टविजानीयात शीघ्रधाप्रतिशांतये चंद्रपदमितेवर्षे सून्यसप्तमितेतथा पत्नीकष्टभयंघोरं भाग्यावनोनसंशयः मानसी विविधाचिंता
धनलाभोदिनेदिने स्थानयानप्रवृद्धिच जायतेसर्वसंपदा वृद्धलाभस्ययोगोयं भाग्यधनात्रसंशयः सर्वसुखंचप्राप्नोति भूयदानकोतसं-
ति चंद्रराममितेवर्षे षटरसश्चादिमध्यमा भूमिलाभनसंदेहो बालनादिसर्वमंडलं दक्षपदवी सुरवंमाप्ति आनंदभूमिमंडले अकस्मात
महत्वाप्ति शीघ्रधासयतपुत्रा चैत्रव्यापयेच ऋणमुक्ताभृगुवासरे धामितिनामनजाते भाग्यवृद्धिनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्रका फल
पढ़े माफी बहुत वृद्धि भाग्य न्यूनता मूल चिन्ता भूमिक याहा किसी कालमे ही सत्य वचन बोले यह जन्मो मे भी बड़े बड़े काम उठावे सुर्ये भी पुण्य-
दी रोग हारने करतु मे लाभ हो एक विपत्ति पड़े फिर मान रोगन रहे चिन्तमे तरह तरह के उपाय सोचे शत्रुको भय गुप्त शांति कि लोगु
इस पीत पुत्रमनुष्यके पूजन से संतान का सुख विशेष हो भक्त तज को इसरे बात की लेने तेजस्वी धनापेक्षा दानिको नत वचन भाजपूजनि मे
गुणगण कर जायदु फोमो एक कष्ट मानसमे पुत्र नजातन्म को पौर भयो किसी कालमे राज भूमि पद रचना अवश्य भय कारणमे पिन्तु हो इच्छा
भोजो मिलना धर्म आयुष्य धन मिले एक बड़ा भारी हो नाम रचे आयुपुत्र होय शुभ पूर्वजन्म मे पांच ब्राह्मणों के संमुख का तिरस्कार राम
ब्राह्मणों के निराने बैठना था और बड़े कोरमव ब्राह्मणों का नीचा आसन देख था सन कुण्ड मा बोलता था परन्तु इसका सिर घनफ और सहोरे के मु-
भूमें रखना सो पञ्चान्नधौ चला ब्राह्मणों को निदोष बड़ दिया करता तिनोनिमित्त धन ब्राह्मणो का दानाके जव मुनते और भोजन जिमाव शान्ति
तो धन संतान की वृद्धि की कामना पूर्णा हो ॥ ~ ॥ ~ ॥ ~ ॥ ~ ॥ ~ ॥ ~ ॥ ~ ॥

भृ.सं. कुं.फ. १२४

एवंप्रवयस्थित्वा मध्यभागीनबालकः नयनंदविनीतश्च दारापुत्रसमाकुलः सर्वलोकप्रियचलोकांति विद्यावानधनीनरः राजद्वा-
रेमान्येन भृगुणापरिभाषितः सुहृदश्चबलोधीर सुवीर अतिपूजिता जितेंद्रियंसत्यवक्ताच चारुशील विशालदृग पिकमपो-
क्तिपाटव संभकतो धनान्वितः सर्वसंग्रहकर्ताच आतितेजोमतिप्रदत्त सद्गुणीज्ञानसंपन्न कौशल्य कामिनीप्रियः कामक्रीडा
समायुक्ता भृगुवाक्यनचान्यथा प्रथमब्दे ज्वराकष्टं विशूचीद्वितीयके तृतीयब्देच मुखपीडा चतुर्थगुह्यपीडनं पंचमेवर्षे
जाते मंगलाचारदायक षष्ठेवासप्तमेवर्षे विद्यारंभप्रजायते बुधयोगजानीयात् भृगुवाक्यनसंशयो अष्टमेवर्षसंप्राप्ते त्वरणं
ज्ञानजायते विद्याभ्यासकर्तव्य शुकवानचजायते विद्याचर्यमिन्नभ्यासी अंकविद्यानिपुणच द्वादशाब्दवर्षे महत्वादि प्रजायते
शीघ्रधनप्रवृद्धिश्च ज्ञात्वदाननसंचयः तातधनशुभकार्ये विवाहोत्सवमंगलम् त्रिपादशमितेवर्षे पितृलाभप्रजायते मातृ
पीडाभवेत्किंचित ज्वरकोपसमुद्भवः चतुर्दशमितेवर्षे रजतकनकभाषितम् मृदयवस्त्रपानंच वर्द्धनेगृहमंडले पंचदशमितेच-
र्ये विवाहयोगजायतु एशीलसमायुक्ता लक्ष्मीरूपानसंशयः षोडशवर्षसंजातो पितृकिंचिन्तमन्वितः वायुपीडासमायुक्ता कष्टपातु
मजायते सप्तदशमितेवर्षे पितृलाभनसंशयः उत्तरविशेषचन्यादिशि पत्न्यागमनजायते चंद्रनेत्रमितेवर्षे बाणनेत्रमितेतथा पृथ्वी
भ्रमणसदैव अत्रप्राप्तिनसंशयः नवीनकार्यकंकृत्वा लाभमाप्तिश्चमध्यमा षट्नेत्रमितेवर्षे सून्यरामितेतथा नवीनोकार्यक-
चितयन भाग्यवृद्धिविशेषतः पत्रपुत्रीचदश्यते आनन्दभूमिमंडलं चंद्ररामामितेवर्षे बाणरामुमितेतथा देहकष्टविजानीया
त् भाग्यवृद्धिदिनादिने कृपापत्रत्वलावृत् सुतस्तनततकातः महामृत्युंजयजापं चंद्रलक्षप्रमाणकं दानमंत्रकृतेजापं भाग्य- रा
वृद्धिर्दिनेदिने षट्रसमितेवर्षे सून्यवेदमितेतथा मध्यगाभाग्यकथने भृगुणापरिभाषितः महत्प्राप्तिसंतोन्सात्ते लाभोमे
पतिनान्यथा भूमिलाभविजानीयात बालनादिसुखमुक्त मानसीविविधचिंता शत्रुतावविरोधता धनव्ययशुभंकार्य विवा
होत्सवमंगलं गृहकष्टविजानीयात् शीघ्रभीसत्रशांतय चन्द्रवेद ~ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

तथे चंद्रबुद्रमितवर्षे मृत्युचारणमितेतथा भूमिलाभनसंदेहो धनव्ययविशेषतः गुरुचिंताशरीरेच बंधुकलविरोधता चौरे
भृ.कं. भीतिमियलोक भृगुणपरिभाषित पुत्रपौत्रचितः चिता पत्नीक्लेशागुणता ज्वरव्याधीभविष्यंति पीडावृद्धिदिनेदिने छायापात्र
कुं.फ तुलादानं कियतव्याधिन्यूनता गजद्वार उपाधीच शत्रुपक्षविरोधता शुभस्थानमहाचिता पश्चात्तापिपरंतथा धनव्ययशुभं
कार्ये विवादात्स्वसगलं चंद्रबाणाभनवर्षे मृत्युघटामितेतथा भाग्यवृद्धिविशेषेण लाभोभवतिनान्यथा चंद्रबाणमहाभीति चिंत-
नाच्चितामाप्नुयं वाहनादिकतेजोपि धनलाभविशेषतः इष्टदेवभक्तिविशेषेण तीर्थयात्रादिककृते परकार्येच उपकारी शुभकार्येषु
५२५ नव्ययं वाहनादसुखलपि उभयपक्षवनाप्नुयं पुत्रपौत्रसमायुक्तो मंत्रदानकृतेसंत चंद्रघटमितवर्षे मृत्युमत्तमितेतथा तीर्थयात्रापि
कृत नूतनं सौख्यं संभवः भूमिलाभनसंदेहो रत्नाभद्रमंदरः ईश्वरभक्तिविशेषेण तडागपुष्पवाटिका पुत्रदानकृतेनापि वाला
विप्रजनमहत नेत्ररोगकाराकस्ते जायतेदीर्घचितन आदित्यहृदयजापं रविदानकृतेनापि कृत्वाशु सुखमाप्नुयं नाव कार्यविचारणा
एकस्मात् महाव्याधी औषधीसेवनश्रवा देवसाध्यकेभक्त व्याधिवृद्धिदिनेदिने श्रवणकष्टपरकृते द्विनीयाभीमवासरे आमिषा
सेवितानंपाल भृगुणगदना नवाग्रः ॥ भाषा- इस पत्र का फल यह है बहुत उत्तम तनमतापक है मनकागुण भेद किसी कोन
है विद्या में बुद्धि विशेष हो सत्य बोलने वाला सब का भला चाहे पराये काम मन से करे पिछली आयु में विना परिश्रम धन मिले बहुत प्रकार
के प्रयत्न किया करे पुन चिन्ता मन जीव को तृष्णा बनी रहे परन्तु संतान निमित्त पूजा में इसको पूजा करे संतान का विशेष दुःख हो
और नये मकान भूमि मिले आदि काम आयु से बाहर होवे अन्य से नया जन्म का फिर आयु पूर्ण हो एक जीव में चित्त बहुत रहे उ-
योग बहुत करे बड़े बड़े सामने तिरपर मिले है शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव शुद्ध स्थानों में एक वृद्ध गुरु का पुजारी था स्त्री का आभूषण धा-
रण करे दाता की पूजा करता था गायत्री का चरणामृत दिया करता परंतु दक्षिणा चढ़ाने वाले को विशेष प्रसाद दिया करता था और फल-
फूल चढ़ाने वालों को दुःखित मन से देता था इस कारण भाग्य मंद तथा तिसु निमित्त मंद कुआ बनवावे गो ब्राह्मण को भोजन देवो धन संतान
की वृद्धि की चिंता मिटे मनोकामना पूर्ण हो और शरीर स्वस्थ रहे भूमि से गुप्त धन की प्राप्ति हो दान से मनोरथ पूर्ण हो ॥ ॥ ॥

एतद्योगभुवजन्म चंद्रभागीचबालकः तातमातमहत्सौख्यं जीवनं सफलं ममः सत्योदीसत्यवक्ताच असत्यवचनवृत्तेन दृष्टवंतममाइश्चैव
भृ.सं. भूषणापरिभूषितः परस्त्रीसविशेषो प्रमोदीप्रसन्नःपुमान सदाउर्ध्वमहोत्साहो विनोदहास्यवान धनीमानीहात्यशीच सुतवारदयान्वित
कुं.फ देवद्विजरतोनित्यं मनापीडासमुद्भव सखीभोगयुतः पुत्र प्रियवक्तासुमतिवान सुवृद्धदीर्घआयुस्याद गिरावत्सरेषुवर्षे श्रीमानबहु
प्रतापीच शास्त्रकलाभूषितोपि पंचस्त्रीगोपालान तीर्था सत्कीर्तिवालवर्द्धन मृगलिगरिवरणाश्च भृगुवाक्यनचान्यथा प्रथमेद्वितीयेवर्षेच तु
तीयसप्तमेतथा ज्वरपीडातृणकाष्ठ क्षोभदृष्टापिरचितु मातृदुग्धनलाभ्यते घृतदुग्धसेवनं ज्ञात जातयोगच्चप्राप्नोति मंगलाचार हर्षकं मातु
५८६ कष्टविनाशयात श्रावधीमानवानुष अष्टमनवमवर्षे द्वादशाब्दविधीक्रमात सर्वसौख्य तथायुक्तो विद्यालाभविशेषतः विवाहादिशुभकार्य
मानप्रीतिचवर्धनं सुमतिहसर्वलोक बालकांडा फोलिलकं पत्नीयोगच्चभवेति तातमातच हर्षकं दि धर्मपक्वजीव मध्यविघ्नाच
प्राप्यते तात लाभधनयोगे श्रावणभूमिमंडले तृपाददशषोडषेवर्षे सत्यनेत्रचनभूवा तीर्थचिंताचप्राप्नोति तत्रधनभूपव्यय हिरण्यम
ननंदहो पत्नीकांतिरुगाश्रय पितृपीडायुक्तमध्य गायत्रीमंत्रजापकं दानमनज्ञातसंत व्याधीनष्टदिनेदिने मनत्याशभवोन्माद लाभोसेव
आगतान्यथा शनिवर्षे सप्तमाप्ति तीर्थलाभनसंशय पत्नीमानभविष्यति श्रावणभूमिमंडल चंद्रनेत्रमितेवर्षे मृत्युबाणमितेतथा तत्र संपूर्णप्राप्ता
ति पुत्रसत्यंचप्राप्नुय पुत्राचचमत्कारक्रियतफलदायक नवीनकार्यकचिंता संतशांतिसंजिष्याते मकस्मात उपद्रवा धनव्ययविशेषतः
शत्रुपक्षविरोधीच पुत्रचिंताशरीरज भयवृद्धिसर्वनाशि शुभकार्ये धनव्यय दानमनःकृतजाप वंशवृद्धिभविष्यति लोकधनुविरष्याता द्वंद्व मृ
त्युनसंशयः चंद्ररामभितवर्षे मृत्युवेदमितेतथा दीर्घकायकारुजीव लाभोभवतिनान्यथा गृहेच धनलाभम शुभकामाधिपोभवेत धु
नस्याइद्रपजाचा धनवृद्धि दिनेदिने पुत्रपौत्रसमायुक्तो भाग्यवृद्धिविशेषत विवाहादि धनव्यये प्रतिष्ठा धनुलोकेषु गृहकार्य भविष्यति
ज्ञानमवचदानयो। ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

धनकालपूरानपः ओतिरेत्राच विख्यातो भूमिलाभभविश्यति धनव्ययेतामकार्यं विवाहोत्सवमंगलम् मासेवर्षे प्रवर्यानि भाग्यो
सू सं / ६ फ — दयदिनेदिने महद्युतिमिहोत्साहो लाभोभवतिनान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षे सुन्यबाणमितेतथा भूमिलाभभवेत्काले धनधान्यसमागा-
मः परस्त्रीभजतीति आनदभूमिमंडले उवर्णवस्त्रभामक्तो पदमेस्थानपूजनं दानभिनककृत्यव्ययम् अल्पसुखसुतानि धनधैर्याज्फलयुत
धनधान्यसमागमः धनस्थाननपूजनं बलणयोगिचमानयं श्रावितामहत्कार्य गृहएवधनन्नान्यथा माहपर्यमुखशांति लाभमथाति
६.५ — मान्यमु चद्रबाणमितेवर्षे सुन्यषटमितेतथा सर्वसुखचप्राप्नोति भाग्यवृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात व्याधिवृद्धिर्दिनेदिने मान
सीचिंताचिंता मंत्रानचशांतये रामहारकीर्ति वर्तितनोमतिक्षयो धनव्ययशुभकार्ये विवाहोत्सवमंगलम् शत्रुपक्षविरोधस्त्यात्-
पश्चात्चपराजयः एतच्च धनप्राप्ति भाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रबाणमितेवर्षे सुन्यनंदमितेतथा बालवात्सल्यभयापि सैत्सदसादिभक्तिया-
नवीनोत्ताभकोत्रुय भाग्यवृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात औषधी मंत्रशांतये बालनादि भजनानि इत्युपदेशेपित्माभके फलाकष्टभदं
यारं माणमनुमानतातत्यु मानसीचिंताचिंता धनलाभदिनेदिने निजदेहभ्रकाकर्से व्याधिवृद्धिदिनेदिने बैद्यापायकज्ञात्वा औषधी
मसनकृपा स्नेहबलपत्न्या तृतीयाभौमवासरे पुष्पपासगुनस्तात आरोग्यदानप्राप्यः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का फल ये है कि यह बहुत
[illegible] यतेस्था पाते परंतु अपना जीवन तुच्छ समझे बेतात सबको स्त्री को चित्तमें पुत्रों की लालसा बनीरही परन्तु संतानभो-
[illegible] पंचम भानुका मतन वास्ते भेद है बड़े आदमी इज्जत वाले लाभ प्राप्ति लाभस्थान के देव का पूजन दान आप से लाभ की वृ-
द्धि होती अकस्मात् भारी का भय हो एक अवस्थामें अल्प पश्चात् तत्काल लगाना चित्तास्थिर नरक गुप्त धनमिले गाय की नकले रामद्वार में इ-
ज्जत है एक पूर्वजन्ममें बड़ा पंडित विद्वान हो अमृतवतुटपर कथा सुनाये करता भक्तोंसेथा पुत्रप राना भारत व और वंशा आभयता कुष्ठादिको — रामः
दक्षिणा चढाने व परन्तु चित्त कथायमान होकर स्त्रियों की चेष्टामें मासक रहनेलगा देवत में पाडित साधु मनमें कपट विसकारता चिना म-
भक्त गुणावितालिकलामित ब्राह्मणों को भोजन और संध्या दान करेतो धनसंतान की वृद्धि हो कष्ट हो ७५ वर्ष तक पृथ्वी पर निश्चय करके आनन्द
भोग ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥

एकयोगचप्राप्नोति बहुभाग्यश्चबालकः लोकंधेनुविख्यातो वहसेवीनरोभवेत् दाताभोक्ताकृतज्ञश्च भृगुणापरिभाषितः नयथी
भू गं — नानाधनंचाप्ति वाहनादिसुतंमहत नमोदोत्तत्यवक्तात्तु परकार्योपितत्परः विद्याविनयसंपन्नो उच्चीपदेणसंयुतः कामीवापमेवेतन्न-
कुं फ — का मित्रप्रीतिविशेषतः पुत्रप्राप्तिनिसंदेहो आनदभूमिमंडले उन्मतकामदर्पोपि कस्मिन कालक्रोधयो नवीनोचितवनं कृत्वामित्र
प्रीतिश्चभाग्यश्च पुत्रमरत्नंचप्राप्नोति नवीनाजन्मशांतये दीर्घायुश्चनसंदेहो दुःखसुखादिभोगान पंचभवनापिपूज्यते देशावृद्धिविशेषतः
द्विभार्याच्यागमप्राप्नोति सप्तमभवनप्रलनम् कस्मिन्काल महाकोध तृष्णावादकृदृण्यः वायुपीडाशरीरेच वैद्यापायशांतये तृतियस
५८८ — नमेवर्ष बालकादिकल्लोलके मंगलगनृग्रहमध्ये पत्नीयोगशांतये बुधभ्रत्तोतिसमायुक्तो तानधनशुभकार्ये भृगुणापरिभाषितः प
ुमेद्वादशवर्षे मध्यगयावध्यूत तत्चिंताभवतमुक्त जीवकाशोपिदुःखिता बुधभासेगतेकाव्य वामपीगदशांतये भाग्यविभागप्राप्नोति
मित्रसहितकिल्लोलके बुधभ्रमीचप्राप्नोति शुभकार्येधनव्यय जलाभयपदपीडा भृपस्चपपाश्रयः तृतीयद्वादशवर्षे व्यामनवंच-
मृत्युमा द्विरागमनसंदेहो पत्नीतिशांतये विद्याधनकृतवृक्त उच्चपदवीचशांतये पत्नीगर्भसंदेहो सुतमागभविष्यति गृहमध्ये
पितामह जीवनसुफलमनः नवीनकार्यकाचिनहत भाग्योदयदिनेदिने द्वयाचितामहाज्ञाके गुरुकोशशसेषे अकस्मात् पुत्रार्थस प्र
न व्ययविशेषतः चंद्रनवमितेवर्षे सुन्यपुनमितेतथा एककन्याचप्राप्नोति अल्पजीवीचबालकः शुभकार्ये धनेव्यय विवाहोत्स
वमंगल कर्वचिंताचप्राप्नोति पुत्राचिंताशरीरजे कार्यमभ्यप्राप्नोति भृगुवाक्यनचान्यथा गुप्तंचधनेलाभं भाग्यवृद्धिविशेषतः
धनकष्टमसंशयः शीघ्रचौमवशांतये महामृत्युंजयजापं चंद्रलक्षप्रमाणकं दानमंत्रकाते सत सर्वकष्टप्रशांतये चंद्ररामामि-
तेवर्षे सुन्यवेदमितेतथा भवेतुसुखप्राप्नोति जीवचिंताचदीर्घता कस्मिन कालदुष्प्रीया अतिविपत्ति बालके धनव्ययवृथाशुक्र
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ९
९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

भृ·सं·
कु·फ·
५८६

त्वद्योगे समुत्पन्नो मध्यभागीमबेचरः ॥ जन्मतो मातृबाधा च जायते च महोत्सवम् ॥ आनन्द मंगलाचारं तातमातृसुखप्रदः ॥ बालबुद्धि भवेल्लोके कष्टया-
धि विनश्यति ॥ तातमातमहानंदं साफल्यं जन्म चोदिता ॥ यथा रेफ प्रवर्द्धेत धनसंपत्समृद्धिमान् ॥ स्वजने तु कुलं तेन विशेषापितु चिन्तनम् ॥ भ्रातमैत्री
समायुक्तो मध्यमायां पितृखंडिता ॥ नानाकाम्य कृते भूमी सुखञ्चो कान्तिता भवेत् ॥ दानमंत्र महत्पुण्यैः सर्वव्याधि विनाशनम् ॥ शुभकार्य्ये गयो भूमने घरोभ्य
माणदः ॥ पश्चात्तु रोगशातव्या दुःखस्य रातेन सर्वदा ॥ जनतोषं तु ... कर्तव्य द्विविशेषतः ॥ नानाभोग्य समायुक्ता पूर्णा च स्तुत्य प्रदा ॥ सुवर्णो कुत्र
दारेषो महाज्ञाननशान्तये ॥ चिन्तुचिंता कदाकाले व्याकुलत्वाविनायते ॥ नेत्रभाग्यादेव पुत्रो व्यापकुलीय चिन्तनम् ॥ शुभस्तु भवेल्लोके मत्पक्ष श्चापि तु
न्मनता ॥ पूर्वेपापप्रभावेण महाचिन्ता च दृश्यते ॥ वंशवृद्धि महादि नैव पूर्णो धनी सुखी ॥ पापशान्ति प्रयत्नेन सर्वसौख्यप्रमोदा ॥ धनसुखमनोरंगणां
जायते विनिधि सुखम् ॥ आद्यवर्षे द्वितीये च मंगलविविधात्सवम् ॥ मासवर्षे सुखं तात बालकोऽपि यथा क्रमः ॥ शरीरकष्ट मेघ्वाउपचारेण शान्तये ॥ तृतीयेन
त्वायाब्दे अर्थवृद्धिः सुयत्नतः ॥ शिशुत्वे ज्ञाविशेषेण अकस्माच्च मृत्युभयम् ॥ ईश्वरभक्ति भवेल्ल दानमंत्र सुखप्रदा ॥ रसेब्दे सत्यं चंद्रेच शिशुवृद्धि पुनः
पुनः ॥ विद्याभ्यासरतोऽन्वर्ने चाडने मतितत्परः ॥ मातृकाम्यपोपि जायते सुखवर्द्धनम् ॥ शाशितोम मितिवर्षे तथा पंचसुन ध्यमा ॥ नानचिंता विशेष
पावशाद्यो मंगलकाले ॥ दानमंत्र सुपुण्यैश्च सर्वसौख्यान्वितो जनः ॥ त्वयत्नको शितानूने अकस्मात् यतिन्नतम् ॥ सुखात्सुख संपन्नो कुलपालक शाली
नः ॥ नृपमान्सवंप्रयत्नेन पुण्यमार्गे मतिस्थायेत ॥ अनिष्टमानविभयो वृद्धत्वस्त्कता भुवत् ॥ चिंताचिंता कुकाले उनरत्नं सुमोद्भवः ॥ मातेनु षड्मो वृषे
विंशवर्षान्तरे तथा ॥ महत्तमाधिकं प्राप्य राजे ने सुखमंदिरे ॥ नारीभाग्यविलासश्च भोगाभक्तो भवेन्नितुन ॥ महामृत्युं नयो तानि पुण्यं कार्यविना
शनम् ॥ शशिनेश्च व्दमारम्य पंचयुग्मतमान्तरे ॥ सुतापुत्रसमाकुलो द्रव्यलाभञ्च शांविता ॥ विशेषो चाप्यं संजाते चिन्तनीयं सुलोकता ॥ दानमंत्र सु
दावेश इष्टभक्ति भावतः ॥ अपोमानं मतिसत्त्व भविते उपद्वेभयाः ॥ पसेनवाब्द विंशे च तथा रत्न मंत्रन्तु सुखम् ॥ मतिसमानविभयो वर्द्धते भाग्यकारणम्
अयुक्षेमानसी चिन्ता विविधं कथभाजनः ॥ इन्दुसमगने वर्षे पंचपञ्चितमान्तरे ॥ भाग्यप्रभवो नित्यं पर्वेतेमोदितो जनः ॥ त्वरेण पीड्यतो दीर्घः
स्वनांपानुस्पति कृपा ॥ श्रीकृष्णे सेवनं पुण्यं सर्वरोगविभंजनम् ॥ नखनमपि शोनित्यं पूर्वपाप विनाशनम् ॥ विग्रहोवि मीयते मर्वसुख सम्प-
दा ॥ विवाहो मंगलं शान्त्यं पतिसंद मोदिता ॥ अयलाभे विशेषेण सत्यात्र शुभलिङ्गितम् ॥ २ ॥५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

भृ·सं·
कु·फ·
५८६

त्वद्योगे समुत्पन्नो मध्यभागीमबेचरः ॥ जन्मतो मातृबाधा च जायते च महोत्सवम् ॥ आनन्द मंगलाचारं तातमातृसुखप्रदः ॥ बालबुद्धि भवेल्लोके कष्टया-
धि विनश्यति ॥ तातमातमहानंदं साफल्यं जन्म चोदिता ॥ यथा रेफ प्रवर्द्धेत धनसंपत्समृद्धिमान् ॥ स्वजने तु कुलं तेन विशेषापितु चिन्तनम् ॥ भ्रातमैत्री
समायुक्तो मध्यमायां पितृखंडिता ॥ नानाकाम्य कृते भूमी सुखञ्चो कान्तिता भवेत् ॥ दानमंत्र महत्पुण्यैः सर्वव्याधि विनाशनम् ॥ शुभकार्य्ये गयो भूमने घरोभ्य
माणदः ॥ पश्चात्तु रोगशातव्या दुःखस्य रातेन सर्वदा ॥ जनतोषं तु ... कर्तव्य द्विविशेषतः ॥ नानाभोग्य समायुक्ता पूर्णा च स्तुत्य प्रदा ॥ सुवर्णो कुत्र
दारेषो महाज्ञाननशान्तये ॥ चिन्तुचिंता कदाकाले व्याकुलत्वाविनायते ॥ नेत्रभाग्यादेव पुत्रो व्यापकुलीय चिन्तनम् ॥ शुभस्तु भवेल्लोके मत्पक्ष श्चापि तु
न्मनता ॥ पूर्वेपापप्रभावेण महाचिन्ता च दृश्यते ॥ वंशवृद्धि महादि नैव पूर्णो धनी सुखी ॥ पापशान्ति प्रयत्नेन सर्वसौख्यप्रमोदा ॥ धनसुखमनोरंगणां
जायते विनिधि सुखम् ॥ आद्यवर्षे द्वितीये च मंगलविविधात्सवम् ॥ मासवर्षे सुखं तात बालकोऽपि यथा क्रमः ॥ शरीरकष्ट मेघ्वाउपचारेण शान्तये ॥ तृतीयेन
त्वायाब्दे अर्थवृद्धिः सुयत्नतः ॥ शिशुत्वे ज्ञाविशेषेण अकस्माच्च मृत्युभयम् ॥ ईश्वरभक्ति भवेल्ल दानमंत्र सुखप्रदा ॥ रसेब्दे सत्यं चंद्रेच शिशुवृद्धि पुनः
पुनः ॥ विद्याभ्यासरतोऽन्वर्ने चाडने मतितत्परः ॥ मातृकाम्यपोपि जायते सुखवर्द्धनम् ॥ शाशितोम मितिवर्षे तथा पंचसुन ध्यमा ॥ नानचिंता विशेष
पावशाद्यो मंगलकाले ॥ दानमंत्र सुपुण्यैश्च सर्वसौख्यान्वितो जनः ॥ त्वयत्नको शितानूने अकस्मात् यतिन्नतम् ॥ सुखात्सुख संपन्नो कुलपालक शाली
नः ॥ नृपमान्सवंप्रयत्नेन पुण्यमार्गे मतिस्थायेत ॥ अनिष्टमानविभयो वृद्धत्वस्त्कता भुवत् ॥ चिंताचिंता कुकाले उनरत्नं सुमोद्भवः ॥ मातेनु षड्मो वृषे
विंशवर्षान्तरे तथा ॥ महत्तमाधिकं प्राप्य राजे ने सुखमंदिरे ॥ नारीभाग्यविलासश्च भोगाभक्तो भवेन्नितुन ॥ महामृत्युं नयो तानि पुण्यं कार्यविना
शनम् ॥ शशिनेश्च व्दमारम्य पंचयुग्मतमान्तरे ॥ सुतापुत्रसमाकुलो द्रव्यलाभञ्च शांविता ॥ विशेषो चाप्यं संजाते चिन्तनीयं सुलोकता ॥ दानमंत्र सु
दावेश इष्टभक्ति भावतः ॥ अपोमानं मतिसत्त्व भविते उपद्वेभयाः ॥ पसेनवाब्द विंशे च तथा रत्न मंत्रन्तु सुखम् ॥ मतिसमानविभयो वर्द्धते भाग्यकारणम्
अयुक्षेमानसी चिन्ता विविधं कथभाजनः ॥ इन्दुसमगने वर्षे पंचपञ्चितमान्तरे ॥ भाग्यप्रभवो नित्यं पर्वेतेमोदितो जनः ॥ त्वरेण पीड्यतो दीर्घः
स्वनांपानुस्पति कृपा ॥ श्रीकृष्णे सेवनं पुण्यं सर्वरोगविभंजनम् ॥ नखनमपि शोनित्यं पूर्वपाप विनाशनम् ॥ विग्रहोवि मीयते मर्वसुख सम्प-
दा ॥ विवाहो मंगलं शान्त्यं पतिसंद मोदिता ॥ अयलाभे विशेषेण सत्यात्र शुभलिङ्गितम् ॥ २ ॥५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

कु.सं.
कुं.क.
५६०

रत्नमानन्दरोकाव्य चत्वारिंशाद्ब्दमध्यगा॥ पुण्यकर्मप्रभावाद्वा सर्वसौख्यं च मंगलम्॥ मासेषु पंचस्वतीतेषु मनश्चाञ्चल्यपरिजिता॥ दैवान्नराज्ञो वाञ्छा
मयैश्वर्य त्यागता॥ मनाप्युक्त सुप्यास्तु वै नूतनोकाप्येनाभवे॥ षंक चत्वारिंशद्वर्षे विधौ व्योमपंचके॥ शरीरकष्टं तपश्चोरी धर्मचिंतातुरो जनः॥ महार्ता
नमुर्मवेण भगवद्भक्ति भावतः॥ अपेमाने सुखीलोके संपदासंनियो महान्॥ प्रजापभोग्वृद्धिश्च राजते सुख संपदा॥ मासेषु षष्ठे दुःखं लाभ माप्नि
श्चहृदयः॥ चिंतयेद्विविधं कार्य्यं सर्वकर्माणि साधका॥ पूर्वपुण्यप्रभावेण अल्पमृत्युनिवारणम्॥ भाग्यवृद्धिर्विशेषेण साफल्यं मपयजीवनः॥
राशिपचगतेयर्षे पंचजन्मं च मोदिता॥ व्योम पक्षान्तरी काव्यः साफल्य सर्व वैभवाः॥ देवदर्शन तीर्थं च पवित्रं कियते वपुः॥ पुण्य कर्म विशे-
ईश्वराराधनं मतिः॥ सुजनेभ्यः परं प्रीतिः सर्वेषां मानसो महान्॥ भूमिभा भीतुरुता स्तवं रत्न भूषणम्॥ पुण्य कर्माश्रयो जीवः सर्वदा सुख वर्धिनं दासभार्ग
नैराश्यं मोदते पुण्य चैनधाः॥ वेदत्वंगते वर्षे प्रपंचं जन्म अभिवः॥ मनश्चा शूंजगो मत्ताः ईश्वर ध्यान तत्परो॥ व्योम ब्याल मिति माघः भाषते मुनि
सत्तमा॥ उपात्तश्च सुखं नाम यत्र कुत्र प्रशंसितः॥ अनिंद्यजन्मोत्पन्नः भूयसे मोदभाजनः॥ पुण्यसाम्यानुसारस्तु इतितत्व वचो मम॥ ८॥
भाषा- इस योग में जन्म होने से यह जन मध्यम भाग्यवाला होता है प्रथम अवस्था में राज्य विशेष की तुल्यता दान अन्नदान और मृत्यु मृत्यु जय तथा जप इत्यादि
कानों का पूजनादि करने से विशेष कष्ट का नाश होता आनन्द होता है अल्प मृत्यु नष्ट हो दिनोंदिन शुभ भाग्य बढ़े मन की इच्छा पूर्ण हो परन्तु प्रथम पाप के कारण
वैराग्य की वृद्धि होती है अत्यंत चिंता और क्लेश भोगता है पुत्र अथवा जन्म में यह जन वैश्य कुल में उत्पन्न हुआ था अत्यन्त धर्मात्मा सत्य सर्व सुख भोगता था एक समय
यात्रा पर्व में स्नान के निमित्त रथ में बैठ कर तीर्थ को जाता था मार्ग में इसके पहिये से एक गऊ कुचली गई अपने पूर्वाचरित के चलने के अनुसार इसलिये इस जन्म में
से पाप से यह जन इस जन्म में कष्ट क्लेश का भागी होता अनेक आपत्तियों में पड़ता है जब तक इस पूर्व पाप का यत्न न करे पूर्ण सुख न पावे इस की शांति के निमि
त यथा श्रद्धा दश गौ का दान करना उस पर यथाविधि गोदान चंदन से पूजा सहित स्वर्ण की गौ का चित्र बनवाकर श्वेत वस्त्र में लपेट और तांबे का पात्र अध्याय का विधान से राम
कलश स्थापन कर ब्राह्मण वेद ज्ञाता मंत्र जाप गायत्री मंत्र जप यथा भक्ति पूर्वक दान मंत्र जप यथा भक्ति पूर्वक दान करे आचार्य को दे और ईश्वर की भक्ति में
मन लगावे तो समस्त पाप नष्ट हो मनोवांछित फल पावे अल्पायु का नाश होवे पूर्ण अवस्था भोगे सम्मान और धन उत्तम स्त्री आदि सवारी आदि सम कष्ट सुख नित्य
प्रति करते रहें दान मंत्र जाप और परमात्मा की भक्ति के प्रभाव से सब सुखों को भोग अंत में स्वर्ग को जाय फिर उत्तम वैश्य कुल में मोक्ष का पात्र बने परम पद पावे॥ ८॥

कु.सं.
कुं.क.
५६०

रत्नमानन्दरोकाव्य चत्वारिंशाद्ब्दमध्यगा॥ पुण्यकर्मप्रभावाद्वा सर्वसौख्यं च मंगलम्॥ मासेषु पंचस्वतीतेषु मनश्चाञ्चल्यपरिजिता॥ दैवान्नराज्ञो वाञ्छा
मयैश्वर्य त्यागता॥ मनाप्युक्त सुप्यास्तु वै नूतनोकाप्येनाभवे॥ षंक चत्वारिंशद्वर्षे विधौ व्योमपंचके॥ शरीरकष्टं तपश्चोरी धर्मचिंतातुरो जनः॥ महार्ता
नमुर्मवेण भगवद्भक्ति भावतः॥ अपेमाने सुखीलोके संपदासंनियो महान्॥ प्रजापभोग्वृद्धिश्च राजते सुख संपदा॥ मासेषु षष्ठे दुःखं लाभ माप्नि
श्चहृदयः॥ चिंतयेद्विविधं कार्य्यं सर्वकर्माणि साधका॥ पूर्वपुण्यप्रभावेण अल्पमृत्युनिवारणम्॥ भाग्यवृद्धिर्विशेषेण साफल्यं मपयजीवनः॥
राशिपचगतेयर्षे पंचजन्मं च मोदिता॥ व्योम पक्षान्तरी काव्यः साफल्य सर्व वैभवाः॥ देवदर्शन तीर्थं च पवित्रं कियते वपुः॥ पुण्य कर्म विशे-
ईश्वराराधनं मतिः॥ सुजनेभ्यः परं प्रीतिः सर्वेषां मानसो महान्॥ भूमिभा भीतुरुता स्तवं रत्न भूषणम्॥ पुण्य कर्माश्रयो जीवः सर्वदा सुख वर्धिनं दासभार्ग
नैराश्यं मोदते पुण्य चैनधाः॥ वेदत्वंगते वर्षे प्रपंचं जन्म अभिवः॥ मनश्चा शूंजगो मत्ताः ईश्वर ध्यान तत्परो॥ व्योम ब्याल मिति माघः भाषते मुनि
सत्तमा॥ उपात्तश्च सुखं नाम यत्र कुत्र प्रशंसितः॥ अनिंद्यजन्मोत्पन्नः भूयसे मोदभाजनः॥ पुण्यसाम्यानुसारस्तु इतितत्व वचो मम॥ ८॥
भाषा- इस योग में जन्म होने से यह जन मध्यम भाग्यवाला होता है प्रथम अवस्था में राज्य विशेष की तुल्यता दान अन्नदान और मृत्यु मृत्यु जय तथा जप इत्यादि
कानों का पूजनादि करने से विशेष कष्ट का नाश होता आनन्द होता है अल्प मृत्यु नष्ट हो दिनोंदिन शुभ भाग्य बढ़े मन की इच्छा पूर्ण हो परन्तु प्रथम पाप के कारण
वैराग्य की वृद्धि होती है अत्यंत चिंता और क्लेश भोगता है पुत्र अथवा जन्म में यह जन वैश्य कुल में उत्पन्न हुआ था अत्यन्त धर्मात्मा सत्य सर्व सुख भोगता था एक समय
यात्रा पर्व में स्नान के निमित्त रथ में बैठ कर तीर्थ को जाता था मार्ग में इसके पहिये से एक गऊ कुचली गई अपने पूर्वाचरित के चलने के अनुसार इसलिये इस जन्म में
से पाप से यह जन इस जन्म में कष्ट क्लेश का भागी होता अनेक आपत्तियों में पड़ता है जब तक इस पूर्व पाप का यत्न न करे पूर्ण सुख न पावे इस की शांति के निमि
त यथा श्रद्धा दश गौ का दान करना उस पर यथाविधि गोदान चंदन से पूजा सहित स्वर्ण की गौ का चित्र बनवाकर श्वेत वस्त्र में लपेट और तांबे का पात्र अध्याय का विधान से राम
कलश स्थापन कर ब्राह्मण वेद ज्ञाता मंत्र जाप गायत्री मंत्र जप यथा भक्ति पूर्वक दान मंत्र जप यथा भक्ति पूर्वक दान करे आचार्य को दे और ईश्वर की भक्ति में
मन लगावे तो समस्त पाप नष्ट हो मनोवांछित फल पावे अल्पायु का नाश होवे पूर्ण अवस्था भोगे सम्मान और धन उत्तम स्त्री आदि सवारी आदि सम कष्ट सुख नित्य
प्रति करते रहें दान मंत्र जाप और परमात्मा की भक्ति के प्रभाव से सब सुखों को भोग अंत में स्वर्ग को जाय फिर उत्तम वैश्य कुल में मोक्ष का पात्र बने परम पद पावे॥ ८॥

कुं·फ· ६१

घनयोगोद्भवो पुंसः मध्यभागिश्च सुन्दरम् ॥ मध्यपवक्तरोनूनं मध्यदेहो विशालधिः ॥ विद्या विनयपान्मान्त: शुभाचारं प्रतिष्ठितः ॥ लिंगनं याति
लंब्रयरूपयौवनसुष्पुक्तः ॥ सुतापत्रसुखास्तवें यशोतसाधनेमाति ॥ दैवमोक्षिविज्ञानीषा न्पितमीरर्घ्यंच मंदना ॥ गृहचिंताप्रपीडयते व्ययल्प
भागमल्पापि ॥ पूर्वपापविनाशार्थं ज्ञात्वापन्नसुतस्सभत ॥ विस्तृतिविंशनादोर्थैः प्रकाशविपर्ण भवेः ॥ नानाकार्यप्रबंधेषु राजतसुखसंपदा ॥ श्र
पुत्रेपीडितापापं कार्यसिद्धिश्च कष्टितः ॥ मनांसानि महचिंता शांतिभयविच्छुता ॥ श्रनस्तानि निपन्याच शांतये मुख्यामाच्छतः ईश्वराराधने-
णोत्रवनोमारभर्द्दनम् ॥ मनश्च्छाप्रतिनोनित्यं साफल्यसर्व वैभवाः ॥ प्रथमेद्वितीयेचवर्षे दशनोन्नतिजातकम् ॥ ज्वरतप्रशरीरेपि भनश्चाप्यर्वि
ब्दनः ॥ किंचिद्रलादि मंत्रेण श्रेयोमानं शुभागमः ॥ मासपक्षपूर्ण हालो शुचो पूर्णश्यथाशपिः ॥ तृतीये पंचमे वर्षे षष्ठवर्षादि सप्तमे ॥ बुराबाधुनंनी
श्रुते भाभेतुदारुणं भयम ॥ पुनश्च मोदितो बालः विद्याभ्यासोतिचंचलः ॥ शिशुक्रीडामतिन प्रोन्माद भयमनोहरम् ॥ नानभीति विशेषेण मंगलेहिदि-
नेदिने ॥ व्यालवर्षगते कार्यः तथाच द्वादशान्तरे ॥ मंगलकामयोगापि नानाप्रणदर्शवशा ॥ बालक्रीडारतोदीर्घः वनेषुपर्वनेचरन् ॥ भावनात्पादकष्टेन कुवानि
स्पतितो भयम् ॥ बाहुव्याधिविशेषेण सुपत्नसवशंतये ॥ पत्नीपत्नपुराण्युणानायनमंगलेपद्ध ॥ तुयादशाष्टनंदे ब्दे मीतकामभवर्द्धने ॥ मंत्रसारस्व
तोनाप्य: विद्यावन्तो विशालधि: ॥ कुलकोनिसम्सुशापि भाग्यवृद्धि दिनेदिने ॥ नारीभोगसमाशक्तो रूपयौवनचिन्तनम् ॥ मन्दुन्दुचान्देने बान्दे
सर्वमांगल्यसमागमः ॥ शरीरकष्टसपत्नोऽपशारोराशान्तये ॥ धनदस्त्येमशामंत्र जापितो वर्द्धितधनः ॥ सवमांगल्यसमृद्धिश्च नारीणां भोनि वर्द्धनुः ॥ मना-
पशोगनदिश्च मंगलगानमंदिरे ॥ सभत्रे नितनं लोके इष्यलाभोपिमंदिता ॥ चतुर्जीवविशेषेण आशक्तभीतिविह्वलः ॥ वेदयुग्मगते वर्षे व्यालवि
शाश्वमध्यगे ॥ सनापुत्रसमायुक्तो मोदितानात्रसंशयः ॥ मित्रभीतिविशेषेण किंचित्क्वापुभयं भवेत् ॥ ईश्वरं भक्तिभावेन भजनानन्दसंपदा ॥ प्रबनत्र
वि:भाव्दे नपारगतलावमः ॥ बृहस्लाभश्चयादीर्थः भयसमाप्य भुजनः ॥ मान कीर्तिविशेषेण धर्मोपिभगवद्दनेमहन ॥ विवाहमंगलकार्यं राम
माघुलेचमहत्तमस्॥ ईश्वराधने भीति सुपत्न मोदितेसदा ॥ वेदवान्दामितवर्षे तथा व्यालविशाखके ॥ सकल भूमितिष्टेतुपौने साधनेमाति ॥ काम
शक्तो हृदयगुप्तः वैराग्यदेवार्चितानुस ॥ द्रव्यलाभविशेषेण मनश्च्छा सर्वपूजिता ॥ भयभीतामुदयगृह फलानिहिर्घ्भीमनः ईश्वरं कृपयान्यु-
पय विश्राम नाप्यते सुख ॥ सुमित्र परम मीति उपप कार्यं महत्यशः ॥ सुता पुत्र सुखास्तर्थे गयलेश्वलक्ष्यनाय विवाहागमन कार्यं सर्वचिन्ता र

भृ·सं·
कुं·क·
५६२

चिनश्यति ॥ महत्त्वमाधिकं लोके तेजस्वी भक्तवत्सलः ॥ नंदविंशत्रिवेदाब्देतयो मध्यमक्लसुखम् ॥ सर्वचिंताविनश्यति मोदवृद्धिमंगलीशितः ॥ हिसुवोचंद्रकन्याच
मोदितोभक्तिभावतः ॥ गृहमीतिस्य नेस्तुंम: ईश्वरो ध्यानतत्परः ॥ कार्यवृद्धि विशेषेण विवेकोलाभसुत्तमम् ॥ सुतनेत्राभस्वान्तवृषे भ्यानिदिनेकथं
भूमिलाभमहल्लाभ भंश्चिर धनचात्सुखम् ॥ सर्वेश्यालापरिश्रमत्य देवाधीनं च सर्वदा ॥ सुअपरांसंस्व यानित्यं पवित्रीकृतं मनः ॥ देवदर्शनमापीतिः तीर्थ
भंगावितसवनम् ॥ मित्रशत्रुमहाकष्टं वर्षेरागमुविमुनम् ॥ वेदुवेदाब्द मारभ्य नंदचन्द्रामध्यगे ॥ माभेसाल्यभयं घोरं तनरत्नेशुभोद्भिदा ॥ पैतृअन्म
मवोत्साहो मंगलं शुभमंदिर ॥ मुक्तोपि स्यादितनोकोलिनकृपस मोक्षभाजनः ॥ शताब्द वत्सरो याति वेदवाणाब्दवान् पा ॥ मानेवंशसुखानित्य सर्वच्छाप्र
पूजितोजनः ॥ मन्यमार्गगतभवा मिथ्यापि सस्मृतेजगत ॥ अज्ञापभोगवृद्धित्व भक्तिसुपूत्तात्पर: ॥ पत्नीकष्टंभयं घोरं बाल्यमृत्युसमोभवेत् ॥ शालत
गतेवर्षे व्योमपक्षचमध्यमा ॥ रामनामजपेनित्यं दुर्बलकष्टपीडितः ॥ दानधर्मविशेषेण भवानंदसर्वदा भवानी मानदीमान्य: शुभानि ब्रह्मशांति
होमशांतिमतः ॥ पुष्पकर्मप्रभावेण सर्वसम्यासुखागमः ॥ लग्नसभगतेवर्षे आयुष्यो नसंशयः ॥ अनायासेतु नन्द्रन्य प्राप्यते चोत्तमागतिः ॥ व्यामल्या
उमितिमायुः वीर्यंपुत्रसुखमापि ॥ यथाग्रेराज्यगोदेवं ज्ञानपुण्यशुभाप्तो ॥ कर्मो धर्मं सर्वात्मयो भक्तियवेदनिश्चितः ॥ भापा॰ ॥ इसयो
गमेंउत्पन्नजन वालानिनलम्भ्यभोगीसुन्दर मध्यम बाय पैर वाला विशालबुद्धि विद्यावान चतुर और श्रेष्ठ आचरण युक्त हो लिंग में चापके निकट तिल का चिह्न रूप यौवन-
कालाभी पुत्रकन्यादि सपत्नुसे सुखयुक्त हो कर धर्म के साधन में मन लगावे परमात्मा कामकाज पिता का मंदसुख पावे लाभ धनादि काधिकाई मब कामका-
नके मनमें चिंता बने तिरस्कार २ शतुनाभी बोजाय पूर्व पापभी शांति का यत्न का स्वयं मनकी समृत्ताई इच्छा पुरी हो सारीगधस्या आनंदसे बीते धन मंदिर सुख पुत्र से भ-
पादिशयासुख प्रकार विशेष यज्ञांशो अपने कन्धकी भक्तारीत कार परंतु विनायक विपरीत फलपक्षर अनेक आपत्ति भोगी हो धन धनादि का पूर्ण सुख न पावे और उसकर
जगमें पवजनवल्लभ कुलीन बने भांति धनवान प्रतिष्ठित था परन्तु शास्त्र ज्ञान में रहित हो पालित्य भी रक्षा कुछ दान पुण्य न हो किया जाय धन इसके द्वारा पर भी
पानिकशौचके शितकाकार फिर भी अनेक आपत्तियों का सत्कार भृत्य बशूद्रादि पाप सहसजन्म में को शापिता कुल पातानि इसकी शांति की नांदकी काम्या
में पूजनभक्त यथाशक्ति गोदानादि गण दान देवकर भक्ति भावसे आचार्य को दान दे मनम नवग्रह की विधिसे सन्कृत्य करे तो शीघ्र ही पापसे छूटकर उत्तम भाग्य का भ
विचारी वनस्य सुख पावे और सारी अवस्था मनोच्छित फल भोगा फिर अन्य जन्म में उनका न पूर्ण सुख भास्य बारे ॥ · ॥ · ॥ · ॥ · ॥ ·

भृ·सं कुं·फ ५८३

सर्वं खेदं प्रमानेन योगोयं सुभकारकः ॥ नातिगौरेण ख्याता गौरोभ्याकार वक्षसः ॥ इत्यादि स्वर्गे वेमोदितेविविधैरपि ॥ मानहानिभयं दीर्घः
भूपालाच्च वकारकः ॥ नानाचिंतासदाधृकः किमपुनेपापकर्मणा ॥ दानमंत्रं सुपुण्येन सर्वं शांतस्तसंभवः ॥ हीनदवपरं गीतो भूमौ वृद्धिर्मोपि भूः ॥ बन्धु
वारोभवेलकः पूर्वपापाद्भवानः ॥ पुत्रस्तनकर्तव्यो धन उत्थापितो शिवः ॥ प्रायश्चित्तविधानेन पूर्वपापविनाशनं ॥ सर्वेषां सम्भवेत्सम्यक् धनप्राप्तिर्महा
न् ॥ विस्मृतिर्वशकारी दीर्घः सदाशादेवजो महान् ॥ तस्मात्सर्वं नयत्नेन कार्यं तत्र महावधिः ॥ सर्वं बन्धुसुखं जातं तत्र सपत्नसमृद्धिमान् ॥ जन्मकाले
समाश्रय पापमीवानि भूतले ॥ तावत्कालीयजनपोषा सुगावत्सम्भावता ॥ मध्यमं स्थितिपूर्वं बालवृद्धिर्भवेत् ॥ कदाचित् नापि भाग्यं पीडयन्
दुर्बलीवपुः ॥ पुनः शांतिस्तु सुसंज्ञा मासे वर्षे विवर्द्धनं ॥ वन्दित्वा बाणाब्दे बालकीडादिने दिने ॥ शरीरकष्टसपूर्वा तस्मात् शांतये ॥ चंचल
स्वपत्नीवांसः भाग्यवृद्धि दिने दिने ॥ रसेभ्दं मन्य चन्द्रेच बालकीडासुपरः ॥ जातकष्टविनष्टं च नैव रोगोपि मानदा ॥ विद्याभ्यासरता हानि मंगलाद्यारम्भ
चः ॥ तपोत्सवभूषणं च भाग्यते शोभिताशिशुः ॥ शोभनं नाब्दपंचेन्दु सुखवृद्धि दिने दिने ॥ विवाहो मंगलं कार्यं मत्वा सुमाप्यते स्त्रियः ॥ पश्चादेव भ
वर्द्धितं धनं सपत्नीसमृद्धिमान् ॥ रसेन्दुर्विशुवर्षे च भाग्योदयनसंशयः ॥ चंद्रर्तावर्षे भीते भाग्यके चिंतनं सदा ॥ कामकी सुखास्तवे भाग्यते वहलतस्स
पुत्रगात्र विरोधं च प्राप्यते नैव लोपते ॥ प्रायश्चित्तं कृते कार्यः सर्वावस्था सुमोदिता ॥ शशिवुम्मनगनेवर्षे पुनर्नवताज्वरः ॥ भाग्यवृद्धिर्न संदेहो कष्टपीडादि
चिंतनं ॥ पुत्रजन्म महोत्साहो तातमातुः सुखप्रदा ॥ नवकशवनस्मृति सुपत्नी सुतवर्द्धनः ॥ मानहानिभयं चिंता सर्वोपद्रवनाशनं ॥ भाग्यवृद्धिर्भवेल्लो
के सुलक्षणसनतंत ॥ वसुविशगतेवर्षे याम वाकृतनान्तरं ॥ मासत्रय सुखजातं सुकृत्यं शुभलक्षणं ॥ चिंतुचिंतावृद्धत्योपि दानमंत्रेण शांतये ॥ प्रायश्चि
त्तकृते योगो भाग्यं प्राप्यते नित्यं ॥ शुभकृत्सया पितृ किंतुपनेवहनत्परः ॥ शशिरामाब्दमारभ्य पंचवर्षे विशेषम्यम् ॥ व्यापारे विविधे भूयः भाग्य
देवागुणैर्भूतेः ॥ संकल्पं वाविकल्पे नतवात्तं प्राप्तितः ॥ देवदर्शनमाप्नोति पविताधिपतेवपुः ॥ भूमिभद्रनवीनापि दिवा धनव्ययः ॥ पुनरसं सर्वपापक- राम
रसभावपूर्वपापजम् ॥ दानमंत्रसुपुण्येण सुतसंबन्धमेदनी ॥ धनवृद्धिनसंदेहो व्यापारेऽभवामलान् ॥ सर्वे शारदा प्रापि प्रतिष्ठामान मुत्तमं ॥ मंत्रेसौ
ख्यविशेषेण नूतनं मोदनित्यशः ॥ विनाशो मंगलकार्यं सुकीर्तिः स्याति भूतले ॥ कृतवाक्मितिवर्षे चत्वारिंशान्वके तथा ॥ दानमंत्र सुपुण्येण स
र्वारिष्टनिवारणम् ॥ धनादरत्नशत्रुणा मित्राणांमोद मानुयात् ॥ कीर्तिश्च निर्मली नूनं धाम्य जन्मित्र सुमोदिता ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

भृ·सं कुं·फ ५८४

पतितं सुवंधेयो निवारणं सुरवसंभवः ॥ प्रसिद्धोमानतोपापि आरामेनीतिवर्द्धनः ॥ इत्यत्राभवि शेषेण व्ययोपिनाहशिमेवेत् ॥ जायते दारलोककष्टं मता
नानेन शांतये ॥ रामनामजपेन्नित्यं देवभक्तिसुतत्परः ॥ चंद्रवेदमितवर्षे वाणचत्वारिमध्यमा ॥ दानमंत्रसुपुण्येन भाग्यपाद्यं धरातले ॥ सर्वत्री-
स्थलसृष्टिश्च सपदासत्यामयान् ॥ विवाहादिमहोत्साहो देवपूर्वोत्सवे व्ययं ॥ भूमिमंत्रसुतास्त्वेवं दासदासश्च वाहनम् ॥ वह चत्वारिवर्षाणि-
न्योमयाणा त्वरीतया ॥ भाग्यवृद्धि विशेषेण साफल्यं सर्ववैभवाः ॥ दिने दिने महत्तेजो राजते पुण्यसंपदा ॥ पुनः परिसुखास्तवाः प्राप्यते च सक्त-
लानि ॥ दानमंत्रमहत्योतो तीर्थयात्रादिरावन्स ॥ सुकीर्तिस्यापिभूमा आनन्दमित्रसुमोदिता ॥ नानाकाम्यमेव धर्मश्चराजते सुखसंपदा ॥ सत्यपुष्टा
र्थचिन्तः मनश्च सर्वपूजिता ॥ जलाश्रये रतिभूपः मरनधामातिमिषः ॥ पुत्रकन्यासुखविशेषा पौत्रजन्म महोत्सवम् ॥ प्रतिष्ठा याहशिलो क
चिंतननाहशिः ॥ इश्वरभक्तिभावेन भजनानंदसर्वदा ॥ इन्दुषष्ठगतवर्षे सन्यस्तभावेनंतरम् ॥ लोके नदापतिः स्यातो दानमंत्रफलप्रदा ॥ यद्रो
॥ यशोगंधासणेवाई सर्वशांतिस्तु यत्ननुः ॥ दानसुपरतादीर्घः प्रभजन्मस्य हेतवे ॥ पुत्रपौत्रमहाभोगी कुलकीर्ति प्रशंसितः ॥ नगमप्रमितिमा
पकि यामाश्रमेवच ॥ भाक्तिनस्यतमोपतो निशायानिधनंभवेत् ॥ पुनः पुण्यापपोभूयः भूमिपाल्ल्योऽतिधार्मिकः ॥ यत्नाद्विविधपुण्ये प्राप्यतेपरमात्-
तिः ॥ भाषा– इस योग में उत्पन्न हुवा जन प्रथम वर्ण सुन्दर केशवाला कभी २ मानहानी का भय पावे अनेक चिंता युक्त रहे पापकर्म में क्लेश पावे दा
श्रनेक चिंता युक्त रहै पाप कर्म में क्लेश पावे दान मंत्र और श्रेष्ठ पुण्य के प्रभाव से सदैव आनन्द होता रहै यह जन अपनी इच्छा से काम करे और पूर्व जन्म
के अभाव से बंधुता का आश्रय पातुर्न्य प्रायश्चित्त करने से पूर्व पाप का नाश होता पश्चात् सर्व सुखों की वृद्धि होती धन आदि का अधिक सुख पावे यश कीर्ति
मय वृद्धि देखी प्रकाश करे तिस कारण उद्धार विधि से पाप शांति का यत्न करे तो सारी अवस्था आनंद में बीते बाल्य समय जन्म से यह विशेष यादान पुण्य इत्यादि
भक्ति में मन लगाता परन्तु कार्मी वाधिक पापक नमय तीर्थगतको स्नान करे निरापातकों पक बात्सला कौमनोहर रहे की दल काम में भाति बढ़ाते पुत्र श्रीकाल रा
धिकता भवे उसमें सब प्रकार यों सावदाय युत अधिकतर शोको बहुत कुबोर्द्धितबन्द महसे पतित हुई तन उसको संग यतिकिसी पति परितुल सेतुसवधर्म नहदा गया चुन्दल
पर उसके निमित्त को धनकर दाक यापारिया दियो सो इसजन्म में क्लेश चिंता और दुःस का भागी बना इसकी शांति को यथा वित्त अन्नदान का यत्न पर सर्वशांति अनुसार समय सिद्धि
का चित्र लिखकर संकल्प आपकी विधि से नित्य वेक कलश में घृत भरकर उसमें यह मूर्ति प्रसत्तकर सब सदा सुवर्ण सत्यायवर्जन यथा वेगे रहु तपापकानाश होमन चितनतु

सप्तमे सवमनोऽपि परो होतायें फिर पुण्यके आश्रय से जन्म में इच्छा धर्मात्मा राजा वने अनेक यज्ञ इत्यादि करि के परमगति पावे ॥ सप्तमेऽष्टमगेनेन मंदभागीभ्व

बालकः ॥ तावमात सुखसर्व स्वकाराक्षीन्वमहत् ॥ नाति रोगेन कष्टवान् पीणा धुना कारन्व मृत्युः ॥ यत्पारेवप्रवर्द्धते धन संपत समृद्धिवान् ॥ पृथावस्था कनदी

विल्पद्रकरणोभयम ॥ पूर्वपापविशेषेण शान्तिर्विनादिने दिने ॥ नाप्तविविधवान्को नानाचिंतापरीयसी ॥ चिंतयद्विविधकार्यं लोके लाभश्च मंदिता ॥ पापयुतं

नकर्तव्या पुण्येलोत्सव विनिर्मुक्तः ॥ नारीपुत्रात्मकाष्टंच भोक्तव्यं चापयूजतः ॥ दानमंत्रपुण्येन श्रेयोमान् सुखागमः ॥ धनश्च सुनारी णां मनच्छा सर्वपूजि

ता ॥ आभूंचविविधाकाव्यः दानमनमहत्फलम ॥ आद्यवर्षसमारभ्य पञ्चवर्षा वमध्यगे ॥ बालवृद्धि नसंदेहो दिवमास सुखसंगतः ॥ शरीरे कष्टसंपत्तो हवने इन्व लो

कः ॥ किंचिद्दानाविमवेण अपामान सुखागमः ॥ बालक्रीडाकृतोऽपि च हस्तिकास्य मनोहरम ॥ नानमातमहो मोद सफल मन्यतीचनेः ॥ वंदवर्षेसमारभ्य न्याय

धानयोगतः ॥ नानाभनमरतो पुनर्विशानु पीड़ित ॥ विचारभक्तोबालः कोडनेमातृतत्परः ॥ चल्पकष्टंभयं घोरं पुण्यकर्मणा मोदिता ॥ मासेवर्षे सुखबोधः सर्वप्रीति

वर्धनः ॥ मिष्टभाषा सुभयंत्र सर्वकल्याणसुंदर ॥ विद्यालीमतिमान्शूरो भूमिवर्णादिवर्द्धनः ॥ स्वदेहे पिमहलानंद उपात्सव सर्वभजेत ॥ [illegible] सुखदायी नृदं

तैर्धनंदव पंनमारभ्य पावकामनिशकारी ॥ नापत्कृत्यो फलगाथा कथयामि समासतः ॥ नचाम्बरभूषणं व प्राप्यते मानुजन्मम ॥ शरीरे कष्ट संपत्तो उपचारेण शांतये ॥ विद्या

ह्रोमगलकार्य लवतेच भवोत्सव ॥ कुलकीर्तिविशेषेण मोदते मानुजतम ॥ पूर्वपापप्रभावेण हानिचिंताकुलान्वितः ॥ पत्नीत्राता सुपुण्येण वाहनादि सुखोद्भवः ॥

लेखनेपठने सत्वः सर्व्वभ्रवोपिमध्यमः ॥ वद्रध्ययी विलासोऽपि च मतिकाम प्रवर्धते ॥ ततः खरगतेवर्षे षष्ठदश मितेतथा ॥ अराति विविधचिंता लाभयोगादि

मंदिता ॥ नारीभागादि संप्राप्य बाल्ये सात्वपणो मति ॥ धनक्षयकरा पापी सम्भवा पूर्वपापतः ॥ नानरोगेण पीड्यते दौर्बल्यगति मंदता ॥ भोगाप्रवेभवो नित्य

श्च देवी भोगीवोजनः ॥ काम पापामनोद्वेगो चिंताचिंतास व्याकुलः ॥ भयशृणुता विधानेन पूर्वपापक्षयंकरः ॥ उपचारात्सुखं सुखमाप्य द्रव्यं संतति मोदिता ॥

नारीपरा सहायं पूजनेदिव्य भक्तिः ॥ दानमंत्रप्रभावेण मनच्छा सर्व पूजिता ॥ यत्र हस्तगते नत्रः चिंतपालाभनित्यशः ॥ दीर्घभागी भवेल्लोके तेजस्वी यम

च मनोहरः ॥ अनुविंशतवादिशी वेदविंश नृवत्सरे ॥ पुत्रात्तत्सुखं लोके पितृकीर्तिप्रकाशकः ॥ लाभंच विविधं वत्स सुसंगात्पुण्य कर्मणा ॥ सुका

र्येच व्ययो दोषः महात्मा दोषि मंगलं ॥ शरीरे कष्टसंपत्तो महादानेन शांतये ॥ सत्कृत्य कृशलोदलः मोदते धर्मतत्परः ॥ चिंतचिंता कदा काले सुभूते

सजनाजनैः ॥ चिंतोत्साहोमनोद्वेगो आशंकाचापि विच्छलः ॥ स्वकार्यनिरतो धीमान् तनोमार्ते याचितः ॥ सर्वदासंचयो वृद्धि नानाकार्य्य प्रबंधकैः ॥

मासेंचयतेवर्षे व्यामराम वमध्यगे ॥ नवाभोगसमृद्धिश्च राज्ये सुरतसंपदा ॥ स्वगृहे भूपगो बालः सत्रहीनो विचिंतनम ॥ किंचित्क्लेशेन

पीड्यते पुनरानंद मंगलम ॥ श्रयनं विविधचिंता पूर्वपापाः तु भीता ॥ नाल्पमृत्युभयं घोरं सुधर्मे मोद वर्द्धनः ॥ शशितिंशति शोऽष्टनग

रामतथान्तर ॥ भाग्यवृद्धिविशेषेण विपाके लाभ वर्द्धनः ॥ शुभकार्य व्ययानित्य कुलकीर्तिकरः पुमान् ॥ देवदर्शन तीर्थेच पावनाक्रियतेवपुः

॥ जनरतो प्रवर्द्धनः स्नुष्यादि विवाहनम ॥ धनरत्नसुतो पूर्व सापान्यं सुखं वेभवाः ॥ पशिद्वा भूमिभागेच मोदते च धर्मपतम ॥ ईश्वराराधनेशांति वर्द्ध

इते सततसंपदा ॥ चत्वारिंशगतेवर्षे शरीरे दारुणाभयम ॥ हेमपूर्ण [illegible] मताभुक्ता नगापुल ॥ भक्ता मृत्युंजयो मंत्र: नारिको वीर्य यत्नितः ॥ सत्वपद्म नारा

धेन रुद्राध्याय विधानतः ॥ तद्दानंतद्विधानेन महेशभक्ति मोक्षतः ॥ [illegible] सदा सौख्यलभेन्नरः ॥ प्रकाशते कुलेतेन विख्याति वैभवा

महान् ॥ [illegible] जन्मद्दात्सवम ॥ दासदाहनन शम्भोः [illegible] संपदा ॥ ब्योमिपद्मान्तराकाव्यः पुनश्चकार दारुणा ॥ पुण्यकर्मप्रभावेण चा

युक्तोलिभूतल ॥ नरश्चान्त मृति मायुः भृमतिएण्ययत्नतः ॥ मन वंश्य कुलोत्पन्नः धनी मानी सुखी भवः ॥ सर्वच्छा पूर्वतिलोके भाग्यतेनदेवनम ॥

॥ भाषा० ॥ सतग्रहोंके इन्हमानसे यह जीव मंदभागी होताहै बिना [illegible] परन्तु स्थिर वरहे गोधुमपूर्वरी वाला चपल श्रेष्ठ और बुद्धिमान हो अनेक काम

सोचे ईश्वरकी भक्तीमें मनलगावे धन पत्नी बालक भूमि इत्यादि सब [illegible] अधिक होय परंतु सर्वपापसे मलिन चित्त हुवा आपनीके वश में होकर अनेक प्रका रके

कष्ट चिन्ता क्लेश आदि अशुभ फल का भागी होता है मृत्यु वत [illegible] पापहै भूतनी बालहे [illegible] पुण्य [illegible]

स्त्री परन्तु पुण्य में भी रुचिचित्त निर्मल एक पर्वके समय तीर्थ [illegible] धन का अनुमान [illegible]

भगवानोंकी कृपावय करने [illegible] साधुसे अति विवाद हुवा उसने [illegible] को शाप दियाति [illegible] अशुभ

फल का भागी बनाते हो इसकी शांति के निमित्त नारायण महादेव की अति भक्ती से पूजन करे यथा [illegible] यम

च वीर्य का [illegible] लिखे पुनः पीताम्बर में लपेट घृत भरने [illegible] पुर स्थापन करे तीसरी अध्यायकी विधानसे [illegible] दान करे और सदा पुरश्च

र्णा को धारण कर सत्मार्ग में रहे सुखमें प्रेम बढावे विश्वास और दृढ़तासे ईश्वर के चरणों में मन लगाये महात्मा साधुजनों की सेवा करता रहे तो पाप से छूट

मनोवांछित फल पावे परम आनन्द बढे फिर आगे को वैश्य कुल में जन्म ले धनी धन वान हो संसार की सब इच्छा पूर्ण कर के स्वर्ग को जाय ॥ ५ ॥ ५ ॥

कु.सं.
टी.का
८७

रुच्चयोगेन संजाता बुद्धिमान् च सगुणी विद्याविनयवान्नरः । तेजस्वी तु प्रतिष्ठितः ॥ सुतः [illegible] नाभिभर्त्ता [illegible] ॥ मित्रमीति [illegible] मान्यं भाग्यं
[illegible] ॥ शुभचिंतामनोहारी साध्यते विविधैरपि ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ मंदस्याभक्ता
[illegible] तंत्रन्तेषां [illegible] ॥ पापशान्तिस्सुदत्तेन धर्मकार्ये [illegible] ॥ [illegible] ॥ श्रद्धाबुद्धिविशेषेण भजन् सुखमप
[illegible] ॥ विवाहमंगलकार्ये नायते च महोत्सवम् ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ दानमंत्रसुपुण्यानि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
मानत्व मोदिता ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ मध्यत्व
भभवेतानांकाले चिंतितं मंगलं ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ कामक्रीडारतिं प्राप्य [illegible] ॥ [illegible] ॥ चिंतयेत् [illegible] मुनिः ।
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] मंगलं पुण्यसं
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] मति मानव श्र
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ इन्दुराम गमने [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ० ॥

कुं.सं.
कुं.फ
५८८

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] मति मान्य
॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ दासवाहनसंसौख्यं [illegible] भवेत् ॥ इन्दुश्चत्वारि
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ बहुकारा [illegible] मंत्रसुर-
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ भूमियाता विशेषेण [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] प्राप्यते परमं सुखम् ॥ [illegible] पीडितः ॥ [illegible]
[illegible] ॥ दानमंत्रसुपुण्येषु [illegible] सर्वदा ॥ [illegible] ॥ [illegible] निष्फलं जन्म पत्रिका ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ इत्य
॥ भाषा ॥ इसयोगमें उत्पन्न होने वाला जन चतुर गुणी विद्यावान् विनयी तेजस्वी और प्रतिष्ठित हो मित्रजनों में प्रीति करे पूर्व पाप की शांति का यत्न कर
[illegible]
[illegible] श्र
[illegible]
[illegible]

[illegible] धनधान्याभिवृद्धिः [illegible] ॥ भूमौ [illegible] विशेषेण गृहे [illegible] ॥ [illegible] शुभाख्यं [illegible] ॥ दिव्यमूर्तिर्नृभिश्चैव [illegible]
[illegible] राजद्वारे धनं [illegible] ॥ [illegible] विविधाः कार्यसाधकाः [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] विविधकार्यसम्भवाः ॥ [illegible] धनी [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] विचिंतनम् ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ कार्यमात्र धनप्राप्त्य [illegible] सुस्थिरः ॥ [illegible] मानकीर्ति [illegible]
[illegible] दिने दिने [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] भूमिभागे च [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] शान्तये ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] धनदारागम [illegible]
[illegible] ॥ राजद्वारे [illegible] ॥ [illegible] ॥ ईश्वर [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] मंगल [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ शरीर [illegible] महादान [illegible] शान्तये ॥ [illegible] ॥ मानकीर्ति [illegible]
[illegible] ॥ राजद्वारे [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] सर्वदा [illegible] ॥ ० ॥ ० ॥
[illegible] ॥ ईश्वर [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] वर्द्धनः ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] विधिः ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] दानादि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ दानमंत्र [illegible] ईश्वर भक्ति [illegible] ॥ [illegible] नित्यं [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ इति [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

इतिश्री कुंडली फले समाप्तम्